पशु-रोग और उपचार

(गाय-भैंस तथा घोडे आदि अनेक पशुओ के रोग,
लक्षण तथा उपचार आदि तथा औषधिया दी गई हैं)

लेखक—सकलनकर्ता

चौ० लोटनसिंह

तथा

मा श्री वीर सिह, प्रसो



प्रकाशक

मधुर-प्रकाशन

२८०४, गली आयसमाज, बाजार सीताराम,
दिल्ली-११०००६

प्रथम सस्करण   जनवरी १९९०

प्रकाशक—
राजपाल सिंह शास्त्री
अध्यक्ष, मधुर प्रकाशन
आर्यसमाज मन्दिर, बाजार सीताराम,
दिल्ली ११०००६
फोन २६८२३१ ५१३२०६

प्रथम संस्करण जनवरी-१९९०
मूल्य २० रुपये

मुद्रक वशिष्ठ कम्पोजिंग एजेंसी द्वारा तिलक प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-६

पशु-रोग और उपचार

प्रस्तावना–

भारतवर्ष पशु-धन मे ससार मे अग्रगण्य रहा है। यहां पशुओ का पालन तथा चिकित्सा पहले से ही चली आ रही है परन्तु बडे दुख की बात है कि आधुनिक काल मे देहातो मे पशु रोगो को दूर करने के उपचार के साधन उपलब्ध नही हो सकते। मैंने इस कठिनाई को, अपने किसान भाइयो की एक बडी समस्या समझकर इस पुस्तक को लिखने का प्रयास किया है। इसमे सभी नुस्खे, औषधी आदि ऐसे दिये हैं, जो गाव मे सुलभ हैं, भाषा भी सीदी-सादी देहातियो वाली है।

इस छोटी सी पुस्तक मे लगभग सभी ऐसे पशु रोगो की चिकित्सा है, जो साधारणत ग्रामो के पशुओ के होते रहते हैं। मेरा २० वर्ष का पशु चिकित्सा का अनुभव तभी सफल होगा जब मेरे किसान भाई इस पुस्तक पढें और लाभ उठा सकेंगे।

भूमिका

इस छोटी-सी पुस्तक मे लगभग उन सभी रोगों का इलाज है जो विशेषकर देहातो मे पशु-धन को नष्ट करते रहते हैं। लेखक ने पुस्तक लिखने मे साफ और सादी देहाती भाषा अपनाई है जो मेरे विचार मे देहातियो के लिए सुविधाजनक होगी। यदि किसान इस छोटी-सी पुस्तक का अध्ययन करें तो लगभग वह अपने पशु-धन को छोटे मोटे रोगो के निवारण करने मे पूर्णत सफल हो सकेगा। मैंने इस पुस्तक मे अन्य अनेक पुस्तको मे से उपयोगी नुस्खे लेकर चौधरी लोटन सिंह को बताये, ताकि पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सके। वैसे चौधरी लोटन सिंह के अनुभव चिरकाल से प्रसिद्ध हैं। गाव मे या आस पास जहा कहीं पशु रोग से पीडित हो, सभी आपसे परामर्श लिया करते हैं और लाभ उठाते हैं।

हर गाव सभा के प्रधान से निवेदन है कि वह इस पुस्तक का प्रचार कराकर किसान भाइयो तथा पशु पालको को लाभ पहुचाने की कृपा करें।

विशेष—इतना होने पर भी अपने निकटवर्ती वैद्य अथवा पशु चिकित्सक से परामर्श लेवें।

प्रसाराध्यापक

पशु-रोग और उपचार

१—बन्द लगना

लक्षण —पशु गोबर करना बन्द कर देता है और जुगाली बन्द कर देता है, पशु की कोखें ऊपर उभर जाती हैं।

उपचार —पशु को बन्द लगने की दशा मे पहले यह दवा दी जाय।

नौसादर २ तोले, कलमी सोरा १ तोला।

इन दोनों चीजों को आधा किला ताजे पानी मे घोल कर पशु को नलकी के द्वारा दे दिया जावे। यदि इस दवा से २ घण्टे तक पशु को फायदा न हो तो नीचे लिखी दवा दी जावे।

नमक खाने का १ छटाक, गन्धक आँवलासार १ छटाक, सूठ ढाई तोले, एलवा ढाई तोले पुराना गुड या राब ४ छटाक।

इन सारी चीजों को पत्थर पर पीस कर १ सेर पानी मे खूब गरम किया जाये और इस गरम की हुई दवा को कुछ गरम सा रहने पर पशु को दो बार दी जावे। पहली दवा देने के बाद दूसरी दवा १ घण्टा बाद दी जावे।

अगर ऊपर की दवा से बन्द न टूटे तो ये दवा दें।

नमक १ छटाक, एलवा १ छटाक, सूठ १॥ छटाक, राब या गुड ४ छटाक गम सेर भर पानी म पशु को देने से बन्द टूट जाता है।

२—चेचक (सिरडवा)

लक्षण —पशु कानों को नीचे को ढलका लेता है आंखो मे ढीठ आ जाती है और शरीर की रूम फाड लेता है, मुह मे छाले पड जाते हैं कभी-कभी पैरो मे छाले पड जाते हैं जिससे पशु चल-फिर नही सकता।

इलाज —(१) इस रोग मे पहले यदि पैर या मुह मे छाले हों तो पहले उसके मुह तथा पैरो को दो तोल फिटकरी १ सेर पानी गम करके पानी से कई बार धोयें। जानवर को फिर ३ दिन तक, दिन मे कई बार एक-एक सेर चावलो का मांड पिलावें।

इलाज —(२) यदि चावलो के माड से फायदा न हो तो जानवर को पीली सरसो की खल दिन मे दो बार पानी मे खूब गरम करके तीन दिन तक दें, सरसो की खल की एक खुराक म आधा सेर खल तथा १ सेर पानी होना चाहिए।

इलाज —(३) यदि सरसो की खल से भी फायदा न हो तो नीचे लिखी दवा कूट कर १ सेर चावल के माड मे मिला कर दो दिन तक दें। दवा दिन मे केवल एक बार ही दें।

धतूरा ६ माशे, शराब ६ छटाक,।

नोट —१ खुराक म १ सेर माड और ऊपर लिखित दोनो चीजें शामिल हैं।

जब जानवर इसी बीमारी मे बार बार पतला गोबर करने लगता है और गोबर मे कुछ आव भी आ जाती है या कभी-कभी गोबर में खून भी आने लगे तो पशु को पूरा खतरा हो जाता है, ऐसी हालत म रोजाना नीचे लिखी १ खुराक—१ सेर चावल के माड मे मिला कर तीन दिन तक देना चाहिए।

ढाक का गोद ६ माशे, खडिया मिट्टी ४ तोले अफीम ४ माशे, शराब १ छटाक।

नोट —ढाक के गोद को पहले पीस लिया जावे तब बाकी ३ चीजों के साथ मांड मे पिलाया जावे।

३—कटरा या बछडा यदि पैदा होते ही बीमार हो

लक्षण —या तो थन को न पकडे या अधिक दूध पी जावे ऐसी स्थिति म दवा—

सुखम बालगु ३ माशे, घी १ तोला।

इनको मिला कर गम करके नली द्वारा देवें, दवा ३ दिन तक दें।

४—जरब आना ।

लक्षण —(१) जब पशु जोर पर आ जाता है तो उसके पैर सीधे नहीं पडते ।

(२) यदि बैल की छाती पर हाथ लगा कर दबा दिया जावे तो बैल पीछे या बराबर मे हट जाता है ।

(३) मवेशी का सास ठण्डा लगने लगता है ।

(४) बैल घसकने लगता है और दुम फाडने लगता है ।

उपचार —(१) तुख्म गाजर २ तोले, मज्जी २ तोले, सू ठ २ तोले, राई २ तोले, तुख्म सोआ २ तोला, तुख्म कामनी २ तोले ।

इन ६ चीजो को पाव भर पुराने गुड म मिला कर ६ गोलिया बना ली जावें और इन गोलियो को ३ दिन तक दें ।

(२) बैल की छाती पर बाधने के लिए १ किलो दूध गाय का उसम नमक डाल कर फाड लिया जावे और ३ दिन तक बदल कर बाधते रहना चाहिए और लेप की हुई छाती को कडे की आच से सेक देना चाहिए ।

नमक ४ छटाक, अफीम १ तोला, एलवा १ तोला, अमलतास की फली का गू द ६ छटाक, जमीन मे फैली कटहुली के बेर ४ छटाक ।

(३) इन सब चीजों को अलग-अलग पीस कर ३ तोले दही में मिला दिया जाय और लेप कर दिया जावे । बैल को लेप हो जाने के बाद ३ दिन तक यह चीज पिलायें ।

हलदी १॥ छटाक, गुड ४ छटाक, दूध २ सेर ।

यह खुराक रोजाना सुबह को दी जावे ।

नोट —दूध को पहले खूब गरम कर देना चाहिए और फिर उतार कर हलदी गुड डाले जायें और जब कुछ गरम रहे तब बैल को नलकी से दिया जावे ।

उपचार —(४) बैल को पेट भर घास खिलाने के लिए नीचे लिखी चीजें १५ सेर पानी में खूब गरम करके, उसमे ८ छटाक मेथी का आटा मिला देना चाहिए ।

आक्खे के पत्ते १ छटाक, रूसे के पत्ते १ छटाक, धतूरे के पत्ते १ छटाक, नमक १ छटाक, अजवायन १ छटाक, हल्दी १ छटाक।

इनको १५ सेर पानी मे खूब गरम किया जावे और फिर रोजाना दो नलकी सुबह दी जावे। यह दवा बैल के जरब के अलावा उन सभी जानवरो को को भी दी जा सकती है, जो घास कम खाते तथा हाजमा ठीक न हो।

नोट —दवा का इलाज चलते समय पशु से काम न लें।

५—जहर दिये पशु का इलाज

लक्षण —मवेशी उलटा देखने लगता है और खडे-खडे पैरो को पीटने लगता है, मुह मे झाग आने लगते हैं, जानवरो की आखो का रग हरे पन पर हो जाता है और आखों से पानी पडने लगता है।

उपचार —जब पशु की यह दशा हो जावे तो फौरन यह दवा दें—

नमक ४ छटाक, गधक १ छटाक, सोडा बारीक २ छटाक, सूठ २॥ छटांक, अलसी का तेल ४ छटाक।

इन दवाइयों को १ सेर चावलो का माड मे मिला कर नलकी से दिया जावे।

६—वाय

लक्षण —हाथ परो पर सूजन आ जाती है, पशु का उठना-बैठना मुश्किल हो जाता है।

उपचार —(१) राई २ तोले, कुटकी २ तोले, बच्छ २ तोले, सूठ २ तोले, अजवायन २ तोले, हल्दी २ तोले।

इन दवाइयों को पहले अलग-अलग खूब कूट लिया जावे और ४ छटाक गुड मे मिला कर १२ गोलियां बना ली जायें। रोजाना ३ गोली पशु को दी जायें।

उपचार—(२) पीपल बटा २ तोले, सूठ २ तोले, काली मिर्च १ तोले, काला नमक १ छटांक, हींग भुना हुआ ६ माशे, लहसुन २ तोले।

इन चीजों को अलग-अलग कूट कर पाव सेर गुड में मिला कर १२

गोलिया बना ली जावें और रोजाना ४ गोलिया तीन-तीन घण्टे के बाद दी जावें।

७—धसका

लक्षण —इस रोग मे पशु जोर से धसक्ने लगता है, इस रोग की दवाई इस प्रकार है —

उपचार —(१) गन्धक आग पर डाल कर दिन मे कई बार पशु को सुघावें।

यदि गन्घक की धूनी से फायदा न हो तो चावलो का माड सेर भर दो दिन पिलाया जावे।

उपचार —(२) १ सेर दूध मे २ छटाक प्याज पीस कर खूब गम किया जावे और पशु को दे दिया जावे।

उपचार —(३) अगर ऊपर की दवाइयो से आराम न हो तो पशु को दिन म एक बार यह दवा दें।

मलाई ४ छटाक, मिसरी ४ छटाक,।

इनको मिला कर दे दिया जावे।

उपचार —(४) शराब देशी ४ छटाक रोजाना देनी चाहिए। इस प्रकार की दवाई देने से पशु को धसके का रोग नही रहता।

उपचार —(५) नमक १ तोला, मुलहटी १ तोला।

इनको कूट कर तीन तोने घी मे मिला लें। धसके वाले पशु को तीन दिन तक चटावें।

८—कब्ज

लक्षण —पशु को इस रोग मे घास के टुकडे आन लगते हैं और घास बहुत कम खाने लगता है।

उपचार —(१) पीली सरसों की खल ४ छटांक, नमक १ छटाक, गुड ४ छटांक।

इन चीजो को शाम को डेढ़ सेर पानी मे भिगो दिया जाये और सुबह को खूब पतला करके नलकी द्वारा दी जावे।

उपचार —(२) कब्ज के बीमार बैल को मस का और भैंस को बैल का पेशाब ३ दिन तक नलकी द्वारा देना चाहिए कब्ज बिल्कुल साफ हो जावेगा।

उपचार —(३) सिन्धा नमक ५ तोले, गन्धक २ तोले, सौंफ १ तोले, राब २ तोले।

इन ऊपर लिखित को ८ छटाक पानी को मिलाया करके पशु को दे दें।

उपचार —(४) त्रिकुटा १ छटाक, काला जीरा २ तोले, सफेद जीरा २ तोले, वच्छ २ तोले, हींग भून कर २ तोले, सौंफ २ तोले, राई १ छटांक, कचरी ३ तोले, अजवायन १ छटाक, सुहागा १ छटाक, फिटकरी १ छटांक, सधा नमक ३ तोले, समुद्री नमक २ तोले, त्रिफला १ छटाक, कुटकी ३ तोले, वाय विडग १ छटाक, सज्जी खार २ तोले।

उपरोक्त सभी वस्तुओ को कूट कर एक वर्तन म रख लें, एक छटाक मिश्रण को ४ छटाक ताजे पानी मे ८ दिन तक सुबह के टाइम पशु को दें।

९—जकडा

लक्षण —इस रोग मे पशु सर्दी क कारण कापने लगता है, आँखें लाल हो जाती हैं और उनसे पानी बहने लगता है और शरीर ठण्डा हो जाता है।

उपचार —(१) १ सेर मठठा (छाछ) और २ छटाक मिर्च लाल पीस कर दोनो को मिला कर पिलावें तो पहला जकडा बन्द हो जाता है।

(२) राई २॥ तोले, कुटकी २॥ तोले, मैंथी का आटा १ छटाक, बच्छ २॥ तोले, सूठ २॥ तोले हल्दी २॥ तोले अजवायन २॥ तोले।

इन चीजो को कूट कर पाव सेर पुरान गुड मे मिला लिया जाव और १२ गोलियां बना ली जायें। पशु का ४ गोली दिन मे और ३ गोली रात मे दो दिन तक दें।

नोट —जकडे वाले पशु को उबला हुआ ठण्डा पानी होने पर पिलायें, पशु को मैंथी या मोठ के आटे को खिलावें।

१०—घरडवा (गिल्टी)

लक्षण—इस रोग मे पशु के कान और मुह के बीच मे सूजन आ जाती

है और पशु घुरड घुरड की आवाज करने लगता है। इस रोग को गिल्टी भी कहते हैं।

उपचार—(१) अलसी ८ छटांक, नमक २॥ तोले।

अलसी के दलिये मे नमक डाल कर पका कर मवेशी को दे दें

(२) कुम्हार के बांसे के पत्ते पशु को खिलावें यदि पत्ते न खा को उबाल कर उनका पानी मवेशी को दें।

पानी १ सेर, कुम्हार के पत्ते ४ छटांक।

(३) जहा सूजन हो, उसकी मालिश की जावे।

जमाल घोटे का तेल १ तोला, कडुवा तेल २ छटांक।

उपचार—(४) निम्न को सूजन पर लेप करना चाहिए।

छपकली १ नग, लहसुन छिला हुआ २ तोले, पुराना गुड ८ तोले।

इनको मिला कर लेप करना चाहिए।

११—बर्र खाये का इलाज

लक्षण — जब जगल में चरते-चरते पशु बर खा लेता है तो मुह से झाग आ जाते हैं, पेट पर अफारा आ जाता है, कुरकरी सी मारने लगता है।

उपचार—(१) घी चार छटाक फौरन मवेशी को दें।

(२) पशु की कमर पर दही डालनी चाहिए तो दही की वजह से कौआ बैठेगा तब पशु बिल्कुल ठीक हो जावेगा।

(३) पशु को गोबर के कण्डे की राख २ छटाक का ८ छटाक ठण्डे पानी मे घोल कर पशु को दी जावे।

१२—जुए

लक्षण—इसमे पशु के शरीर से बाल उडने लगते हैं, वह बार-बार शरीर को दीवार से रगडने लगता है। शरीर मे कमजोरी आ जाती है।

उपचार—(१) सरसो के तेल मे टिकिया का कपूर मिला कर पशु के शरीर पर मालिश करनी चाहिए।

तेल सरसो का ४ छटाक, कपूर १ तोला।

(२) पशु को तरा (तारापीन) का तेल देना चाहिए।

(३) कुम्हार के आवे की राख को पानी मे घोल कर जुआ वाले भाग पर ३ घण्टे तक मालिश करें।

(४) चा की रोटी म अजवायन नमक मिला कर रोटी को सरसों के तेल मे चुपड दें।

१३—गर्मी की दवा (हाफना)

लक्षण —पशु हाफने लगता है और बार-बार पानी पीने लगता है। पेशाब कम करने लगता है और कभी कभी अफारा आ जाता है।

उपचार—(१) मेहदी ४ छटाक, खांड, ४ छटाक, शोरा १ तोला।

इन तीनो को एक जगह मिलाकर १ सेर चावलो के माड को नलकी द्वारा दें।

(२) यदि पशु जाडो के दिनो मे गर्मी मानता है तो उस पशु को सुबह ही १ सेर ताजे गन्ने के रस मे १ तोला शोरा मिला कर पिलायें।

(३) जीरा सफेद २ तोले, सफेद मिच २ तोल हींग भुना हुआ ६ माशे, धनिया २ तोले।

इन सब को कूटकर १ सेर चावलो के माड मे मिलाकर रोजाना एक बार तीन दिन तक दे।

१४—दतना

लक्षण—भैस या गाय की योनि म लाल पिंडी आ जाती है और जानवर घुकडने लगता है।

उपचार—(१) शराब मे कपडा भिगो कर पिंडी पर हाथ से लगा कर अन्दर योनि म कर दें फिर पशु के पिछले भाग पर छोटी-सी टोकरी बाध दें, पशु को आठ दिन तक बैठने न दिया जावे।

(२) यदि पशु ग्याभन होने के बाद टुसराने लगे तो उस पशु को ५ छटाक उडद की दाल को १० छटाक पानी मे भिगो दें और आठ घटे मे उसको ...। पीस लें और १२ गोली बना कर रोजाना एक गोली दें।

(३) जो मवेशी दनने लगे तो भुने हुए चने की दाल निकाल कर असली शराब मे तीन चार दिन तक भिगा लें और उसके बाद उसको पीस कर झडबेरी के बराबर गोली बना लें और सुबह-शाम एक-एक गोली कम से कम १५ दिन तक खिलानी चाहिए। वजन दाल आध सेर, शराब ३ पाव।

(४) आध सेर बिनौले पानी मे उबाल कर आध पाव तेल सरसो का मिला कर पशु को पिला देना चाहिए। यह इलाज ७ दिन तक लगातार करना चाहिए।

१४—चक्कर आना

लक्षण—जानवर को कम दिखने लगता है और पागल-सा हो जाता है। कभी कभी चक्कर काट कर जमीन पर गिर जाता है।

उपचार—(१) चने की पत्ती जिसका साग भी बनता है छटांक १, छटांक ४ पानी ताजे मे भिगो लें। एक घण्टे तक फिर पानी मे पत्ती मसलें फिर खद्दर का एक गज कपडा उसमे भिगो लें। थोडा सा निचोड कर मवेशी के सिर पर बाघ दें। ६ घण्टे के बाद खोल दें। ऐसे तीन दिन बांधें।

जीरा सफेद १ तोला, धनिया १ तोला, हीग ६ माशे, नौसादर १ तोला, मेहदी १ छटांक, खांड ४ छटाक।

इन दवाओ को २ सेर मांड मे आधी दवा मिला लें, दिन मे दो बार दें, तीन दिन तक लगातार दें।

(२) तारपीन का तेल तीन तोले आध सेर पानी मे मिला कर दें। मवेशी की आख बाध कर टटरे पर पानी डालें।

१५—बैल की सुतार

लक्षण—बैल की नाड सूज जाती है और झाटे की भी सूज जाती है जहां जुआं धरा जाता है ऐसी शक्ल मे—

उपचार—(१) चने की कढ़ी बना कर नाड पर लेप कर दें। कढी मे मिर्च न हो।

(२) हल्दी का ६ गाठ मिट्टी के बरतन मे भून लें। भुनी हुई हल्दी को पीस

कर छटाक १ अलसी तेल मे मिला लें, कधे पर मालिश करें।

(३) आखे के पत्ते छटांक ४, दो सेर पानी मे पका कर नाड झारें। एक सप्ताह तक नाड ठीक होगी।

(४) मोम १ तोला, साबुन १ तोला।

२ छटाक सरसा के तेल मे पका कर कई दिन तक नाड पर लगावें, ठीक हो जाएगी।

१६—चन्देल

लक्षण —नाड पर ज॰ा जुआ धरा जाता है, नाड से खून जाने लगता है, जब भी बैल को हल या गाडी मे जोतते हैं तब खून जारी हो जाता है। ऐसी शकल म—

उपचार —(१) मुर्दे की हड्डी २ तोले, नोनी घी १ छटाक मे मिला कर नाड पर लगा दें। हड्डी पीस ली जावे १५ दिन लगावें, हल मे जोडे नही।

(२) गेहू का आटा पानी मे गूथ लें। आटा ४ छटांक अगारो पर जला लें फर बारीक पाम कर नोनी घी मे मिला कर नाड पर लगावें।

१७—बैल या भैंस की आख मे नखूना

(१) चीनी क वतन का टुकडा २ तोले, शहद म मिला कर आख धोकर आख मे लगावें फोला नही रहेगा।

(२) माले के पत्ता का अक निकाल कर तोले १, शहद तोला २ म मिला लें। आख म चार दिन तक लगावें फोला कटेगा।

१८—बैल के सींग मे सलाई

लक्षण —जिम सीग मे यह रोग होता है वह सीग नीचे का झुक जाता जाता है सीग की जड मे कीडे पड जाते हैं और पशु अपने सिर को बार बार दीवार या पेड पर मारता है।

उपचार —कलकत्ती तम्बाकू २॥ तोले, कपूर ६ माशे, आग म फूंकी साप की केंचुली २ तले।

इन तीनों को एक जगह मिलाकर फिर किसी कांच या बांस की नली को

लेकर इस दवा को उसके नाक पर रख लिया जाए। पशु की नाक मे नली को लगाकर फूक मारने से दवा सास द्वारा जाकर कीड़ों को मार देगी। एक बार नली पर ६ माशे दवा रखी जाए।

१९—जेर का रुकना

लक्षण —जब पशु बच्चा दे देता है तो कभी कभी ठण्डक आ जाय कारण जेर नही डालता और वह पशु घास खाना छोड देता है, दूध भी नही देता।

उपचार —(१) राई २ तोले, अजवायन २ तोले, कुटकी २ तोले, १ २ तोले, वच्छ २ तोले।

इनको एक जगह बारीक कूट लिया और ४ छटाक गुड म मिला कर १२ गालिया बना ली जावें और रोजाना ६ गालियाँ दी जावें। पशु को घास या ईख की पत्ती खिलायी जावें, यदि पत्ते न मिलें तो सूखे बिनौले खिलाये जावें।

(२) यदि पशु पहली दवा देने पर भी जेर न डाले तो उसे २ दिन तक ४ छटाक रोजाना घी दिया जावें और भैस को गाय का दूध और गाय को भैस का दूध देना चाहिए। दूध को पका कर मीठा करके देना चाहिए।

२०—जेर खाना

लक्षण —कुछ पशु अपनी जेर स्वयं खा जाते हैं। जिससे उस पशु को गर्मी हो जाती है और वह सूख-सूख कर मर जाता है।

उपचार —(१) गुड पुराना ८ छटाक, नमक २ छटाक, तेल सरसो ४ छटाक।

इन सब चीजो को मिला कर गर्म किया जावे और ठण्डा होने पर नलकी द्वारा पशु को देना चाहिए।

(२) ८ छटाक कपराड (झाड़ों मे शकरकन्द की तरह) को मिला कर ४ छटाक गुड म मिला कर औटी बनाई जावे और पशु को दे देनी चाहिए।

२१—कद्दा

लक्षण —पशु जुगाली करना छोड देता है और घास पेट म फूल जाता

है और मुंह से खाया घास मुह से निकल कर जुगालते समय जमीन पर गिरता रहता है।

उपचार —(१) निम्नलिखित दवाई २ तोले, नौसादर को आध सेर पानी मे मिला कर पशु को दे दें।

(२) अफारा आने पर—

अजीर ४ तोले, हरी मेहदी के पत्ते ४ तोले, काली मिच २ तोले, अमरूद की जड की बक्ली २ तोले।

इनको बारीक पीस कर ४ छटाक सिरका मे दोनो कोख पर लेप कर दें।

विशेष बीमारियाँ

२२—जो पशु अनाज अधिक खा जावे

सरसो का तेल ४ छटाक, खारी नमक एक छटाक इनको एक जगह मिला कर नली द्वारा द दिया जावे।

२३—जो पशु अचानक अफर जावे

नमक २ ताले, कचरी एक छटाक इन दोनो को पीस कर १ सेर छाछ (मठा) मे मिला कर पशु को दिया जावे।

२४—जो पशु सुई या कील खा लेते हैं

घास खाना छोडते हैं, रूम फाड जाते हैं, पशु सूख जाते हैं, दात किड किडाने लगता है। ऐसी दशा मे—चुम्बक पत्थर पीसकर १ छटाक मवेशी को खिला दें। ३ ४ घण्टे बाद अरण्डी का तेल ८ छटाक, दूध १ सेर दाना को मिला कर पशु को दे दें। जब तक सुई या कील गोबर मे न आवे १ सप्ताह तक देत रहना चाहिए, निकलने पर बन्द कर दें।

२५—जिस पशु का कान बहने लगे, पानी सा जाने लगे

खडी कटहनी के फूल ४ तोले तोड कर कान मे निचोड दें, कान बहना बन्द हो जाता है।

२६—जिस पशु के पागल कुत्ते ने काट लिया हो

उस जगह गर्म करके उसके दाग दें और कुचला पीस कर उस जगह लगावें।

उपचार २ —आखे की जड की बकली २ तोले, धतूरे के पत्ते १ तोला। इन दोनो को कूट कर आखे का दूध १ छ० मिला कर कटी हुई जगह पर लगा दें।

२७—पशु को बिच्छू इत्यादि काटने पर

जमाल घोटा दो तोले, नीबू का अर्क ३ ताले, जहा पर काटा हो, मिला कर लगा देने से आराम हो जाता है।

२८—साप के काटने पर

नौसादर ६ माशे, आखे का दूध १ तोला जहा साप काटे उसी जगह लगा दें।

२९—जिस पशु की जीभ पर काटे से जम जाते हैं

उसकी दवा —

हल्दी	१ छटांक
नमक	"
काली जीरी	"

जीभ पर लगा देने से काटे समाप्त हो जाते हैं।

३०—मवेशी के घाव होने पर खून बन्द न हो

पुराने कम्बल का टुकडा फूक कर उसकी राख को घाव मे भर कर बांध देना चाहिए या मकडी का जाला घाव मे भर देने से खुन बन्द हो जायेगा।

३१—मवेशी के थन सूज जाते हैं

दो सेर पानी मे मवोय १ छटांक को पका कर थन धो देने चाहियें, पाच दिन तक दिन मे दो बार धोयें।

उपचार—कपूर १ माशा, सुहागा भून कर २ माशा, नौनी घी २ तोला।

इन तीनों को मिलाकर ३ दिन तक लेप करें।

३२—पशु के थन को यदि बछडा काट दे

एक कसोरा आग मे लाल करके थनो के नीचे रख दे उसमें धार मारने से थन ठीक हो जाता है, ३ दिन तक करें।

३३—पशु के छेरा लग जाए

दूध निकालते ही १ सेर कच्चा दूध फीका फौरन दे देना चाहिए, यदि इस से भी बद न हो तो—

उपचार —(२)	सभर नमक	१ तोला
	सीधा नमक	"
	सामभल नमक	"
	जवाखार	"
	सज्जी	'
	हरड वेहडा	'
	छोटी हरड	"
	आवला हल्दी	"
	सफेद जीरा	"
	काला जीरा	'
	भाग	'
	देवदारू	"
	काली मीच	६ माशे
	पीपल	"
	मूली के बीज	'
	सोआ के बीज	१ ताला
	बाय बिडङ्ग	'
	सतावर	"
	नागोडी	"
	असगन्ध	"

सू
अजवायन
अजमोद
सोहजने की छाल

इन को कूट कर नमक की तरह १२ दिन तक

मवेशी का गला पक जाने से घास न...

ऐसी दशा मे—अलसी दो छटाक पका कर शराब देशी ४ छटाक मे मिला कर दें।

३४—जो मवेशी ग्याभन न रहे, बार-बार फिर जावे

सेर भर बिनौले पका कर उसमे आध पाव तेल डाल कर ३ दिन तक खिलाने से पशु ग्याभन रह जावेगा।

३५—जिस पशु को कीडे पड जावें

बच्छ तीन तोले पानी मे साफ करके घाव मे भर दें, यदि इससे भी आराम न हो —

उपचार २—तारपीन का तेल एक छटाक, कपूर तीन माशे मिला कर घाव पर रखने से कीडे मर जाते हैं।

३६—जिस पशु के पेट मे कीडे पड जाते हैं

मवेशी का मुह फाड कर ऊपर के हिस्से मे उगली लगा कर हटाने से बदबु आने पर पेट मे कीडे होते हैं—

उपचार १—खिसारी की दाल ८ छटाक को पानी मे शाम को भिगो दें सुबह उस दाल का पानी पशु को दें, १ घण्टे बाद दाल को भी खिला दें।

२—एक पेड तम्बाकू जैसा, जो जगल मे रहता है उसका अक चार छटाक मवेशी को दें।

३७—जिस पशु के गोबर मे खून आवे

धनिया	१ छटाक
सिघा नमक	२ "

इनको १ जगह पीस कर जौं का आटा तीन छटांक इन तीनो को मिला कर ३ दिन तक दें, यदि इस से भी फायदा न हो —

उपचार २ —माजू फल का चूर्ण	१ छटाक
कत्था	१ तोला
खड़िया मिट्टी	१ छटाक

इन तीनो को १ सेर मॉड मे मिला कर दें दिन मे २ बार तीन दिन तक दें खून बन्द हो जावेगा।

३८—पशुओं का मसाला

यह मसाला प्रत्येक रोगी पशु को दिया जा सकता है, पशु निरोग हो जाता है यह सब बीमारियों म फायदेमन्द है —

नसादर १ छटाक, पाँचो नमक २ छटाक

कलमी शोरा १ छ०, हीग लाहौरी १ छ०, काली मिच १ छ०, बाय बडङ्ग २ छ०, बिडाल डोडे २ छ०, राई दो तोले, कुरकी दो तोले, बच्छ दो तोले, सूठ दो छ०, अजवायन देशी दो छ० अमलताश फली २ छ०, जीरा सफेद २ छ०, स्याह जीरा २ छ०, धनिया दो छ०, गन्धक दो छ० सोडा सफेद ४ छ०, कडू ४ छ० छोटी हरड दो छ०, बडी हरड दो छ०, सुहागा १ छ०, कपूर २॥ तोला, गिलोय छ०, पीपलमेंट १ तोला, सनाय दो छ०

कुचला दो तोले को ४ छटांक घी मे अलग भून लिया जाय। बचे घी को जमीन म दाब दिया जाय। तीनो हल्दी दो छ० प्रत्येक, मेथी एक सेर, अडब अजवायन दो छ०, तुखम सौआ १ छ०, तुखम गाजर १ छ० फिटकरी दो छ०, को भून लिया जाय गुम्मा ४ छटांक, एलवा १ छटाक लौंग ४ छटाक, अफीम २॥ तोले कायफल १ छ० इन सब चीजो को कूट कर कोरे बतन मे रख लिया जावें और पशु को नमक देने की तरह दें।

३९—डोरिया डिगाना

लक्षण —इस रोग म पशु का अगला पैर बड़ सा जाता है तथा लगड़ाना शुरू कर देता है।

—१ बन्दूरी के हरे पत्तों को कूट कर अर्क निकाल लिया जाय

डोरिया उतरे पैर पर इस अर्क की मालिश बड़े हाथ से करें, बाद में हल्के हाथ से ...
मालिश बड़े हाथ स करें, बाद मे हल्के हाथ से की जाय।

२—जिस पैर का डोरिया उतरा हो, उसके ... को लाल की हुई लोहे की पत्ती से जला दिया जाय। ... दूध मे भीगा फोआ रख देने से डोरिया ठीक हो जाता है।

४०—बैल जो मुतार हो जावे

दवा —थार कांटा वाली छ अगुल डाडी काट कर तीन अगुल खाली कर लें। खाली म हल्दी भर कर, कपडे म लपेट कर और गारा लगा कर अगारो मे दबा दें, फिर निकाल लें गरम पानी मे नाड झारे जूते से नाड मलता रहे। इसके बाद नाड पर लेप कर दें और धूप म बाध दें।

४१—जिस भैंस या बैल के सरण हो जाय

दवा —असलुम्बा	८ छटाक	कद्दू	४ छटाक
	कालीजीरी	४ "	कलौंजी	४ "
	कवार पटठा	२ सेर	नमक	आध सेर

इन सब चीजो का एक जगह मिला कर कूट ले फिर ५ सेर मटठा यानी छाछ म मिला लें, आध सेर रोजाना दें, १७ दिन तक दी जाएगी।

मवेशियो के विषय में

सब सज्जनों से निवेदन है कि मवेशियो को साफ जगह रखें। पानी साफ पिलावें, मकान म जाले न पडने पावें और आठ दिन मे चारा बदल दें, चाहे एक दिन के लिए बदल दे ऐसा करने म मवेशी बीमार नही होगा, आशा है कि इस मेरी प्राथना पर ध्यान देंगे।

४२—बन्द

जब पशु का गोबर व पेशाब करना बन्द हो जाता है, यह बन्द कहलाता है। बन्द भी अनेक प्रकार के हैं—

(१) गोबर न करना। (२) पेशाब न करना। (३) गोबर व पेशाब साथ-साथ बन्द हो जाना।

पहचान—यह रोग होने पर अफारा आ जाता है। मुह से राल जाने लगती है, पेट में दर्द होता है, जिससे हाथ-पैर मारता है।

उपचार गोबर बन्द—(१) पीपल के हरे पत्ते $= \frac{1}{2}$ किलो।
(२) सीरा $= \frac{1}{2}$ किलो।
(३) काला नमक $=$१५० ग्राम।
(४) कास्टर आयल $=$२५० ग्राम।

बनाने का तरीका—पीपल के पत्ते, सीरा काला नमक, $\frac{1}{2}$ किलो पानी में लगभग तीन उबाल तक पकाओ, फिर पत्ते निचोड़ कर फेंक दो फिर उसमे २५० ग्राम कास्टर आयल मिलाकर निवाया निवाया ५० ग्राम खाने के सोडे को नाल पर रखकर पशु को दो, यदि किसी कारण एक खुराक से बन्द न टूटे तो, फिर अगले दिन इसी नुस्खे को तैयार करके पिलाओ, बन्द अवश्य ही टूट जाएगा। फिर भी अगर बन्द न टूटे तो आगे लिखी औषधी प्रयोग में लायें।

(१) दूध (गाय या भैंस) $1\frac{1}{4}$ किलो इस दूध में $\frac{1}{4}$ किलो पानी।
(२) कलमी सोरा दो सौ ग्राम।
(३) शक्कर या सीरा $\frac{1}{2}$ किलो।
(४) कपूर की टिकिया १० ग्राम
(५) कास्टर आयल तेल २५० ग्राम।

उपाय—दूध में कलमी सोरा और शक्कर पकाओ, दो उबाल आने पर नीचे उतार कर, कपूर कास्ट्रायल तेल मिलाकर ढक दें। थोड़ी देर बाद थोड़ा गर्म रहने पर, उसे ढके-ढके हिलायें। पचास ग्राम, खाने का सोडा नाल पर रख कर औषधी के साथ देवें। बन्द टूट जाएगा।

प्रत्येक नुस्खे की कम से कम दो खुराक तैयार करें चार-पाँच घंटे के अंतर से देनी चाहिए।

(प्रत्येक औषधी का तीन खुराकों तक प्रयोग करें, फिर दूसरी औषधी बदलें)

४३—पेशाब बन्द

इसमे पेशाब बन्द हो जाता है, अफारा अधिक आएगा, दर्द अधिक होगा,

मवेशी पैर पीटेगा। अगडाई तोडता है।

उपचार —(१) परात का धोवन (खाना बनाने के पश्चात्)=२ किलो।
(२) कलमी सोरा। =१०० ग्राम।

इन दानो मे $\frac{1}{2}$ किलो गाय या बकरी का दूध मिलाकर पशु को दें।

दो खुराक तैयार करें, चार पाच घण्टे के फासले से देवें, अगर इससे बन्द न टूट तो निम्न दवा प्रयोग करे।

(१) गाय का घी २५० ग्राम।

(२) शराब देशी २५० ग्राम।

दोनो एक जगह मिलाकर देवें, अगर एक खुराक मे बन्द नही टूटता है। तो चार पांच घण्टे बाद दूसरी खुराक देवें।

४४–पेशाब, गोबर, एक साथ बन्द होने पर

(१) दूध गाय या भैंस $1\frac{1}{4}$ किलो मे $\frac{1}{4}$ किलो पानी। इसके साथ ही साथ पृष्ठ १८ पर गोबर बन्द वाली औषधी भी दें।

४५–गोबर बन्द टूट जाने पर, छेरा चल जाने पर, खून गोबर में आने पर –

(१) धान का चावल $\frac{1}{2}$ किलो, उसे उबाल (मडमार) कर, उसको ५० ग्राम इसबगोल की भुस्सी मिलाकर दे दो।

उपचार -(१) बेल गिरि =१२५ ग्राम।
(२) आम की गुठली की बिजली =५० ग्राम।

इन दोनो को दो किलो पानी म पकाओ, एक किलो रहने पर नीचे उतार कर १०० ग्राम शहद मिलाकर ठडा करके पिला दें।

अगर बन्द भी टूट गया, छेरा बन्द हो गया, फिर भी पशु चारा नहीं खाता है। जुगालता नहीं है तो निम्नलिखित दवाई प्रयोग करें।

छाछ का साडा—(१) छाछ १० किलो। (२) प्याज, ७५० ग्राम
(३) खल (सरसो) ५०० „(४) नमक २५० „ देशी।

(५) मनियारी नमक १०० ,,
(६) काल नमक २५० ,,
(७) माल्ट न २ ५० ,,

इमामदस्ते म प्याज कूट कर तथा बाकी दवायें मिट्टी के बतन मे बन्द करके ढक्कन लगाकर कपडा आदि बाधकर, तीन दिन बन्द रखने, तथा चौथे दिन अपना मुह बचाकर खालें । साथ ही छलनी से ढक दें, जिससे हवा आती जाती रहे, बतन के खोलने के आठ घण्ट बाद—

१०० ग्राम राई पीसकर, सौ ग्राम अजमोद भी पीस कर, दस ग्राम लह मनिया हीग, ५० ग्राम नोसादर, तईवा, सौ ग्राम भाग इन सबको पीसकर बतन मे डाल दें । इसम स ½ किलो सुबह ½ किलो शाम चारा खिलाने के बाद देवें । इसे छलनी से बन्द रक्खें, कोई मक्खी मच्छर नही गिरना चाहिए ।

४६—अफारा

अफारा तीन प्रकार का होता है ।

(१) एक दम अफारा आ जाना (गैस रुकती है)

(२) सख्त गोबर करना अफारा रहना, (कोख भरा रहना)

(३) पशु कपडे आदि खा ले, वे रुक जाते है, उससे अफारा आ जाता है ।

(१)—एक दम अफारा आने पर—(गैस रुकती है । कोख ढोल की तरह बजती है । बीस तीस ग्राम मिट्टी का तेल दोनो नथनो मे डाले, ५० ग्राम छोटी हैट, ५० ग्राम काला नमक, २० ग्राम नोसादर तईवा, १० ग्राम हीग, इन सबको सौ ग्राम गुड डाल कर, एक किलो पानी म उबालें, पानी ७५० ग्राम रहने पर उतार लें, फिर निवाया निवाया मवेशी को देवे । दो या तीन खुराक देवें ।

(२)—सख्त गोबर पर आने वाला अफारा—

(१) छाय का माडा, जो गोबर व पेशाब, बन्द पर लिखा है दें तो आराम होगा ।

उपचार—(१) आरो के फूल ¼ किलो ।
(२) प्याज ¼ किलो (आग मे भूनकर)

इनमे सौ ग्राम वाला नमक, ८० ग्राम छोटी हैड, लहसनिया हीग दस ग्राम, इन सबको एक जगह मिल कर पीसकर चटनी बनालो। इस चटनी को चीनी या मिट्टी क बतन म रक्खें।

खुराक—३० ग्राम नयोनी घी मे ५० ग्राम चटनी मिलाकर २४ घटे मे एक बार चटा दे। अगर नयोनी घी नहीं मिलता, तो ३० ग्राम गुलकन्द में मिलाकर ५० ग्राम चटनी चटा द।

(३) मवेशी कपडे आदि खाने पर अफारा आ जाता है। इसमे ऊपर लिखा छाय का साडा दवे।

४७—धसका (खासी)

धमका, पट की खराबी, मैल म जान पर, जोर पडने पर हाता है।

धसका—(१) जो मवेशी जोर पडने पर झटका खा जाता है तथा पानी पीकर ठड लगने पर खून छाती पर जम जाता। उम पशु का आग का हिस्सा काला पड जाता है तथा धमकता रहता है।

उपचार—(१) मुर्दे की हड्डी, भस्मी =¼ किलो।
(२) गुलाबी फटकी =¼ किलो।
(३) डडे का नोसादर = ५० ग्राम।

इनको एक जगह पीम लो, २५ ग्राम सुबह तथा २५ ग्राम साम, ताजे पानी के माथ नाल से दवे। यह दवाई नौ दिन की है। नौ दिन के वाद दूसरी दवाई वदली जाएगी। जा निम्न है—

(१) मितावर =½ किलो।
(२) अम्बा हल्दी = ४०० ग्राम।
(३) जीवा माली = ५० ग्राम।
(४) पाहकर मूल = ,, ग्राम।

दा दवाइा एक माथ कूट कर, एक किला दूध, २५० ग्राम मिला कर, कुटी दवाइया म स ५० ग्राम मिला कर उबाल। पानी-पानी नष्ट हो जाने पर उसे उतार। ठडा करो,पर ५० ग्राम शहद डालकर, २४ घटे मे एक बार,

चारा खाने के दो घंटे बाद, १२ दिन तक लगातार शाम के समय दे । धमका ठीक हो जायेगा ।

(२) मल में आने पर धमका (बुखार)

इसमें सारे शरीर का रुआ काला हो जाता है, मुह म छाले पड जाते हैं, राल टपकती है, पर पक जाते ह । इसका पकने म आने का मन भी कहते हैं ।

४८—मुह मे छाले पडने पर

औषधी—(१) पपडिया करथा ५० ग्राम ।

(२) सैलखडी ५० ग्राम ।

(३) हसराज ५० ग्राम ।

इन तीनो को मिलाकर बारीक कूट लें । फटकी के पानी से मुह धोकर (फटकी पीसकर पानी मे डालकर) दिन मे तीन बार पाच-पाच ग्राम सूखी औषधी पशु के मुह मे फेंक देवें । एक किलो अम्बा हल्दी लेवें, उसे पीस कर कपड छान कर लें । फिर ५० ग्राम पिसी हल्दी १¼ किलो दूध थोडा पानी मिलाकर उबालें, नीचे उतारकर ८० ग्राम खाड ठण्डा करके मिलावें, चारा खिलाने के बाद साय को दो घण्टे पश्चात् पशु को दे दें । सुबह के समय तीन दिन तक ५० ग्राम पोदीना का अर्क, ५० ग्राम प्याज का अर्क मिलाकर सुबह दें ।

४९—पैर पटकने पर

उपरोक्त दूध की दवाई प्याज पोदीन के अर्क के अलावा देवें ।

उपचार (२)—(१) कीकर की छाल १ किलो, इसको काट कर बारीक करके १२ किलो पानी मे उबालें जब १० किलो रह जावे उसे छान लो, छने पानी मे १०० ग्राम देसी हल्दी पीसकर उसम डाल लो । दिन मे तीन बार ५० ५० ग्राम पानी खुरो पर डालें, जब तक ठीक न हो, डालते रह तथा १० ग्राम काली मिर्च पीसकर २५० ग्राम डालडा घी मे मिलाकर दिन म एक बार दिन तक देवें ।

५०–मवेशी को दवाई आदि पिलाते, धसका लगने पर

सरसो का तेल २५०ग्राम उसमे ५० ग्राम गुड की डली डालकर रख दो।

(१) कागडा सीगी १० ग्राम।

(२) मुलैठी १० ग्राम।

(३) छोटा पीपल ५ ग्राम (एक समय की)

नोट—इन तीना दवाओ को पीसकर गुड की डली तेल मे से निकालकर गुड को इनमे मिलाकर सुबह-साय ८ रोज तक देवें।

(गुड की डली तेल मे लगभग १२ घण्टे पडी रहनी चाहिए) पहली बार तुरन्त तेल मे डली भिगोकर दवा मे मिलाकर दे देते हैं।

उपचार (२)—(१) सौफ ५० ग्राम।

(२) मुलैठी ५० ग्राम।

(३) सफेद इलायची २० ग्राम।

(४) पीपल २० ग्राम।

(५) मिश्री ५० ग्राम।

इन पाचो दवाओ को एक जगह कूटकर $\frac{1}{4}$ किलो सीरे मे मिलाकर मिट्टी के कोरे बतन म रखें, ५० ग्राम सुबह, ५० ग्राम साय को चटा दें।

सब प्रकार के धसको मे प्रयोग होने वाली दवाई—

(१) नागर मोथा ५० ग्राम।

(२) मुलैठी ५० ग्राम।

(३) काकडा सीगो ५० ग्राम।

(४) बच्छ ५० ग्राम।

(५) छोटा पीपल ५० ग्राम।

(६) गोद चूनिया १०० ग्राम।

(७) गोद बबूल ५० ग्राम।

इन सबको एक जगह कूटकर कपड छान कर लें। मलाई या शहद जितने मे २० ग्राम उपरोक्त चूर्ण अच्छी प्रकार मिल जाए, तो इस चटनी को दिन मे दो बार प्रात साय चटायें।

५१ रिही का दर्द

पशु गोबर या पेशाब न करता है तब पैर पीटता है। उठना, बैठना है तो यह दर्द रिही का कहलाता है।

उपचार —(१) गुड़ १०० ग्राम।
(२) नौसादर ५० ग्राम।
(३) देवदार का बुरादा ३० ग्राम। (एक खुराक)

नौसादर व देवदार के बुरादे को १ किलो पानी में उबालो। ७५० ग्राम पानी रहने पर गुड़ व १०० ग्राम नमक ५० ग्राम उबले पानी को नीचे उतारकर उसमें मिला दो। निवाया निवाया पानी मवेशी को दे दो, इसकी दो खुराक दो तीन चार घण्टे के अन्तर से दूसरी खुराक देवें।

५२—बिस्यारी (बुखार)

पशु को लगभग ३६ प्रकार का बुखार होता है। इसमें मुख्य ११ हैं—

(१) ठंडी बिस्यारी

बाहर से पशु ठंडा लगता है। परन्तु शरीर के अन्दर का भाग गर्म रहता है। यह थर्मामीटर से जाना जा सकता है। इसमें पशु कांपने भी लगता है और अफारा भी आ जाता है

उपचार — मालिश करने को
(१) अजवायन खुरेसानी १० ग्राम।
(२) सोंठ मतवा १० ग्राम।
(३) नमक देसी १० ग्राम।

इन तीनों दवाओं का एक साथ बारीक पीसकर ३० ग्राम यानी घी अथवा ३० ग्राम तेल अरंडी में मिलाकर इससे पशु की पूरी रीढ की हड्डी पर हाथ से मालिश करें तथा मालिश करने के तुरन्त पश्चात पशु की कमर पर हल्का कपड़ा डाल दें तथा पसीना आने पर कपड़े के अन्दर ही बिना उघाड़े उसे पोंछें अगर पसीना पहली मालिश में न आए तो फिर मालिश करें।

उपचार—पिलाने की औषधी
(१) माल कगनी २० ग्राम। (२) मसा गूगल २० ग्राम।

(३) सोंठ २० ग्राम ।   (४) शक्कर १५० ग्राम ।

इन सबको कूटकर १½ किलो पानी में उबाल लें जब ७५० ग्राम पानी बचने पर पानी नीचे उतार कर छान लो । फिर २० ग्राम घी या सरसों का तेल में छोड़कर उसे उतार कर निवाया निवाया दे दो । चार घंटे बाद दूसरी खुराक दवें ।

(२) गर्म बिस्यारी

आँखें लाल, आधे कान जड़ से गर्म, अग्रभाग (फुगन) में ठंडे, रीढ़ की हड्डी गर्म तथा हांफने लगना है ।

उपचार—(१) गूलर की छाल ¼ किलो ।
(२) आम की छाल ¼ किलो ।
(३) ढाके की छाल ¼ किलो ।
(४) नीम की छाल ¼ किलो ।
(५) माले की जड़ ⅛ किलो ।

इनको लगभग ७ किलो पानी में भिगो दो । २४ घंटे के बाद उसी पानी में उबालो । ५ किलो पानी रहने पर, उसे छान लो, इसमें से आधा किलो पानी लो, उस पानी में १० ग्राम अजवायन, १० ग्राम सुहागे की खील, ३ ग्राम काली मिर्च, १०० ग्राम खाड मिलाकर प्रात साय पांच दिन तक दें ।

(३) खूनी बिस्यारी

गोबर अथवा पेशाब में खून आने लगता है, बुखार तेज होता है ।

उपचार—(१) नाली का साग ५० ग्राम ।
(२) तुख्म खुरपा २० ग्राम ।
(३) शीतल चीनी २० ग्राम ।
(४) ब्रह्मी घास २० ग्राम ।   (एक खुराक)

इन सबको एक साथ कूटकर, शहद में मिलाकर जितनी मात्रा चटनी सी बन जाय ३० ग्राम दिन में दो बार दवें । दो-तीन दिन तक पशु को चटायें, खिलायें ।

(४) पुरानी बिमारी (बुखार)

इसमे बुखार पुराना पड जाता है, पशु जुगालना बन्द कर देता है। चारा बहुत कम खाता है। दिन प्रतिदिन कमजोर होता चला जाता है।

उपचार— (१) बाऊ का बूर ५० ग्राम।
(२) सीको का बूर ५० ग्राम।
(३) रेवह चीनी ३० ग्राम।
(४) काली मिर्च ५ ग्राम।

इन सबको पीसकर सवा किलो पानी मे पकाओ। ७५० ग्राम पानी रहने पर, उतारकर छान लो। फिर उसम मी ग्राम शक्कर डालकर पशु को देवें। पशु के ऊपर हल्का कपडा डाल देवें। दिन मे दो बार प्रात साय, पाच दिन तक देवें। अवश्य ही लाभ होगा।

(५) बाय बिमारी

इसमे पशु के पैरो पर सूजन आ जाती है। पशु या तो अगले आधे हिस्से से उठता है या पिछले आधे हिस्से से उठता है। यदि उसे सहारा देकर खडा कर दिया जाए तो जिस हिस्से मे बाय होगी, पशु कापेगा। कापने वाला हिस्सा ठडा होगा बाकी हिस्सा गर्म होगा। इसको अधरग वाय के नाम से भी जाना जाता है।

उपचार— (१) मनवा सौंठ २५० ग्राम।
(२) सितावर २५० ग्राम।
(३) श्याम मूसली १०० ग्राम।
(४) इन्दरायण का फल ५०० ग्राम।
(५) कर की छाई २५० ग्राम।

(कैर का पड जिसका अचार पडता है कि लकडी को फूककर छाई बनाई जाती है।)

इन पाचो चीजो को एक साथ कूटकर उस ढाई किलो मथे का चून, ढाई किलो चने का भुना चून पांच किलो गुड।

गुड को कढ़ाई मे पिघलाकर, इसम चने, मेथे का चून व पाच दवाओ का

मिलाकर २५०-२५० ग्राम के लड्डू बना लें। एक प्रात तथा एक लड्डू सायं को खिलावें।

मालिश करने की औषधि —

(१) सौंफ २५० ग्राम। (२) अजवायन कुरेसानी २५० ग्राम।

इनको छ किलो पानी म साय को भिगो दो, रात भर भीगी रहने दो, प्रात उबालो। तीन किलो पानी रहने पर उतार कर, छान लो। उसके २५० ग्राम पानी मे ५० ग्राम अरण्डी का तेल, ५० ग्राम बफ डाल दो। इसकी मालिश प्रभावित भाग पर करो तथा पशु पर गर्मी मे हल्का तथा सर्दी मौसम म भूल डाल दो। पसीना आये तो उसे बिना कपडा उघाडे पोछ दो।

छनी हुई सौंफ कुरेसानी अजवायन मे १५० ग्राम काला नमक २० ग्राम लहमनित्रा हीग मिलाकर ५० ग्राम रोज एक बार दोपहर, चारा खाने के पश्चात देवें।

(६) गठिया बाय

इससे पशु के जोडो पर वम आ जाता है। उठन-बठन म परशानी होती है, उसे गठिया बाय कहते हैं।

उपचार—(१) बेर कटेली ढाई किलो (इसकी कुट्टी काटकर सुखाओ)।
(२) आखे के पत्ते ढाई किलो (सुखाओ)
(३) भाग एक किलो (सुखाओ)
(४) नमक देशी २ किलो।
(५) कलमी सौरा २५० ग्राम।

मिट्टी का बतन लेकर, उसके चारो ओर पीली मिट्टी का लेप लगाकर, फिर उसमे पहिले तली म सूखे कुछ आखे के पत्ते फलावें, उस पर कलमी सोरा नमक की तह, फिर बर कटेली की तह, फिर कलमी सौरा नमक की तह, फिर भाग री तह, फिर कलमी सोरा नमक की तह, फिर आखे के पत्तो की तह, फिर कलमी सोरा की नमक तह, इसी प्रकार कई तह लगावें। फिर सब तह लगन पर साप की कांचली रखकर बतन पर ढक्कन लगाकर उसे गारा मिट्टी से लेप दें। एक जमीन म गड्ढा खादकर, बतन के चारा ओर ऊपर नीच दो टाकरे

पुराने उपलो म दबाकर ाग लगा दें। आग लगाने पर ऊपर से राख स अवे की तरह ढा दे जिससे आग अधिक न भडके। उसे २४ घट बाद उसी गडढे मे बतन का मुह खोलें तथा १२ १४ घट ठडा होने दें। फिर वहा से निकाल कर बारीक पीस लें। फिर इसमे २५० ग्राम अजवायन, १०० ग्राम राई, ५० ग्राम सतवा ैठ को पीसकर उसमे मिला दे। उसमे से २५ ग्राम दवा ५० ग्राम चने क अ टे म मिलाकर, गीला अथवा सूखा पशु को दिन म प्रात साय दो बार खिलायें। जब तक ठीक हो, खिलाते रह, वष तक भी।

मालिश की औषधि—

(१) रोगन महुआ २० ग्राम।
(२) रोगन बबूना २० '
(३) अरडी तेल १०० "
(४) सरसो तल १०० "
(५) तारपीन तेल ५० "
(६) जायफल एक ५० "
(७) सतवा सौंठ ५ "
(८) लाहारी नमक ५ "
(९) कुरासानी अजवायन ५ ग्राम।

छ से नौ नम्बर दवाई तक एक साथ पीसकर एक से पाच नम्बर तक के तेल मे घोट दें। उसे जोडा पर मालिश दिन मे एक बार करें।

(७) पित्त वाय

इसमे पशु क शरीर पर दाफड पड जाते हैं। उनम खुजली लगती है। पशु उनको मुह से फ ड डालता है, खून निकल पडता है। इसम पशु के मुह स पानी गिरता है।

औषधी—आग के पत्ते एक किलो इनको ग्म किलो पानी म पकाओ, जब ७½ किलो पानी रह जाये, उतार लो। पत्ते निचोड कर बाहर फेंक दो। बचे पानी म ५० ग्राम काली मिच पीसकर, आधा किलो शहद डालकर आधा किलो प्रात दिन म एक बार पशु को दवें, १४ दिन तक। विरायते का अर्क एक

बोतल लेकर ५० ग्राम अक, आधा किलो, गाय या बकरा के कच्चे दूध म मिला कर खाय का दें।

मालिश की औषधी —

(१) अर ी का तेल २५० ग्र
(२) आदना मार गधा १०
(३) नीम की कोपल १०
४) मेहदी २०
(५) दही १००

इन सबको एक साथ मिलावें तथा दाफड आदि पडे स्थान पर दिन मे एक बार लगावें।

(८) गुझ बिस्यारी (कब्ज)

गोबर सख्त हो जाता है। शरीर म दद होता रहता है, अगडाई तोडता रहता है। यह बीमारी प्राय वर्षाऋतु मे होती है।

(१) आकें के पत्ते २½ किलो। (२) गुड २½ किलो।
(२) नमक सादा २ किलो।

इनको तीस किलो पानी मे मिला कर मिट्टी के बतन म बन्द करके भूमि मे दबा दो। आठ दिन के बाद इस बतन को निकालो, गड्ढे मे ही खोलो, शाम तक उसी मे खुला रखा रहने दो, साय के समय निकालकर उसे छान लो। एक किलो कच्चा हल्दी बारीक पीसकर उसमे डाल दो। उस पानी म से २५० ग्राम सुबह आधा किलो शाम को पशु को दें। प्राय बरसात मे चारे म कीडा हो जाता है जिसके कारण यह कब्ज बिस्यारी हो जाती है। यह काढ़ा इस कीडे को समाप्त करना है, जिससे कब्ज समाप्त हो जाता है।

(६) बुखार

नथनो से पानी टपकना, आखो स आसू टपकना, खोर मे मुह लटकाये खडे रहना।

उपचार—(१) समन्दर झाग ५० ग्राम।
(२) माल कगनी ५० ”

(३) मसा गूगल ५० ग्राम
(४) अमल तास का गुद्दा ५० "
(५) देवदार बुरदा ५० "

इनको २५ किलो पानी मे किसी भी बतन म पका लो। जब २० किलो रह जाए, उतारकर छान ला। काली मिच पीसकर ५० ग्राम गुड, दो किलो पानी मे मिलाकर फिर गम कर दो। इसको ठडा करके आधा किलो सुबह आधा किलो साय को दो और ऋतु के अनुसार पशु पर कपडा डाल दो।

आराम हाने क बाद दस दिन तक निम्न दवाई दें।

(१) दूध १½ किलो। (२) अम्बा हल्दी ५० ग्राम।

दूध को उबालती बार अम्बा हल्दी डालकर एक उफान दे दो, नीचे उतार कर १०० ग्राम शक्कर डालकर ठण्डा करके सुबह-शाम दस दिन तक दें।

(१०) फालिज बिस्यारी—

पशु का पूरा शरीर शिथिल हा जाता है, तापमान गिर जाता है। चारा पानी, बिलकुल प्रयाग नही करता है। जिस करवट लेट जाता है, पडा रहता है।

उपचार—मोर की पच के दो चन्दे लेकर, फूककर छाई बना लो राख को योनी घी म मिलाकर पशु की आखो मे डालकर पट्टी बाध दा।

भोपारा—दो किलो छाय म अजवायन १०० ग्राम, नमक १०० ग्राम डालकर धूप मे किसी भी बतन मे डालकर लगभग दो घटे क लिए रख दो। चार ईंटे लाल हाने तक गम करो, पशु पर जमीन तक लग कपडा से ढको, केवल मुह बाहर रहना चाहिए किसी तसले मे गम इट रखकर, कपडा पिछली तरफ स हटाकर इट पर छाय का छपका मारो जिससे धुआ उठेगा, कपडा ढक दें। धुए से मुह बचना चाहिए। इसी प्रकार चारो ईटो पर अदलते-बदलते छपका मारते रहो जब तक छाय गरम हा। पशु को जो पसीना आये अन्दर ही अन्दर उस पाछन रहा हवा नहा लगनी चाहिए।

औषधी—(१) जवा मिर्च २० ग्राम, ५० ग्राम गुड मे मिलाकर खिला।

उपरोक्त औषधी को भोपारा करने के तुरन्त बाद देवें। भोपारा तीन दिन तक दिन मे एक बार देवें। साय को एक किलो दूध, १०० ग्राम खांड, २ ग्राम काली मिच, १० मुनक्का १०० ग्राम घी मे छौंककर दूध मे उबालकर तीन दिन तक देवें।

नोट —अगर पशु पूछ तथा चारो पैर हिलावे, तो यह दवाई ठीक कर देगी अगर पशु एक कान, एक पैर हिलावे, तो नही बचेगा। पशु की पूछ पर दबाव डालो, अगर वह हिलाये तो समझो बचेगा अगर वह दबाव महसूस ही न करे तो बचेगा नहीं।

(११) चमक बाय—

इसम पशु को चमक होती है, मारता है भागना है, रम्भाता है। पागल सा हो जाता है।

उपचार—२५० ग्राम गेहू का आटा मांड लो, उसकी दो कटोरी बनाओ, दोनो कटोरियो मे २५ २५ ग्राम घी ताया हुआ रक्खो, इनको पशु की आखो पर रखकर पट्टी से बाध दो।

खडे सीगो वाले पशु के सींगो की नोक पर करीब तीन इन्च तक मिट्टी के तेल मे कपडा भिगोकर सीगो पर लपेट दो, पट्टी के नीचे की ओर गीली मिट्टी सीगो के चारो ओर लपट दो, और कपडे पर आग लगा दो, सीग के पटकने की आवाज तक सीगो पर मिट्टी का तेल डालते रहो। सीग की गिरि पटकते ही आग तुरन्त बुझा दें। दोनों सीगो की गिरि आगे-पीछे पटकेगी, जिस सीग की गिरि पटके, उसी की आग बुझा दो दूसरे पर जलने दो। जब तक पटके नहीं।

जिन पशुओ के सीग बराबर न फले, या नीचे लटके हैं, उनके लिए, ताकि पशु का कोई और हिस्सा न जले, लोहे का टुकडा गम कर सीग के ऊपरी हिस्से पर कम से कम तीन-तीन बार दोनो सीगो पर दाग दें, जब तक कि सीग की नोक पर सुराख सा न होवे।

पिलाने की औषधी

(१) माले की जड २५० ग्राम।

(२) आखे की जड २५० ग्राम।

(३) चिरचिटे की जड २५० ग्राम।

(४) केले की जड १२५ ग्राम।

(५) गूलर की छाल १२५ ग्राम।

इन सबको १५ किलो पानी मे उबालो। १२ किलो पानी बचने पर उतार कर छानो। उसमे ५० ग्राम सोंठ सनवा ५० ग्राम खुरेसान अजवायन, १० ग्राम हींग २० ग्राम काली मिर्च, २ किलो गुड, इन दवाओ को पीसकर, उपरान्त पानी मे एक किलो पानी ताजा मिलाकर इन्हे उसमे डालकर एक उबाल दो। इस काढे को मिट्टी के बरतन मे ढककर रख दो। चार दिन लगातार सुबह शाम ५०० ग्राम की मात्रा मे दो। चार दिन के बाद पहिले १२५ ग्राम चने का भुना हुआ आटा सूखा खिलाकर ऊपर से आधा किलो काढे का पानी देवें। दिन मे दो बार।

५३ वेदन की बीमारी

गोबर के रास्ते खून जाने लगता है, अधिक बढ़ जाने पर आंत कटने लगती है। पशु चारा खाना छोड देता है पूरा शरीर गर्म होकर भभकता है।

उपचार—पहला (१) इमली के पत्ते २५० ग्राम।

(२) काली मिर्च ५ „ (यह एक खुराक है)

इन दोनो को बारीक पीसकर ताजे पानी मे मिलाकर दिन मे चार चार घंटे के अन्तर से पिलाओ।

उपचार दूसरा—(१) बेलगिरि २५० ग्राम।

(२) आम की गुठली की बिजली ५० ग्राम

इन दोनो को कूट कर दो किलो पानी मे पकाओ। एक किलो पानी रहने पर उतारकर छान लो खूब ठण्डा करके उसमे १२५ ग्राम शहद मिलाकर पिला दो। (पहली दवा के देने के दो घंटे के अन्तर से दिन मे चार बार दवें।)

इन दवाओ के प्रयोग के बाद जब खून जाना बन्द हो जाता है तो पेशाब घलता है, शरीर से गर्मी निकलती है तो निम्न तीसरी दवा प्रयोग करें।

उपचार तीसरा—(१) पादीना हरा ५० ग्राम।

(२) सौंफ ५० „

इनको पीसकर एक किलो ठंडे पानी मे भिगो दो। लगभग छ घंटे रक्खे रहने के बाद, उसी पानी मे घोटो, उसमे १२५ ग्राम मिश्री मिलाकर पिला दें। दूसरी बार चार घंटे बाद पिलावें, यदि छेरा बन्द न हो तो खून व छेरा बन्द होने पर पशु चारा खाना आरम्भ कर देता है तो निम्न औषधी देवें।

दही आधा किलो मे तीन नीम्बुओ का अर्क निचोड़ो, २० ग्राम नमक सुलेमानी, ५० ग्राम भुने चने का आटा दही मे मिलाकर, एक खुराक रोज लगातार तीन दिन तक खिलाओ। पशु चारा अच्छी प्रकार खायेगा।

नोट—वेदन की बीमारी वाले पशु का तीन अगुल सीधा कान ऊपर से नापकर इसे उस्तरे से काट दें, जब थोडा खून बह जाय, तो फटकी सफेद, बारीक पीसकर कटी हुई जगह पर लगा दें, ताकि खून बन्द हो जाए। अगर किसी कारण खून बन्द न हो तो एक कटोरी आदि मे सिरका डालकर, उसमे कान डाल दें, खून अवश्य ही बन्द होगा। इसके पश्चात् कान को किसी रस्सी में बाधकर सींग से बांध दें ताकि कान हिलकर, खून न निकले।

५४ गाय तथा भैंस का फूल निकलना

उपचार—(१) गोला २५० ग्राम। (२) देशी घी २५० ग्राम।
(३) खाड २५० ,, (४) पानी २५० ,,

गोला कसकर, सब एक साथ मिलाकर गर्म करके अच्छी प्रकार पका लें, ठडा करके, पशु को ब्याने के कम से कम दो महीने पहिले एक या दो खुराक दे दें। एक खुराक एक दिन मे।

उपचार—(२)—(१) बकरी का दूध आधा किलो।
(२) चाक के पास की रखी कुम्हार की हडिया की मिट्टी ५० ग्राम।
(३) शहद ५० ग्राम।

इन तीनो को मिलाकर, फूल जरा भी दीखने पर लगातार आठ दिन पिलावें। यह औषधी ब्याने से चार-पाच महीने पहिले प्रयोग करन की है।

उपचार—(३) (१) चिकनी सुपारी आधा किलो।

(2) चुनिया गोंद २५० ग्राम ।

इन्हें एक जगह मिलाकर, २५० ग्राम उड़द की दाल धोकर, पीसकर, इस दाल मे पचास ग्राम औषधी मिलाकर आठ दस दिन एक खुराक रोज पिलावें।

यह औषधी दस से बीस दिन पहिले ब्याने के फूल निकलता देखकर देवें।

उपचार—(४) जो ब्याने से दो-चार दिन पहिले फूल चमके उसकी औषधी।

(१) कघी की डोडी, २५० ग्राम। (२) मेहदी 50 ग्राम।

इनका एक जगह मिलाओ, तीन खुराक बनाओ, तीन दिन तक २५० ग्राम देशी घी मे मिलाकर पिलाओ।

फूल निकलने पर

जिस पशु का फूल निकल जाय तो उस पर शराब का छींटा देकर जूती आदि का सहारा देकर अन्दर धकेलें।

(अगर कछुए की खोपडी की भस्मी मिल जाए तो निकले फूल पर शराब का छीटा देकर उसके चारो ओर कछुए की खोपडी की भस्मी बुरककर उसे अन्दर कर दें। अगर हो सके तो दो चार बार भस्मी को बाद मे सावे म फक दें।)

उपचार—(५) (१) कघी का अक २५० ग्राम। (२) सूजी २५० ग्राम।
(३) गोला २५० ग्राम। (२) घी देशी २०० ग्राम।

चारों को एक साथ मिलाकर (गोला कसकर) एक दिन छोड़कर एक दिन तीन खुराक लगातार देवें।

(यह दवा फूल दीखने से जब तक ब्यावे कभी भी दे सकते हैं। आराम करेगी)।

उपचार—(६) (१) कच्ची राल २५ ग्राम लगातार तीन दिन तक पीसकर ताजे पानी से एक नाल के साथ देवें।

(यह औषधी भी कभी भी दे सकते हैं)।

५५ अकडे की औषधि

पशु के चारो पैर अकड जाते हैं आख लाल हो जाती है अगर खड़ा हो

जाय तो पैर डगमगा जाते हैं। सावधानी—मक्डे में आये पशु को बैठे हुए को उठाना नहीं चाहिए।

उपचार—(१) काली मिर्च पाच ग्राम। (२) हल्दी देशी बीस ग्राम।
(३) अजवायन बीस ग्राम। (४) हेलवा पांच ग्राम।

इन चारों दवाओं को १०० ग्राम घी मे भूनकर १¼ किलो दूध में छोक देवें। दो उफान आने पर उसे उतार लेवें। उसमे १५० ग्राम पक्का मीठा मिलाकर ठंडा करके पिलाओ। पशु पर कपडा डाल दें। पसीना आवे तो उसे अन्दर ही पोंछे। एक खुराक रोज तीन दिन अवश्य दें।

५६—(क) जोर आने पर (छाती भरने पर)

इसमे पशु की छाती भर जाती है। उस पर सूजन आ जाती है। अगले पैर ऊचे उठाकर रखता है। रूंआ फाड़ता है। चारा कम खाता है, पानी कम पीता है।

उपचार—(१) सितावर ½ किलो। (2) अम्बा हल्दी ½ किलो।
(३) पोहकर मूल ¼ किलो। (४) भीका माली ¼ किलो।

इन चारों दवाओं को एक साथ कूट लें। इसमें से ६० ग्राम दवा, सवा किलो दूध, ३६० ग्राम पानी, एक साथ मिलाकर पकावें। खूब उबालकर नीचे उतार, उसमें १०० ग्राम चीनी मिलाकर पशु को चारा खाने के बाद दिन में एक बार, साय के समय-चौबीस दिन तक लगातार देवे।

चारा खाने से पहले प्रात काल की औषधी—
(१) गुलाबी फटकी एक किलो।
(२) लोटा सज्जी सफेद आधा किलो।

दोनो को एक जगह कूट लो, ५० ग्राम औषधी प्रात ताजा पानी के साथ चौबीस दिन तक देवें।

५७ लिकाडा (फोडा)

(१) यह एक प्रकार का फोडा होता है। जो पशु के शरीर में कहीं भी हो जाता है। यह कई प्रकार के हैं। (१) जैसे हड्ड बहायला (२) विष

बहायला (३) जल बहायला (४) बेन्त बहायला (५) बाय बहायला आदि-आदि।

(१) हड बहायला—

इसमे पशु की हड्डी मे मवाद पड जाती है, वह सदा बहती रहती है।

फुके हुए मुर्दे की हड्डी २५० ग्राम एक हडिया मे बन्द करके आग के दहडे रख दो, उस हड्डी की फुककर छाई हो जायगी।

५ ग्राम हड्डी की छाई लो, ५० ग्राम ताजे पानी मे घोल लो, इस तैयार दवा को पिचकारी मे भरकर घाव वाले हड्डी के स्थान पर सुबह शाम भर दो, जब तक ठीक हो, यह प्रक्रिया जारी रहे। पशु जब तक ठीक हो, पेठा आधा किलो सुबह आधा किलो शाम रोज कच्चा खिलावें।

(२) विष बहायला—

यह फोडा अधिकतर छाती पर आता है। यह शरीर के बाहर दिखाई देता है।

उपचार—(१) भैसा गूगल ५० ग्राम। (२) गेरू पक्का ५० ग्राम।
(३) कीकर गोद २० ग्राम। (४) मेथी २० ग्राम।
(५) आखे की जड की बकली २० ग्राम।

इनको पीसकर, कूटकर, पानी मिलाकर घुटाई करो। पशु के फोडे पर इसका लेप कर दें। ध्यान रहे—जब तक यह लेप सूखे नही, पशु को बठने न दे। इसके दो लेप चढाएँ, दूसरा लेप तीन दिन पश्चात चढ़ायें, पहला लेप धोकर साफ कर ही दूसरा लेप चढायें। इसी प्रकार ठीक न होने पर तीसरा, चौथा लेप चढा सक्ते हैं।

पिलाने की औषधी—(१) माले के पत्ते आधा किलो। (२) बिन्डाल डोडा ५0 ग्राम। (३) चिरायता ५0 ग्राम।

इसको ७½ किलो पानी मे पकवायें पकाती बार २५० ग्राम, नमक छोड दिया जाय, ५ किलो पानी रहने पर उतारकर छान लो, उसमे से २५० ग्राम पानी सुबह २५० ग्राम पानी साय को, सुबह चारा खाने से पहिले शाम को खाने के बाद मे।

(३) जल बहायला—

यह फोड़ा पेट के नीचे, पीछे से आगे गदन के नीचे तक कही भी उभर आता है। इस फोड़े मे पानी भर जाता है।

लेप – (१) लाजवन्ती ५० ग्राम। (२) गेरू पक्का ५० ग्राम। (३) सरेश ३० ग्राम। सेलखड़ी २०।

सरेश को अलग गम पानी मे भिगोलें व गम करलें। बाकी दवाओ को इसी मे पीसलें। इसका लेप रोजाना लगभग तीन दिन तक उसी लेप पर करते रहें।

खाने की दवा –(गठिया बाय मे पिलाने वाली दवा दोहराओ।)

(४) बेल बहायला—

यह शरीर मे बल की तरह, कभी पेट के नीचे तो कभी कमर के ऊपर या कभी कही और गूले की तरह उभरते रहते हैं।

खाने की दवा—(१) सांप की काचली लगभग दो तीन फुट। (२) धतूरे की डोढ़ी दो। (३) जवा मिर्च २० ग्राम। (४) चिरचिरे के पत्ते २५० ग्राम।

एक हंडिया मे इन सब दवाओं को रखने १२५ ग्राम देशी नमक रखके हाडी का मुह बन्द करके दहडे मे रखकर फूक दो। दवाओं की राख हो जानी चाहिए, चाहे हाडी दुबारा दहडा मे रखनी पड़े। इस भस्मी मे १ किलो भुने चने या मेथे का चून मिलाकर रख लो, इस दवा मे से २० ग्राम सुबह, २० ग्राम शाम ताजे पानी के साथ सुबह चारे खाने के दो घण्टे पहिले या साय को चारा के दो घण्टे बाद मे जब तक ठीक हो, खिलाते रहें।

(५) बाय बहायला—

यह भी शरीर मे कही भी हा जाता है इसे पशु अधिक महसूस नही करता है।

ओषधी—(१) इन्द्रायण २५० ग्राम। (२) सौंठ १०० ग्राम।

(३) कुरेशानी अजवायन ३० ग्राम, (४) कैर की छाई १०० ग्राम।

५ किलो गुड, ५ किलो मेथे के चून मे मिलाकर २५० ग्राम सुबह, २५० ग्राम शाम को खिलावें।

(६) ऊबक पहायला—

यह पशु को गदन पर मुह के नीचे ठोढी पर निकलता है।

लेप—(१) खाड २५ ग्राम, (२) गेरू ५० ग्राम, (३) काली जीरी ५० ग्राम, (४) सेलखडी ५० ग्राम, (५) क्ली १०० ग्राम, (६) एलवा ५० ग्राम।

इन सबको एक जगह मिला कर पीस लें, अगर पानी की जगह सिरका मिला कर लेप तयार करें तो अधिक लाभदायक है। लेप लगा कर करसी स सेक स। रोजाना, तीन दिन तक लेप लगायें।

पिलाने की औपधी—(१) चिरचिटे के पत्ते ५० ग्राम, (२) काली मिर्च ५ ग्राम।

इन दोनो को एक जगह पीस कर गम तेज पानी मे मिला कर दिन मे तीन बार पिला दें।

५८—गलघोट

यह फाडा बिल्कुल टेटु ा पर निकलता है, इतनी सूजन आ जाती है कि सास नली ब द हो जाती है, इसे गलघोट फोडा कहते हैं।

गलघोट फोडा बहुत जल्दी बढता है—अगर कोई कर सके तो इस स्थान पर गम सरिया कर ाग दे दिया जाय, जिससे उसका सो न उतर जाता है, जला भाग बाद मे ठीक हो जाता है, उसकी मियाद १२ घटे है। इसी समय मे उपचार हो जाना चाहिए, नही तो पशु नहीं बचेगा।

खिलाने की दवा—

एक दम काले कुत्ते की पूछ के दस-पन्द्रह बाल फाड कर गुड मे मिला कर खिला दें।

औषधी—(१) जवा मिच ५० ग्राम, (२) कलमी सोरा ५० ग्राम, (३) कपूर टिकिया ५ ग्राम।

मिच इतनी कूटी जाए कि साबुत बीज न रहे। फिर कलमी सोरा, कपूर मिला कर कूटें।

५०० ग्राम मैदा कपड छान करके, उसकी चकला-बेलन पर रोटी बनाओ,

ये दवायें इसके बीच म रख कर इसका गोला सा बना लो। उपलों का दहेड़ा सिलगा कर जब धुआ न रहे, उसके बीच मे गोला रख दो, अगर कहीं से गोला फूट निकले तो उस पर चून लगा दे और इसको गोला होने तक भून। फिर इसे ठण्डा करके इमामदस्ते में कूट लें।

बीस बीस ग्राम की गोलिया बना लें, २५० ग्राम पानी मे एक गोली घोलो, दो घटे के अन्तर से जितनी दी जा सके दे दो।

पिलाने की औषधी—

(१) इमली के पत्ते ५० ग्राम, (२) काली मिच १५ या २०।

इन दोनो का पीस कर पानी म मिला कर जल्दी जल्दी पिलावें, दो-दो घटे के अतर से।

५९—(क) पशु की आखो का उपचार

पशु की आख लाल हो जाए, ढीड आने लगे, फोला पड जाए आदि-आदि।

औषधी—(१) काले सिरस के बीज दो रत्ती, (२) अफीम एक रत्ती।

इन दोनो को एक साथ पीसकर मिलाकर, न्योनी घी म मिलाकर, सुबह-शाम पशु की आखो मे डालें।

दूसरी औषधी—(१) भेड़ का दूध, (२) नमक सादा कपडछन ३ ग्राम, (३) अफीम १ ग्राम।

भेड के दूध मे पकाकर मरहम बना लें तथा सुबह शाम डालें।

(ख) कान की औषधी

कान मे फुसी हो जाए, बहने लगे।

औषधी—बेरी के पत्ते २५० ग्राम, (२) नीम के पत्ते २५० ग्राम, (३) नीम के पत्ते २५० ग्राम, (४) लहसन का अक १० ग्राम, (५) प्याज का अक १० ग्राम, (६) अजवायन ५ ग्राम।

इन सबको १०० ग्राम सरसो के तेल मे पका लें जब पत्ते काले हो जाए, तेल को छान कर शीशी मे रख लें, कान साफ करें तथा पिचकारी से डालें।

६०—जेल (जेर) गेरना

कभी कभी गाय समय ब्याने पर जेर नहीं गेरती, पशु को जेर ज्यादा से ज्यादा ब्याने के पाच घटे बाद तक डाल देनी चाहिए।

औषधी—२½ किलो पानी उबालो जब १¼ किलो रह जाए उसमें ५० ग्राम सोंठ, ५० ग्राम अजवायन, २५० ग्राम शक्कर, १५० ग्राम सरसों का तेल, इन्हें पानी मे मिलाकर पशु को दे दें। यदि इतने पर भी न डाले तो—

औषधी—(१) गूलर की छाल २५० ग्राम, (२) आम की छाल २५० ग्राम, (३) जामन की छाल २५० ग्राम।

इनकी कुट्टी काटकर ५ किलो पानी मे पकाओ, जब २½ किलो पानी रह जाए उसे छान लो, उसमे ५० ग्राम सुहागा, ५० ग्राम नोसादर कतली, ५० ग्राम अजमोय। इनको पीसकर इसी पानी मे मिला दो। ½ किलो गुड डालकर फिर उबाल दे दो ताकि गुड मिल जाए। २० ग्राम चौंटली, इन्हें बहुत बारीक पीसकर चटनी बना दो, तमाम चटनी को ताल पर रखकर आधा किलो उप रोगन पानी के साथ देवें अगर फिर भी जेर न डाले तो पांच घटे बाद एक तोला चौंटली पीसकर उपरोक्त काढे पानी के साथ देवें।

६१—जेल (जेर) डालने के बाद अगर मैला न डालें

औषधी—(१) जापे का बत्तीसा आधा किलो, (२) दशमूल दो बोतल।

बत्तीसा को कूटकर आठ खुराक बना लो, ५० ग्राम बत्तीस २५० ग्राम गुड, १½ किलो पानी म पकावें, जब १ किलो रह जाए नीचे उतारकर ठडा कर लें, उसमे दशमूल की बोतल का एक चौथाई मिलाकर दिन में एक बार देवें।

प्रात दें (यह केवल एक समय की औषधी है।)

शाम को देने की दवा—

आधी किलो सरसों दलकर आधी किलो छाछ म भिगोकर रख लो शाम को २५० ग्राम शक्कर डालकर पशु को खिलाओ। आठ दिन तक खिलायें, साफ हो जाएगा।

अगर किसी पशु को मैला रुक जाता है और दूध देना बन्द कर देता है। बेहोशी सी की दशा मे रहने लगता है तो –

औषधी—(१) शराब २५० ग्राम देशी, (२) कच्चा दूध आधा किलो। (गाय हो तो भैस का, भैस हो तो गाय का)

दोनो को एक साथ मिलाकर दिन मे एक बार चार दिन तक दें।

६२—मुह के मवासे व अलाई

मुह मे जो अन्दर कगारे से होते हैं, वे फूलकर नीले रग के मोटे हो जाते हैं, उन्हे मुह के मवासे कहते हैं। जीभ के ऊपर जो गुठली सी होती है वह फूलकर मोटी हो जाती है, उसे अलाई कहते हैं। इन दोनो बीमारियो में पशु चारा खाना तथा जुगाली भी बन्द कर देता है।

औषधी – (१) मक्का की कूकडी की गिल्ली एक, (२) नमक ५० ग्राम, (३) अकरकरा २० ग्राम।

इन तीनो को एक जगह मोटा मोटा पीस लें, इसको फिर पशु की जीभ की गुठली व मवासों पर रगडो। मवासो से खून निकलेगा, दोनो रोग ठीक हो जायेंगे।

६३—पैर की गुम चोट

औषधी सेलखडी २० ग्राम, (२) चूना (दीवार) ५० ग्राम, (३) हल्दी, दार २० ग्राम, (४) सीरा १०० ग्राम, (५) दीवार की रेह, ५० ग्राम, (६) सरसो का तेल ५० ग्राम।

इन सबको एक बर्तन मे पका लें, जब मिल जाए तथा मरहम सा बन जाए तो उतारकर कुछ निवाया-निवाया सा मरहम रुई के टुकडे पर रखकर चोट वाली जगह पट्टी से बांध दें, चौथे दिन दूसरी पट्टी बांधे।

६४—नसपाड

जब किसी पशु के किसी भी पैर की नस के ऊपर नस चढ जा। जो लग करना है, उसे नसपाड कहते हैं।

औषधी—गुम्मा २५० ग्राम, (२) बिसेन्दू के पत्ते २५० ग्राम, (३) नमक देशी १०० ग्राम।

इन तीनो को १० किलो पानी मे उबालें। जब आठ किलो रह जाए उसे उतारकर नसपाड की जगह के ऊपर एक कपडा रखकर गरम-गरम पानी से उसे झारते रहे। जब पानी समाप्त हो जाए उस स्थान को कपडे से पोछ कर साफ कर सुखा दें। यह प्रक्रिया तीन दिन तक करें।

मालिश का तेल -

(१) तिल का तेल ५० ग्राम, (२) अलसी का तेल ५० ग्राम, (३) मोंगा का तेल ५० ग्राम, (४) बबूना तेल ५० ग्राम, (५) सरसों का तेल १०० ग्राम, (६) सिन्दूर १० ग्राम, (७) कपूर की टिकिया चार, (८) तारपीन का तेल १०० ग्राम (६) स्प्रिट २०० ग्राम।

नोट—(कपूर पहिले स्प्रिट म घोल, उसके बाद उसमें तारपीन का तेल डाल दें।) फिर ७ ८, ६ मिली दवा म उपरोक्त सब तेल व सिन्दूर मिला देवें। मिश्रण को शीशी मे डाल लें तथा नसपाड की जगह पर इसकी मालिश प्रतिदिन दो बार तीन-चार दिन तक करें। इस मालिश के बाद सिकाई आदि न करे।

पहचान—जिस पैर मे नासवान हो, उस पर पोतनी मिट्टी का लेप करें, जिस जगह नमपाड होगी वह स्थान देर में सूखेगा अर्थात् और स्थान सूख जावेगा, नसपाड की जगह गीली रहेगी।

६५—पैर में फाली लगना

औषधी—(१) सीरा २५० ग्राम (२) सुहागा ३० ग्राम, (३) नमक देशी ५० ग्राम (४) सिन्दूर २० ग्राम, (५) भाग ३० ग्राम।

इन सबको एक जगह सीरे में पकाकर, फाली लगे स्थान को नमक के पानी से धोकर अच्छा तो यह रहे कि जब दवा पकावें तो साथ ही रुई का टुकडा बर्तन मे डालकर अलट पलट करते रहें, जब सारी दवा रुई म चिपट जाय तो कुछ ठडा करके, निवाई-निवाई, फाली लगी जगह पर यह रुई रख

कर पट्टी बाध दें, पट्टी करीब चार दिन रहनी चाहिए, फिर दूसरी पट्टी बाध दें।

६६—घाव

शरीर म कही भी घाव कैसे भी हो जाता है।

औषधी—(१) —साईकिल टायर का दो फुट लम्बा टुकडा लेकर उसकी छाई बना लो, १०० ग्राम सरसो का तेल, १० ग्राम नीम की कोपल १० ग्राम सिन्दूर इन सबको तेल मे घोट लें, जब मरहम बन जाए तो घाव की जगह पर, घाव को नीम के पत्ते के पके पानी मे साफ कर दिन मे दो बार लगावें, जब तक ठीक हो, लगाते रहे।

औषधी २—(१) राल कच्ची १० ग्राम (२) कच्चा बेरजा १० ग्राम (३) पपडिया तैया १० ग्राम (४) सिन्दूर २० ग्राम (५) कपूर दो टिकिया (६) मुर्दासिह (कपडछन करके) २० ग्राम (७) सरसो का तेल ५० ग्राम इसको तेल मे घोटकर घाव के स्थान पर साफ करके दिन मे दो बार जब तक ठीक हो, लगावें।

६७—घाव में कीडे पडना

औषधी —(१) आडू के पत्तो का अर्क २० ग्राम
(२) कपूर डली का ५ ग्राम
(३) त्रिपर्ण का तेल २० ग्राम

इन तीना दवाओ को एक साथ घोटकर रुई मे भिगोकर घाव मे लगा दें।

पशु ठीक है, परन्तु चारा कम खाता है।

औषधी —(१) गुलाबी फटकी एक किलो। (२) नमक देशी ढाई किलो। (३) भाँग २५० ग्राम। (४) गुड आधा किलो। (५) अजवायन २५० ग्राम।

इन सबको एक साथ पाच किलो छाय मे पकाओ, जब हलवा सा रह जाय, उसे एक मिट्टी के बर्तन मे रख लो, इस चटनी को ५० ग्राम दूसरे-तीसरे दिन चटा दें, अथवा छाय मे घोलकर नाल से दे दें।

६८—सींग टूटना

उसी समय, या तुरन्त ब्याई भस का पहले खीस मे एक फौआ भिगोकर टूटे हुए सीग पर चिपटा दें, टूटा सीग, जुड जायेगा, फौआ ठीक करने पर ही हटेगा।

दूसरी औषधी २—औरतो के सिर के बाल, ईंट का खोरा, सरसो का तेल टूटे सीग पर डालकर इन्हें चिपटा दें, रोज तेल गर्म करके प्रतिदिन उस पर डालते रहें।

अगर घाव रह जाय तो, मुर्दासिंह कपडछन करके, सरसों के तेल मे मिला कर घाव पर लगायें।

६९—बैल के कन्धे में चादी हो जाना

जिस स्थान पर (कन्धे) जुआ रक्खा जाता है, वहां गोल रुपये जितने स्थान पर घाव हो जाता है वह कभी रुक जाता है, कभी खुल जाता है। उसे कन्धे मे चादी का रोग कहा जाता है।

औषधी १—मुर्दासिंह को कपडछन करके सरसों के तेल मे घोटकर, जब जोडें तब लगायें, जब हल से छोडें तब लगायें।

दूसरी औषधी २—गाढे का कपडा २५ सेंटीमीटर लो, इसको आखे के दूध मे अच्छी तरह भिगोकर छाया मे सुखा दें, तीन दिन बाद फिर इसी कपडे को आखे के दूध मे भिगोकर धूप में सुखा दें जब खूब सूख जाये, इसको जलाकर राख कर दो।

(१) जवा मिर्च २० ग्राम। (२) कपूर दो टिकिया।

५० ग्राम राख तथा इन दोनो दवाओ को सरसों के तेल मे पकाओ, जब मिश्र काली पड जाय नीचे उतार कर घोट लो। यह मरहम सा बन जाएगा, इसको घाव पर हल में जोडने से पहिले तथा हल से छोडने के पश्चात लगावें।

७०—बत्तीसा

यह औषधी बत्तीस पेड़ों की बक्कली की छाल से बनती है। यह पशु जोर पर पशु के हाजमे की खराबी या भैंस-गाय का आपा बिगडने पर, पशु

मैल मे आ जाता है, इन सब को ठीक करने की औषधी है।

किन्ही बत्तीस प्रकार के वृक्षो की छाल आधा-आधा किलो लो। इन सबकी कुट्टी काटकर ३० किलो पानी मे किसी बडे बर्तन नाद आदि मे भिगो दें उसमे तीन-चार दिन भीगा रहने दें। फिर किसी बडे बर्तन मे इतना पकावें कि ३० किलो पानी का २० किलो पानी रह जाय। उसे उतार कर छान लो, उस बचे पानी मे डेढ किलो काला नमक, २५० ग्राम अजवायन, २५० ग्राम सौंफ, १५० ग्राम तई का नोसादर, २५० ग्राम छोटी हैड, १० ग्रा० हींग लहसनिया, इन सबको बारीक पीसकर उसी पानी मे मिला दें।

हाजमे के लिए पशु को दो-तीन दिन मे आधा किलो पानी एक बार, बीमार पशु को आधा किलो, रोजना, चारा खाने के बाद मे दें।

७१— कधे फूलने पर

औषधी १—(१) सीरा १०० ग्राम। (२) चूना दीवार का ५० ग्राम (३) हल्दी अम्बा १० ग्राम (४) नमक देशी २० ग्राम (५) रेह ५० ग्राम

इन सबको ५० ग्राम सरसो के तेल मे पकाकर, जब मरहम सा बन जाय, उसके कधे पर लेप कर दो, इसी लेप के साथ, २५० ग्राम सरसों का तेल १०० ग्राम पानी मे घोटकर दोनो नथनो के द्वारा पिला दो।

औषधी २—(१) आख धतूरे की डोडी एक। (२) अम्बा हल्दी ५० ग्राम।

इन दोनों को एक जगह पीसकर सूजे हुए कधे पर लेप करें।

७२—पशु का नम जाना

जिस पशु के कधे की दोनों ओर की नसें अकड जाती हैं। जिससे पशु की गदन नही हिलती। न वह चारा खा सकता है, न पानी पी सकता है। अर्थात् गर्दन ऊपर-नीचे नही कर सकता।

औषधी —(१) दस किलो ताजा गोबर लेकर उसके कधे पर नसों मे दूर से फेंककर मारें, जब गोबर खत्म हो जाय तब दस किलो पानी में आधा किलो बिसाडु के पत्ते, आधा किलो गुम्मा, २५० ग्राम सादा नमक, इनको पानी में

पका लें, जब पानी आठ किलो रह जाय, नीचे उतारकर, नवाये-नवाये पानी में उसमें कंधे को झारें।

औषधी —(२) चार-पाँच उपले लो, उनके दो दो टुकड़े करके उनके अगार बना लें, दो किलो छाछ लो, उसमें २५० ग्राम नमक डाल दो, जब वे उपले के टुकड़े, अगार हो जायें, उनमें से एक लें और डालते ही एकदम निकाल लो, उसको किसी बोरी के टुकड़े में लपेट कर कंधे की सिकाई करें, इसी प्रकार सब अगारों से सिकाई करें, अगारे समाप्त होने पर जो छाछ बचे, उससे कंधा झार दें।

७३—पशु की पूछ कटना या गलना

जहाँ से पूछ गल गई है, उसके ऊपर से पूछ को काट दें। सरसों के खदकते तेल में पूछ का सिरा दें दें, जब खून निकलना बन्द हो जाय, तब पूछ को तेल में से निकालकर गर्म गर्म भूबल (राख) में बांध दें।

७४—बिसवा

गाय या भैंस के ब्याने के पश्चात् थनों पर सूजन आ जाती है। बाल पर सूड तक झलका, यानि सोजन सी आ जाती है। कभी-कभी ज्यादा सोजन आने पर थन फट भी जाते हैं।

औषधी १—(१) हल्दी १० ग्राम (२) अजवायन १० ग्राम (३) खांड १० ग्राम।

इन तीनों को एक जगह मिलाकर, एक अगारे पर थोड़ी-थोड़ी डालकर, जो धुआ उठे, उससे उस स्थान का सेक करें। फिर २० ग्राम सुहागा लेकर उसको तवे पर भून लें, फिर उसे योनी घी को पानी में पन्द्रह-बीस बार धोकर सुहागा उसमें मिलाकर मरहम बना लें। इसका फटे थन पर, दूध निकालने के बाद लेप कर दें। जब तक ठीक हो लेप करते रहें।

औषधी २—२५० ग्राम सरसों का तेल किसी बर्तन में पकायें। उसमें करीब ५० ग्राम मोम पकते तेल में डाल दें। अगर मोम न मिले तो मोम की बत्ती डाल दें। जब वह सब पक जाये, तो किसी चौड़े बर्तन में एक किलो

पानी लें खोलते तेल को उस पानी मे एकदम पलट दें। उस पानी के ऊपर मोम तेल दोनो का चक्कर सा जम जायेगा उस चक्के को किसी बर्तन मे रख कर उसमे १० ग्राम मुर्दासिंह कपडछन करके उसमें घोट दें। दूध निकालने के बाद उस मरहम को थन पर लगायें।

किसी मनुष्य के पैर, पकते हो, बिवाइ हो, वे भी इसे प्रयोग कर सक्ते हैं।

पिलाने की औषधी —चिरचिटे के पत्ते ५० ग्राम, काली मिर्च ३ ग्राम एक साथ पीसकर, ताजे पानी मे मिलाकर कई बार पिलाए, अर्थात् जब पशु पानी पिये, उसको पानी की बाल्टी मे मिला दें।

७५—थन रुकने की दवा

जब पशु के किसी कारण से थन मे से दूध निकलना बन्द हो जाता है और मवाद या खून आने लगता है।

औषधी —आधा किलो पानी मे २५ ग्राम नमक डालकर गर्म करें, पानी को एक गिलास मे करके निवाये-निवाये पानी मे, उस थन को दे दें। काफी देर पश्चात पहिले उसका दूध आदि या जो कुछ भी मवाद या खून निकले उसे निकालें। उसके पश्चात् अमृत बूटी २० ग्राम को ५० ग्राम सरसों के तेल मे पका लें, जब अमृत बूटी की राख हो जाए तो तेल को छानकर शीशी मे भर लें। इस तेल की मालिश उस थन पर करें। अगर अमृत बूटी न मिले तो, रिन स्लोएन्स बाम, की मालिश थन पर करें।

पिलाने की दवा —२५० ग्राम सरसों का तेल, १०० ग्राम नींबू का अर्क। (यह एक खुराक है।)

इन दोनों को एक जगह मिलाकर रोजाना एक खुराक तीन चार दिन तक दें।

७६—पशु के शरीर पर दाफड पड जाते हैं, उनमे कीडा पड जाता है।

पीने की दवा—चिरायता ५०० ग्राम, अजवायन कुरेसानी २५० ग्राम,

अकरकरा ५० ग्राम, नमक मनिहारी १० ग्राम, काला नमक १०० ग्राम, काली मिर्च १० ग्राम।

इनको पाच किलो पानी मे पका लें, ५०० ग्राम पानी सुबह ५०० ग्राम शाम का दें, शाम को चारा खाने के बाद २५० ग्राम मेथे का चून भिगोकर खिलावें।

७७—जू मारने की औषधि

पशु के शरीर म जू पड जाने पर—

हल्दी देशी २० ग्राम, कच्चा दूध २५० ग्राम, सरसो का तेल ५० ग्राम।

इन तीनों को एक जगह मिलाकर पशु की मालिश करें, तीन-चार दिन नहलाए नही। दिन म एक मेथी का चून ५०० ग्राम खिलायें तो और भी अच्छा है। देशी घी गर्म करके मालिश भी जू मार देती है।

७८—ताकत की औषधी

राई १०० ग्राम, सोया १०० ग्राम, सौंफ १०० ग्राम, धनिया ५० ग्राम, हालो १०० ग्राम, अजवायन कुरेशानी १०० ग्राम, अजवायन देशी ५० ग्राम, वाव भडग ५० ग्राम, छोटी हैड ५० ग्राम, सुहागा ५० ग्राम, नौसादर डले का ५० ग्राम, नौसादर तई का ५० ग्राम, अम्बा हल्दी ५० ग्राम, समन्दर झाग ५० ग्राम, लोटा सज्जी ५० ग्राम, अजमोद ५० ग्राम, हींग लहसनिया २० ग्राम, नमक मनिहारी ५० ग्राम, नमक खारी पेला ५० ग्राम, नमक साल्ट ५० ग्राम, काला नमक १०० ग्राम, फटकी सफेद ५० ग्राम, फटकी गुलाबी ५० ग्राम थैली का नमक पिसा हुआ २०० ग्राम, हल्दी देसी पिसी हुई १०० ग्राम, खाने का सोडा ५० ग्राम, भाग ५० ग्राम, गुड २५० ग्राम।

थैली का नमक, हल्दी देशी, खाने का सोडा, इन तीन दवाओं को एक साथ पीसकर अलग रख लो गुड भी अलग रखो। बाकी सब दवायें एक साथ कूटकर आठ किलो छाछ में पकाओ। जब भी उफान आये, तीनों दवाओं के चूर्ण में से २५ ग्राम कढ़ाई मे फेंक दो, जब भी उफान आए ऐसे ही करते रहो। फिर उसम गुड डाल दो, जब कढाई मे से छींटे फुदकने बन्द हो जायें और हलवा सा बन जाये उसे नीचे उतार लो, उस हलवे को एक मिट्टा के

बर्तन मे रख लो। इसमे से प्रतिदिन ५० ग्राम हलवा, एक किलो दही, २५० ग्राम चने के चून म मिलाकर एक बार पशु को खिला दो।

यह औषधि जो पशु जोर पर आया हो, मैल मे आया हो तथा ताकत के लिए लाभदायक है।

५८—पेशाब मे खून आना

२५० ग्राम भग लेकर पानी मे खूब उबालो, १½ किलो पानी का ½ किलो पानी रह जाये तो उतार लो, भांग खूब मलकर मुतान का रास्ता छोड कर उसे बाध लो। बचा पानी आधा किलो म १२५ ग्राम गुड मिलाकर पिला दो। जब तक सुजाक सही न हो, यह प्रक्रिया रोजाना जारी रहे।

५९—पशु को सुजाक होना

पोदीने का अर्क १२५ ग्राम, प्याज का अर्क ५० ग्राम, घी देशी १५० ग्राम। (यह एक खुराक है।)

इन तीनो का मिलाकर दिन म दो बार देवें। दो तीन दिन तक देवें।

६०—पशु के पेट मे ही बच्चा मर जाय और निकल न रहा हो

औषधि (१) सोठ १०० ग्राम सिरका १०० ग्राम, चिरचिटे की जड १०० ग्राम, गुड २५० ग्राम।

सोठ, चिरचिरे की जड, गुड एक साथ कूटकर डेढ किलो पानी मे पकावें, जब एक किलो पानी रह जाये, नीचे उतार कर १२५ ग्राम सिरका डाल दें और यह दवा पशु को दे दें।

यदि इस दवा से बच्छा बाहर न आये तो निम्न दवा दें—

तालमखाना ५०० ग्राम, गुड ५०० ग्राम।

इन दोनो को डेढ किलो पानी मे पकावें। जब एक किलो रह जाए, नीचे उतारकर पशु को देवें, बच्चा अवश्य ही आ जायेगा।

तालमखाने की पहचान—यह पौधा पुराने नाले, तालाब के किनारे उगता है। इस पर सफेद फूल आता है और फूल के ऊपर काटे होते हैं।

जिसके चारों पैर पचाले (सफेद), माथे पर खुला पटटा, निचला होंठ सफेद, वह बढिया, स्वस्थ घोडा होता है।

जिस घोड़े के तीन पैर पचाले, दाहिना पैर अगला हमरग, माथे पर पान, वह बहुत भाग्यशाली घोडा होता है जिसके गदन के नीचे लम्बी देवमन होगी (लम्बी भोरी) वह शुभ होगा।

अश्व (घोडा) की औषधिया

(अ) शुभ लक्षण

जिसके पैर मे पदम हो वह बेशकीमती घोडा होता है (पदम—पैर के गट्टे के नीचे सुम तक मोर के चन्दे जसा गोल निशान होता है, जो शीशे की तरह झिलमिल चमकता है।) जिस घोडे की पूछ में ताद हो, जिस घर मे रहेगा, वह घर धनवान बनेगा।

जिस घोड़े के पैर के नीचे गंगापाठ (भोरी) जो तग के दोनो ओर बाहर निकल जाये, वह घोडा शुभ होता है।

जिसके माथे पर दो भोंरी ऊपर नीचे हों, उसे दाघड कहते हैं, शुभ होती हैं। जिसके गले का कठमन हो (गले पर दो भोंरी), शुभ होती हैं। छोटी पीठ, छोटे कान, लम्बी पूछ, मोटी रान वाला घाडा मजबूत और सवारी के लिए अच्छा होता है। उसकी उम्र अधिक हाती है।

(आ) अशुभ लक्षण

(१) सबसे बडा ऐब, सीगन (माथे पर दो भोंरी बराबर मे),

(२) अकरम, माथे पर टीका इतना छोटा हो कि हाथ के अगूठे के नीचे दब जाए,

(३) हृदावल (छाती के नीचे गोल भोंरी)

(४) चतर भग, (वह भोंरी जो सवार के नितम्बों के नीचे आ जाये। ऐसे घोडे पर चढ़ने से घोडे व सवार दोनों की मति भग हो जाती है।

(५) सांपन काल से लेकर गाड के पीछे तक लम्बी भोंरी, जिसका मुह सवार की तरफ हो,

(६) गोम गोल भोंरी जो तग के नीचे दब जाए,

(७) जिस घोड़े के पुट्ठो पर कई रग के टीके (जाल) हों,

(८) कुलच, जिसके दोनों पिछले पैरों के घुटने आपस मे लगें,

(९) अजल, जिसके तीन पैर हमरग और पिछला एक पैर दूसरे रग का हो, वह चोरी जरूर जाता है।

रग—सबसे अच्छा कुमैत रग (काला स्याह), सबसे जानदार घोडा मुस्का (हलका काला), अवलक (लाल सफेद) गजरा चम्मा चूमरा, लाल, बादामी आदि।

उम्र—आयु लगभग ५० वष होती है।

ऊचाई (माप)—टांग का चौगुना (घुटने तक), कान का नौ गुना, चौदह अगुन टाक वाला, छोटा घोडा उसकी माप चौदह—दो सोलह अगुल टाक वाला, अरबी घोडा, उसकी माप चौदह—ढाई अठारह अगुल टांक वाला विलायती नाप चौदह तीन अठारह अगुल टाग वाला वेलर।

चार महीने घुआ घानी, चार महीने प्यावे पानी।
चार महीने सूखी घास, घोडा जीवे बरस पचास॥
घढे रोज भगावे घोडा, चालीस बरस सवारी दे घोडा॥

आयु पहचान—जब घोडा दो दात हो जावे, उम्र $२\frac{1}{2}$ वष।

चार दात $३\frac{1}{2}$ वष।

दांत भरना, पजार आना $४\frac{1}{2}$ वष से ६ वष।

दातो और जाडों के बीच में कीले निकलते हैं, जिन्हे नेस कहते हैं। ७ वष की उम्र मे निकलते हैं। १२ वष की उम्र तक स्वय समाप्त हो जाते हैं।

दाता पर अन्दर की ओर स्याही आ जाती है। १८ वष की आयु तक वह स्याही रहती है। फिर सफेद हो जाते हैं।

नाथुओ मे दो सुराख खुल जाते हैं। १८ वष से २४ वष तक।

इसके बाद उम्र की जाच आंखो से होती है। बच्चो की आख मे मनुष्य का पूरा शरीर दिखाई देता है। ३४ वष की उम्र के बाद आधा (धड से ऊपर का) हिस्सा दिखाई देता है। ३२ वष के पश्चात उसकी आख मे गले से ऊपर का हिस्सा दिखाई देता है। ४० वर्ष के बाद उसकी आख मे कुछ दिखाई नही देता।

घोड़ों की दवाई

१ बजर हडडी

बजर हड्डी घोडे के घुटने की पाली मे होती है। इसमे नली मे गलाव शुरू हो जाता है, जिससे वह लगडा हो जाता है।

औषधि—सिर के बाल १० ग्राम दो नीबुओं का गूदा, अण्डा एक।

इन तीनो को बारीक पीसकर, टिकिया बनाकर घुटन पर कम से कम तीन पट्टी बाधे, प्रति तीसरे दिन।

२—बेर हडडी

गटटे और घुटने के बीच के बराबर वाले हिस्से मे नली फूल जाती है। उससे भी घोड़ा लग कर जाता है।

औषधि—ठिकरा अरण्डी के तेल मे भिगोकर उभरी हुई हड्डी पर कस कर बाधें व उसे आठ दिन तक बधा रहने दें। आठ दिन के बाद पटटी खोल कर अम्बा हल्दी कपड छान करके नीबू काटकर उसमे सींक से भर दें, उभरी हुई हड्डी पर अरण्डी का तेल लगाकर नीबू हड्डी पर रखकर पटटी से बाध दें। तीन दिन की एक पटटी और कम से कम तीन पटटी करें।

३—कुराली

इसमे सुम के अन्दर गांठ पड जाती है। उसमे पानी भरा रहता है। इससे घोडे को दद होता है, वह लगड़ाता है। जहां वह सुम टेकता है, उससे पानी टपकता रहता है।

औषधि—सुम को साफ करें और मिटटी का तेल दो तीन बार दिन मे डालें, ठीक हो जायेगा।

४—हड्डा मोचरा

सुम के पास से गट्टा फूल जाता है, जिससे दद होता है।

औषधि—(१) पुराना गुड २० ग्राम, (२) गुग्गल २० ग्राम, (३) राई २० ग्राम, (४) रुई २० ग्राम।

इन सबको इमामदस्ते म खूब कूट लें। जब उसकी टिकिया सी बन जाये, और रुई पर निवाई-सी करके बांध दें। पट्टी आठ दिन तक बधी रहे

पहले ५० ग्राम तम्बाकू का सूखा चूरा आधा किलो
घर दे दें। यदि इससे उल्टी न हो तो दूसरी औषधि—

गाय का पेशाब (बिना ब्याई) एक किलो, घी गवार का
लाहौरी नमक ५० ग्राम, नौसादर तई का ५० ग्राम।

अच्छा तो यह हो कि इसकी शराब खींच ली जाये (यह
को १० बूंद की मात्रा गर्म पानी मे देने पर उल्टी अवश्य होग
बूंद ठण्डे पानी मे मिलाकर रोज दें तो पेट ठीक हो
की उल्टी कराने के लिए १० ग्राम शराब आधा किलो गर्म

या शराब न खींची जा सके तो इन चारों औषधियों
उबाल लें और तीन घंटे के अन्तर से चार खुराक दें। जब
अगली खुराक न दें।

लीद न करना—इसमे घोड़ा लीद करनी बन्द कर देता
होता है। हाथ पैर पीटने लगता है।

भैंस का एक किलो दूध, उसमे ५० ग्राम कलमी शोरा,
शक्कर, दूध म आधा किलो पानी मिलाओ, कलमी शोरा व ग्र
पकाओ, जब पानी फुक जाय तब उतार दो। उसमे २५० ग्राम
६ ग्राम कपूर डालकर उसे ढक दें, जब तिवाया-सा रहे,
हिलायें और ठंडा होने पर बोतल से घोड़े को पिला दें। एक
बार तीन दिन तक दवें। यदि इससे भी बन्द न टूटे तो दूसरी

(१) एक टिक्की सनलाइट साबुन, (२) आधा किलो सी
पानी मे पकावें। जब १ किलो पानी रह जाये और जब पानी
२० ग्राम कबीला डालकर, दे दें।

८—पेशाब बन्द

इसमे पेशाब आना बन्द हो जाता है, बेतुका दर्द होता है।
चढ़ावें। नीम की सींक लेकर उसस थोड़ी सी रुई लपेट लें रुई
पीसकर रगड़ लें और उसे घोड़ी के मांके म चढ़ा दें तथा
फिर भी पेशाब न करे तो आधा किलो बकरी या

एक किलो परात का धोवन उबालकर जब आधा किलो रह जाये तो दूध मे मिलादें और जब खूब ठण्डा हो जाय तो उसमे ५० ग्राम कलमी शोरा और आधा किलो खाड मिलावें और बोतल से दे दें। इसकी दो दिन मे एक खुराक रोज दें, अगर बद फिर भी न टूटे—

आधा किलो चावल का माड ठडा करके १२५ ग्राम घी मे छौंक दें। फिर ठडा करके ५० ग्राम कलमी शोरा डाल दें। एक दिन मे एक बार या सुबह-शाम दो बार दे दें।

९—बदहजमी

यह मसाला घोडे को बारह महीने देना चाहिए। इससे चारा अच्छा खायेगा, हाजमा ठीक रहेगा, पैरो पर रस नही उत्तरेगा।

औषधि - राई २५० ग्राम, सोया १२५ ग्राम। हालो १२५ ग्राम, अजमोद १२५ ग्राम, कुरेशानी अजवायन १०० ग्राम, छोटी हैड १२५ ग्राम। देशी हल्दी ५० ग्राम समन्दर झाग ५० ग्राम। वायविडग ५० ग्राम, काला नमक २५० ग्राम। नमक मनियारी १०० ग्राम, नमक खारी पेला ५० ग्राम, नमक लाहोरी ५० ग्राम, नमक सुलेमानी २० ग्राम। हडिया का नौसादर १०० ग्राम। सुहागे की खील १०० ग्राम। काली मिच ५० ग्राम।

इन सबको एक साथ कूटकर छलनी मे छान लें और आधा किलो मेथी का आटा मिला दो। इसकी ५० ग्राम की एक खुराक लो। ५० ग्राम पानी मे २० ग्राम गुड घोल लें। उसमे ५० ग्राम दवाई मिलाकर शाम को मिटटी के बतन मे रख दें। सुबह उसकी लाई बनाकर घोडे को खिलादें।

१०-चैंट की दवा

आंवला सार गन्धक १० ग्राम। दही ५० ग्राम। नीम की कोपल १० ग्राम। अरडी का तेल ६ ग्राम।

इन सबको एक साथ मिलाकर मल्हम बना लें। सुबह-शाम दोनों समय चेंट पर लगायें।

११—पित्त की दवा

घोड़े क पित्त उछल कर सारे शरीर पर दाफड़ पड़ जाते हैं। उसमें खुजली लगती है। घोडा उसे मुह से फाड़ने लगता है।

औषधि—वासे के पत्ते—एक किलो कूटकर १० किलो पानी में पकाओ। जब ७½ किलो पानी रह जाये उसे उतारकर छान लो, उसमें ५० ग्राम काली मिर्च, आधा किलो शहद मिला दो, एक बोतल चिरायते का अर्क उसी में मिला दो। इसकी खुराक २५० ग्राम वह पानी सुबह व २५ ग्राम शाम को दें। इसके अतिरिक्त सादे पानी में १०० ग्राम फिनाइल का तेल डालकर उससे घोड़े को नहलायें।



भारत मे पशुओं का महत्व

यो तो ससार के प्रत्यक देश मे पशुओ का महत्त्वपूर्ण स्थान है और वे वहां की आर्थिक, व्यावसायिक और प्रशासनिक व्यवस्थाओ मे महत्त्वपूण भूमिका अदा करते हैं, किन्तु भारत जैसे विकासशील और निधन देश मे तो पशुओ का और भी अधिक महत्त्व है। हमारे देश के किसान अत्यन्त निधन हैं। शताब्दियो की परतत्रता ने उनका इतना शोषण किया है कि वे अपना खून पसीना बहा कर दूसरो को नाना प्रकार के व्यजन भर पेट खिलाते रहे हैं, किन्तु स्वय आधे पेट भूखे रह कर जीवन व्यतीत करते रहे हैं। उनमे आज इतनी सामथ्य नही कि वे ट्रैक्टर और ट्रक जैसे बहुमूल्य यत्र खरीद कर कृषि व्यवसाय करें और न ही उनके पास इतनी अधिक भूमि होती है कि वे कीमती मशीनें उनके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकें। उन्हें अपने छोटे-छोटे खेतो मे पशुओ से ही खेती करनी पडती है। उन्हें और उनके बच्चो को दूध घी नही, तो कम से कम छाछ तो पशुओ के माध्यम से ही प्राप्त होती है। दूसरे पशुओ का सहयोग उन्हें जितने कम मूल्य तथा व्यय पर प्राप्त होता है, उतने कम मूल्य तथा व्यय पर मशीनों का सहयोग प्राप्त नही हो सकता। मशीनें तो केवल बडे-बडे जमीदारो के लिए उपयोगी हो सकती हैं। इन सब बातो पर गहराई से विचार करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भारत मे पशुओं का न केवल किसानो की व्यक्तिगत सम्पत्ति के रूप म अपितु राष्ट्रीय सम्पत्ति और विकास साधन के रूप मे भी विशेष महत्त्व है। कृषि के लिए उपयोगी पशुओ का बैल, भैंसे आदि के अतिरिक्त घोडे, ऊट, खच्चर, हाथी आदि पशुओ का एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने जाने व माल ढोने के लिए विशेष महत्त्व व उपयोगिता है। गाय, भैंस, बकरी आदि पशु दूध प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। भेडें ऊन प्राप्त करने की प्रमुख साधन हैं। ऊन तथा ऊनी कपडे जहा देश के करोडों लोगों की सर्दी से रक्षा करने का साधन हैं वहां निर्यात द्वारा विदेशी मुद्रा

कमाने और देश को समृद्ध करने मे मुख्य भूमिका अदा करते हैं। भेडों का महत्त्व सर्वविदित है । कुत्ते जहाँ घरो, खेतो और खलिहानो की चोरों से रक्षा करते हैं, वहाँ अपनी अद्भुत घ्राण शक्ति (सूघने की शक्ति) द्वारा सेना तथा पुलिस जैसी महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक व सुरक्षात्मक सेवाओ मे अपना स्थान व उपयोगिता रखते हैं । तात्पर्य यह है कि देश मे पशुओ का अत्यधिक महत्त्व है और रहेगा ।

पशु-पालन

एक सुदृढ़ व्यावसायिक व आर्थिक आधार

बडे बडे उन्नत देशो मे भी पशु पालन एक सुदढ आर्थिक व व्यावसायिक आधार बन गया है, जिनके द्वारा लाखो स्त्री पुरुषो और बच्चो का भरण पोषण हो रहा है । यही कारण है कि अन्य उद्योगो व व्यवसायो की भाँति यह भी एक स्वतन्त्र व्यवसाय बन चुका है, जो समूचे राष्ट्र की उन्नति व समृद्धि मे सहायक होता है । उदाहरणार्थ दुधारू पशुओ को लेकर बडे बडे पशु पालन केन्द्र खोले गए हैं, जिनमे लाखो गायो, भैसो और बकरियों का पालन वैज्ञानिक ढग से किया जाता है । बडी बडी वैज्ञानिक प्रयोगशालाओ मे रात दिन ऐसी-ऐसी खोजें होती रहती हैं, जिनसे पशुओ की नस्ल अधिक हृष्ट-पुष्ट तथा स्वस्थ हो सके और उनसे दुग्ध उत्पादन मे भी अधिक से अधिक बढोत्तरी हो सके । हमारे देश मे भी सरकारी तथा गैर-सरकारी अथवा सहकारी रूप से ऐसे अनेक पशु पालन केन्द्रो का सचालन हो रहा है, जहाँ देश के कोने-कोने से विभिन्न जातियो के दुधारू पशु लाकर रखे जाते हैं और उन पर वैज्ञानिक प्रयोग किए जाते हैं। परिणामस्वरूप एक एक पशु से दूध प्राप्त होने के औसत काल मे (जो वर्ष के ३६५ दिन मे लगभग २७५ दिन या कुछ न्यूनाधिक रहता है) लगभग साढ़े छह हजार पौण्ड दूध का औसत उत्पादन रिकार्ड प्राप्त किया गया है । देश के डेरी फार्मों मे निम्नलिखित प्रमुख फर्म है —

१—सरकारी डेरी फार्म, तेलनखेडी नागपुर (मध्य प्रदेश) ।

२—सरकारी मिलिटरी डेरी फार्म फिरोजपुर ।

३—भारतीय डेयरी अनुसधानशाला, बगलौर ।

४—पशु धन अनुसंधान केंद्र, हिसार (हरयाणा)।

५—एग्रीकल्चरल कालेज डेरी, किरकी, पूना (महाराष्ट्र)

६—सरकारी गौ पशु फाम, पटना (बिहार)।

७—सरकारी परीक्षण फाम, कांके, रांची (बिहार)।

८—सरकारी गौ पशु फाम, झांसी (उत्तर प्रदेश)।

९—सरकारी कृषि स्टेशन, सूरत (गुजरात)।

१०—भारतीय कृषि अनुसंधानशाला, नई दिल्ली आदि ......

इनके अतिरिक्त अनेक अन्य केन्द्र भी हैं, जो सहकारी रूप से अथवा धर्मार्थ गोशालाओं के रूप में चल रहे हैं। बम्बई की दुग्ध योजना के अधीन भी एक बहुत विशाल पशु पालन केन्द्र का संचालन होता है। वहाँ अनेक जातियों के पशुओं का दुग्ध उत्पादन बढाने के विभिन्न वैज्ञानिक उपाय खोजे तथा प्रयोग किये जाते हैं।

दूध निकलने के पश्चात इन्हीं केन्द्रों में स्थापित अथवा अन्य स्थानों में स्थापित बडी-बडी मशीनों द्वारा मक्खन तथा घी निकालकर तथा दूध को वैज्ञानिक ढंग से सुखाकर दुग्ध चूर्ण तयार किया जाता है, जो देश के कोने-कोने में आपको उपलब्ध हो सकता है। दिल्ली दुग्ध योजना के अन्तर्गत भी ऐसे ही प्लान्ट लगे हुए हैं तथा और लगाए जा रहे हैं। 'अमुल' का मक्खन तथा शुष्क दुग्ध चूर्ण तो देश के प्रत्येक भाग में ही नहीं, विदेशों में भी अपनी उच्च कोटि की वैज्ञानिक उत्पादकता के कारण विशेष ख्याति व लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। यह सहकारी संस्थान है, जो थोडे-से समय में ही बहुत उन्नति कर गया है।

इस प्रकार आपने देखा कि थोडे से पशुओं से प्रारम्भ किया गया केन्द्र शनैः शनैः कितने बडे संस्थान का रूप धारण कर गया, जिसकी दैनिक बिक्री और लाभ लाखों रुपए प्रतिदिन तक जा पहुचे। यह निर्विवाद सत्य है कि पशु पालन भी एक सुदृढ व्यावसायिक व आर्थिक आधार है।

थोडी-सी पूंजी से आप थोडे से पशुओं को लेकर व्यवसाय शुरू करें। धीरे-धीरे पशुओं की संख्या उन्हीं से पैदा होकर प्रति वर्ष बढती जायगी और उसी

तरह आपकी आय व काम भी बढ़ता जायगा। कारखाने मे यदि एक मशीन लगाए, तो एक ही मशीन रहेगी, जब तक कि आप दूसरी मशीन और न लगाए। किन्तु पशु पालन मे एक गाय या भैस से हो बिना खरीदे ४ ५ वष मे आपके पास ४ ५ गायें या भसें या बल भैसे आदि हो जायेंगे और आपकी सम्पत्ति स्वत बढती चली जायगी। फिर उन ४ ५ स और ४ वष म १५ १६ हो जायेंगी और अगले ४-५ वर्षों म ३०-४० हागी। भला सोचिए कि इससे श्रेष्ठ व्यवसाय और कौन सा होगा।

इसी प्रकार भेड पालन केन्द्र, मुर्गी पालन केन्द्र, मत्स्य पालन केन्द्र आदि व्यवसाय भी बडे काम क हैं और उनमे भी आपकी सम्पत्ति स्वत बढती रहती है। हाँ, आवश्यकता इस बात की है कि उनकी देख रेख सही ढग से हो। यदि आपकी असावधानी के कारण इन पशु पालन केन्द्रो मे छूत की कोई भयकर बीमारी फैल जाती है और आपको इसकी रोकथाम क बारे म जानकारी नही, तो कुछ ही दिनो मे समस्त पशु मरकर आपकी आर्थिक व व्यावसायिक इमारत को ढहा देते हैं।

व्यावसायिक दृष्टिकोण से तथा आर्थिक लाभ को देखते हुए पशु पालन व्यवसाय का एक और भी महत्त्व है। वह यह कि पशुओ के मरने के पश्चात उनकी खाल, हड्डियाँ, खुर तथा सीग भी अच्छे मूल्यो पर बिकते हैं, जो पशु को खरीदन पर व्यय की गई राशि का लगभग आधा होता है। इस समय खाल तथा हड्डियाँ विश्व को निर्यात करने वाले देशो मे भारत का प्रमुख स्थान है। इस प्रकार व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय लाभ के दृष्टिकोण से यह व्यवसाय श्रेष्ठ है।

हमारे ग्रामीण भाइयो को कृषि के लिए, दुग्ध, घृत आदि पौष्टिक आहार के लिए तथा विशुद्ध लाभदायक व्यवसाय के लिए पशु पालन की तिहरी उपयोगिता तथा महत्त्व भली प्रकार समझ लेना चाहिए।

पशु-पालन एक आदिकालीन धार्मिक कर्त्तव्य

रामायण, महाभारत आदि धार्मिक ग्रन्थों को पढने या सुनन से आपको ˜ होगा कि प्राचीन काल से ही हमारे देश में पशुओ का विशेष कर

गो-वश को बहुत महत्त्व प्राप्त होता रहा। गौ को हमारे पूर्वजो ने माता का पद दिया है, क्योकि उसके दूध से ही हमारे देश के बच्चे पलते, बढे और होनहार बनते हैं। अन्य पशुओ यथा हाथी बैल, साड, घोडा आदि को बडे आदर भाव मे पाला जाता है। क्योकि पशु-पालन एक धार्मिक, सामाजिक तथा नैतिक कर्त्तव्य के रूप मे प्रतिष्ठित किया गया है। आप प्रश्न कर सकते हैं कि पशु पालन भला धार्मिक कृत्य कैसे हुआ ? विचार कीजिए—धर्म क्या है ? प्रत्येक वह कर्म, जिसमे अपने को व दूसरो को आत्मानन्द की प्राप्ति हो तथा अपना अथवा दूसरे का किसी भी प्रकार का अहित न होकर दोनो का सर्वथा हित सम्पन्न हो वही धर्म है। यह धर्म भावना जब कर्म मे ही नही, मन और वचन म भी पूरी तरह से समा जाती है, तो मनुष्य बहुत ऊचा उठ जाता है। खेद का विषय है कि आज के युग मे सच्ची धार्मिकता तो लुप्तप्राय होती जा रही है और शहरो म विशेष रूप स धर्म के नाम पर गुटबन्दी, विद्वेष, घृणा, स्वार्थ और दानवता का जो भीषण नृत्य हो रहा है, उसे देखकर भारत के प्राचीन महर्षियो, त्यागियो और धर्मपरायण शूर वीरो की आत्मा चीत्कार कर रही होगी।

पशु पालन करने से आप अपना ही नही, समूचे देश का और समूचे विश्व का पालन करते हैं, जिससे अपनी आत्मा को आनन्द व सुख प्राप्त होता है और दूसरो को भी। दूसरे किसी का भी इससे अहित नही होता। तो फिर इससे बडा धार्मिक कर्त्तव्य भला और कौन-सा होगा ?

मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हू कि पशु पालन एक व्यावसायिक राष्ट्रीय कर्त्तव्य ही नहीं, एक धार्मिक साधन भी है।

पालतू पशुओ की जातिया

यों तो ससार मे असख्य प्रकार के पशु पाये जाते हैं, किन्तु व्यावसायिक रूप से उपयोगी उन पशुओ को ही मनुष्य पालता है, जिनसे उनको किसी न किसी प्रकार से आर्थिक लाभ जीवन यापन में सुगमता अथवा सुरक्षा प्राप्त होती है। भारत में इस प्रकार के पशुओं में गाय, भैंस, बैल भसे, बकरे, बकरी, भेडें, ऊट, घोड़े, घोडियां, खच्चर, हाथी, गधे, सूअर, कुत्ते इत्यादि

तथा पक्षियों में मुर्गे, मुर्गियाँ, बत्तखें एव अन्य जन्तुओं म मछलियाँ, कछुए, मधुमक्खी, रेशम के कीड़े आदि का प्रमुख स्थान है, जो लाखो परिवारों की आय का साधन बने हुए हैं।

जब आप पशु पालन व्यवसाय मे अभिरुचि रखते हैं, तो उनकी विभिन्न जातियो, उनके गुणावगुण, उनके रख-रखाव के विषय मे समुचित जानकारी, उनके रोगो की रोक थाम व इलाज, उनके व्यावसायिक पहलुओं आदि के बारे मे पर्याप्त ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है।



सर्वश्रेष्ठ पशु

गाय

गाय हमारे देश का सवश्रेष्ठ तथा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पशु है। चिरकाल से हमारे देशवासी उसे माता के समान आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं और बडे आदर भाव से उसे पालते आए हैं। प्राचीनकाल मे जब भारत सभ्यता और सस्कृति के चरमोत्कष पर था, कोई घर ऐसा न था, जिसमे गाय न पलती हो, क्योंकि वे गाय के महत्त्व को भली भाति जानते थे। एक तो गाय का दूध सर्वोत्कृष्ट, सर्वाधिक पौष्टिक तत्त्वो से भरपूर, सुपाच्य एव स्वादिष्ट होता है और बच्चे, बूढे, स्त्री, पुरुष सभी के लिए अति गुणकारी होता है, दूसरे गाय ही बैलो को जन्म देती है, जिन पर हमारी कृषि तथा ग्रामीण जीवन की सचार व्यवस्था निभर थी। हमारे पूवज जानते थे कि कोई भी देश उन्नति के शिखर पर तभी पहुच सकता है जब वह खाद्यान्न के उत्पादन मे आत्मनिभर हो। साथ ही परिश्रमी, बलशाली, बुद्धिमान, धीर और गम्भीर नागरिक उत्पन्न करने के लिए उन्हे यथेष्ट पौष्टिक भोजन तथा भरण-पोषण प्राप्त हो। खाद्यान्न के लिए दूसरे देशो के आसरे रहने वाला देश कभी उन्नति नही कर सकता। इसीलिए वे लोग पशुपालन विशेषत गोपालन को अपने जीवन का श्रेष्ठ धम समझते थे।

खेद का विषय है कि आज के युग मे लोग गाय के उस महत्त्व को भूलकर पाश्चात्य जीवन की कृत्रिम चमक चमक मे भटक गए हैं। उसी का यह कुपरिणाम है कि जिस देश मे घी - दूध की नदिया बहती थी, उसी देश के नन्हे-नन्हे शिशु आज बूंद-बूद दूध के लिए तरसकर मर जाते हैं। जिस देश में भीम और अजु न जैसे महान् योद्धाओ ने जन्म लेकर ससार मे अपनी वीरता का झडा फहराया, आज उसी देश के लोग यही नहीं जानते कि भोजन वास्तव मे क्या है, यौवन मे शक्ति और शौर्य का विकास किस प्रकार होता

है। बेचारे डालडा के सहारे पलकर बच्ची उम्र मे ही आखो पर चश्मा चढा दफ्तरो मे कलम घिस-घिस कर जीवन यापन करते है और सूट पहन कर बाबू बन जाना ही जीवन का लक्ष्य समझते हैं। न उनके शरीर के अवयव ठीक से विकसित होते हैं और न मस्तिष्क मे बुद्धि का ही विकास होता है। इससे भी अधिक खेद का विषय यह है कि हमारे ग्रामीण भाई भी दिन प्रतिदिन उसी शहरी रग मे रगते जा रहे हैं। वे भी अपने बच्चो को कृषक, पशु पालक अथवा परिश्रमी व पराक्रमी न बनाकर एक ऐसा बाबू बनाना अधिक पसन्द करने लगे हैं जो सारा दिन कुर्सी पर बैठा रहे, स्कूटर पर चढकर घूमने जाये, ट्रांजिस्टर बगल मे दबाकर शौच करने जाये और सोकर उठते ही चाय मांगे।

भारत मे पाई जाने वाली गायो की २६ प्रमुख नस्लें हैं, जो अपने-अपने क्षेत्र की वर्षा, तापमान, नमी व वातावरण की अन्य विशेषताओ के अनुकूल गुणावगुण से युक्त होती हैं। वे इस प्रकार हैं (१) कांकरेज (२) हिसार, (३) केनवारिया या केनकठा (४) खैरीगढ़ (५) मालवी (६) थरपारकर (७) डछोर (८) गावलाव (९) हरयाणा (१०) कृष्णाघाटी (११) मेवाती (१२) नागौरी (१३) ओंगोल (१४) राठ (१५) डांगी (१६) देवनी (१७) गीर (१८) साहीवाल (लाल सिंधी) (१९) हल्लीकर २०) आलमबादी (२१) अमृत महल (२२) बरगुर (२३) कांगायम (२४) खिल्लारी।

इनके अतिरिक्त पवार, सीरी पहाड़ो तथा गैर नस्ली गौएं भी बहुत प्रकार की पाई जाती हैं किन्तु आकार और उत्पादनक्षमता की दृष्टि म अत्यन्त हीन होने के कारण उनका विशेष महत्त्व नहीं है। प्राय सूखे इलाकों के पशु सर्वोत्तम होते हैं और अधिक वर्षा, नमी अथवा पहाड़ी क्षेत्रों के पशु घटिया नस्ल के माने जाते हैं। यही कारण है कि पंजाब, हरयाणा, राजस्थान, महाराष्ट्र गुजरात मैसूर, आंध्रप्रदेश मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के मवेशी मा[illegible] श्रेष्ठ [illegible] होत के होते हैं। आकार, डील-डौल, बल तथा दुग्ध उत्पा[illegible] गैर जबकि आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा [illegible] तथा [illegible] मरली, छोटे कद और कम दूध देने वाले होते हैं।

दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से [illegible] साहीवाल नस्ल [illegible] सर्वश्रेष्ठ है किन्तु [illegible] धन गुण है

उत्पादन दोनो ही दृष्टियो से हरयाणा, थरपारकर, कांक्रेज, ओंगोल और देवनी नस्ल की गौएं सर्वोत्तम मानी गई हैं। बागाथम गायें भी दुग्ध उत्पादन म मध्यम श्रेणी की होती हैं। शेष नस्लें केवल बैल देने के दृष्टिकोण से ही उपयागी हैं। उनम दूध तो बस परिवार के भरण पोषण भर को ही प्राप्त होता है। दुग्ध अथवा दुग्ध पदार्थों का व्यवसाय करने के दृष्टिकोण से डेरी उद्योग के लिए उपयुक्त नही होती।

साथ ही यह भी ध्यान रखें कि इनमे से कुछ नस्लें तो ऐसी होती हैं, जो किसी भी प्रकार की जलवायु मे पहुच कर शीघ्र ही अपने को उस जलवायु के अनुकूल बना लेती हैं, किन्तु कुछ नस्लें अपनी विशेष प्रकार की जलवायु मे ही रहने की अभ्यस्त होती हैं और हर स्थान पर नही पाली जा सकती।

हम यहां इन नस्लो की गायो के विषय मे कुछ विस्तार से प्रकाश डाल रहे हैं—

साहीवाल—(लाल सिंधी गाय)—सबसे अधिक दूध देने वाली होती हैं। हृष्ट पुष्ट, भारी डीलडौल, मुडे हुए सींग और लाल रग इनकी विशेषता और पहचान है।

थरपारकर—कच्छ, सिंध, जोधपुर व जसलमेर क्षेत्रो मे पाई जाती हैं। दूध देने मे ये भी श्रेष्ठ हैं। ये चपटे व चौडे माथे तथा मुडे हुए सीगो वाली भूरे रग की होती हैं। कद गठीला व दरम्याना होता है। इनसे उत्पन्न बैल हृष्ट पुष्ट व भार खीचने मे अच्छे होते हैं। यद्यपि इस नस्ल की अधिकतर गौएं भारत विभाजन क पश्चात पाकिस्तान मे रह गई हैं, जैसा साहीवाल के विषय मे भी हुआ है, तथापि इन दोनो नस्लो के कुछ समूह भारत मे भी हैं। थरपारकर गौएं फार्मों अथवा डेरियों पर पाली जाने वाली एव बियांत (दूधकाल) म चार हजार से ५ हजार पोण्ड तक दूध देती हैं सामान्य घरो म पाली जाने वाली लगभग ३,००० पौण्ड औसत दूध देती हैं। य व्यावसायिक दृष्टि से उत्तम हैं।

गीर—य गौएं भी फार्मों तथा डेरियो म पाली जाने पर दूध काल मे ३७०० पौण्ड औसत दूध देती हैं और सामान्य घरों में २५०० से २८०० पौण्ड तक औसत दूध देती हैं। ये भी साहीवाल की तरह भारी डीलडौल और मुडे

हुए सीगो वाली होती हैं। प्राय काठियावाड, राजस्थान, बडौदा और उत्तरी महाराष्ट्र के क्षेत्रो मे पाई जाती हैं। ये लाल रग या चित्तीदार होती हैं। इनसे उत्पन्न बैल हृष्ट पुष्ट तथा बलवान होते हैं। किन्तु ये सुस्त और धीमे होते हैं।

हरयाणा—यह गाय उभरी हुई खोपडी सफेद या भूरे रग की होती है। इस नस्ल की गौए भी सर्वाधिक मात्रा मे दूध देने वाली होती हैं। एक बियात मे फार्मों तथा डेरियों मे पाली जाने वाली गाय औसतन ६७०० पौण्ड और घरो मे ५००० पौण्ड तक दूध देती हैं। इस नस्ल की सामान्य गाय भी ३००० पौण्ड तक दूध देती है। यह नस्ल पजाब तथा हरयाणा मे विशेष रूप से पाई जाती है और इससे पैदा होने वाले बैल भी अत्यन्त हृष्ट पुष्ट, बलवान, अधिकाधिक भार ढोने वाले, चुस्त व फुर्तीले होते हैं। यह गायो मे एक श्रेष्ठ नस्ल है।

कांकरेज - इस नस्ल की गाय कच्छ के रन के दक्षिणी पूर्वी भाग, अहमदाबाद, पूव मे देसा से पश्चिम मे राधनपुर तक के क्षेत्रो मे पाई जाती है। यह चपटे व चौडे माथे, मुडे हुए सीग तथा भूरे रग की होती है और दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से तो बहुत अच्छी नही मानी गई है क्योकि फार्मों मे औसतन एक ब्यात मे ३००० पौण्ड तक दूध देती है, जो हरयाणा की एक सामान्य गाय का औसत है, किन्तु इसके बैल अत्यन्त तेज, चुस्त, बलवान् और माल ढोने वाले होते हैं।

ओंगोल—ओगोल नस्ल की गाय दक्षिण मे जिला गुन्तूर के क्षेत्र म पाई जाती हैं। रग भूरा या सफेद होता है और खोपडी उभरी हुई होती है। दुग्ध उत्पादन का औसत फार्मों तथा डेरियो मे ५००० पौण्ड तक तथा सामान्य घरो मे ३००० पौण्ड तक होता है। इससे उत्पन्न बल चलने मे सुस्त किन्तु भार ढोने में बहुत अच्छे होते हैं।

देवनी—इस नस्ल की गाय पश्चिमी हैदराबाद में पाई जाती है और गीर तथा डांगी नस्ल की गायो से मिलती-जुलती होती है। यह प्राय काले और या लाल और सफेद दो रगो में पाई जाती है और हैदराबाद क्षेत्र की अधिक दुधारू गायो में मानी जाती है।

कागायम—इस नस्ल की गाय से एक ब्यात मे लगभग १८०० पौण्ड दूध अर्थात् २५ पौण्ड प्रतिदिन के औसत से प्राप्त होता है। पहले यह नस्ल दूध कम देती थी। यह दक्षिणी भारत मे कोयमुत्तूर जिले मे पाई जाती है। इसके बैल मझोले कदके, फुर्तीले, बलवान् और अच्छे भारवाही होते हैं। यह गाय लम्बे सींगो वाली तथा उभरे हुए माथे की होती है।

दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से उक्त नस्लें ही उत्तम हैं। शेष नस्लें तो बस बैल उत्पन्न करने की दृष्टि से विशेष उपयोगी हैं, दूध के व्यावसायिक दृष्टिकोण से नहीं। इनमे हिसार, हरयाणा क हासी व हिसार जिलो मे, केनवारिया उत्तर प्रदेश के बांदा जिले मे तथा मध्य भारत के कुछ पूर्वी क्षेत्रो मे, खरीगढ जिला खीरी लखीमपुर म, मालवी मध्य भारत के ग्वालियर जिले तथा हैदराबाद म बछौर बिहार के जिला सीतामढी मे, गावलाव मध्य प्रदेश क छिन्दवाडा व वर्धा क्षेत्र मे, मेवाती राजस्थान के भरतपुर-अलवर जिलो मे, नागौरी जोधपुर के पूर्वी भागों मे, राठ अलवर व समीप के क्षेत्र मे, कृष्णाघारी महाराष्ट्र व हैदराबाद के सीमावर्ती क्षेत्र मे, डांगी बम्बई, नासिक, अहमदनगर आदि के क्षेत्र म, हल्लीकर मैसूर के हमन, तुमकुर तथा मैसूर जिलो म, आलमवाम्ी सलेम तथा कोयमुत्तूर के पहाडी क्षेत्रा मे अमत महल तथा बरगुर जिला कोयमुत्तूर मे तथा खिल्लारी दक्षिणी महाराष्ट्र के क्षेत्रो मे पाई जाती हैं। इनम कुछ नस्लो के बैल फुर्तीले होन हैं, जो आवागमन के साधन के रूप मे श्रेष्ठ होते हैं। कुछ के बैल सुस्त किन्तु भार ढोने मे अच्छे होते हैं और कुछ नस्लों के बैल हल जोतने व माल ढोने के लिए उपयोगी होते हैं।



सर्वाधिक दूध प्रदायक पशु

भैंस

यद्यपि गुणो मे गाय का दूध सर्वोत्तम होता है, किन्तु गाय उतनी अधिक मात्रा मे दूध कभी नही देती, जितनी मात्रा मे भैंसें। अधिक दूध देने वाले पशुओ म भैंस का ही प्रथम स्थान है। जसे भैंसो से उत्पन्न होने वाले कटरे (भैंसे) भार ढोने मे तथा बल मे बैलो स अधिक मजबूत होते हैं, किन्तु वे इतन सुस्त और धीरे चलने वाले होते हैं कि बैलो की तुलना में घटिया समझे जाते हैं, वैसे ही भैंस भी गाय की अपेक्षा अधिक बलवान, डीलडौल मे भारी तथा सुस्त होती है, किन्तु दूध गाय से कही अधिक देती है। इसके दूध मे चिकनाई की मात्रा अधिक पाई जाती है। डेरी उद्योग के लिए प्राय भैंसें ही अधिक पाली जाती हैं।

हमारे देश मे भैंसो की ६ प्रमुख नस्लें पाई जाती हैं जिनका वर्णन यहा किया जा रहा है। वैसे कुछ पशु विशेषज्ञो की राय मे स्थानीय जलवायु के प्रभाव के कारण उनके शरीर के डीलडौल मे ही भिन्नता होती है अन्यथा उनकी नस्लो म विशेष अन्तर नही होता। किन्तु दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से तो भिन्नता पाई ही जाती है। प्रमुख ६ नस्लें ये हैं (१) मुर्रा (२) नीली रावी (३) जफराबादी (४) मेहसाना (५) सूरती (६) नागपुरी। इनमे मुर्रा, नीली रावी, जफराबादी और सूरती अधिक मात्रा मे दूध देती हैं किन्तु नियमित रूप से ब्याई रहती हैं। ये अधिक दिन तक दूध देती रहती हैं इस लिए डेरी उद्योग के लिए यह नस्ल भी उपयोगी है। नागपुरी भैंस उक्त छहो नस्लों मे अपेक्षाकृत कम दूध देने वाली होती है। देश म पाई जाने वाली भैंसो मे लगभग चौथाई इन्ही नस्लो की हैं। शेष नस्लें या तो उपयोगी नही हैं अथवा इन्ही नस्लो की घटिया जातिया हैं। भैंस में एक विशेष गुण होता है कि यह हर क्षेत्र की जलवायु को शीघ्र ही सहन करने लगती है और प्राय

बीमार भी कम पडती है। अगर पडती भी है तो जल्दी ठीक हो जाती है। इसलिए ससार भर मे इनकी अच्छी माग तथा कीमत है।

मुर्रा भैस—हरयाणा पजाब के पूर्वी क्षेत्र तथा दिल्ली के आस-पास पाई जाती है। इसका रग गहरा काला डीलडौल भारी भरकम, किसी किसी भैंस पर सफेद धब्बे भी पाए जाते हैं। दुग्ध उत्पादन मे सबसे अच्छी मानी जाती हैं।

नीली रावी—अधिकतर पाकिस्तान मे रह गई, किन्तु कुछ समूह पजाब के पश्चिमी भागो म पाए जाते हैं। यह मुर्रा भैस से डीलडौल मे अधिक भारी-भरकम होती हैं और दूध भी अच्छी मात्रा मे देती हैं। इनके शरीर मे काले रग म सफेद धब्बे अधिक तथा फैले हुए होते है।

जफराबादी—यह गुजरात के गिरि वन क्षेत्र म पाई जाने वाली भैस है, जो अत्यधिक भारी भरकम, डीलडौल वाली तथा अच्छी दुधारू होती है। इस की एक विशेषता यह भी है कि सूखा चारा खाकर भी बनी रहती है और फिर भी दूध अच्छी मात्रा मे देती है। यदि इसे वैज्ञानिक ढग से तैयार, अच्छा, पौष्टिक चारा-दाना खिलाया जाये तो दूध काफी मात्रा म बढ जाता है। व्यावसायिक दृष्टि से इसका पालन लाभदायक है।

मेहसाना - आकार व डीलडौल मे मध्यम, शीघ्र जवान हो जाने वाली तथा दुग्ध उत्पादन मे अच्छी नस्ल मानी जाती है। यह मुर्रा आदि की अपेक्षा तो कम ही दूध देती है किन्तु नियमित रूप से ब्याभन होती रहती है और दीर्घकाल तक दूध देती रहती है। इसलिए घरो तथा डेरियों मे भी इसका पालना लाभदायक समझा जाता है। यह बडौदा के आस पास पाई जाती है।

सूरती—यह नस्ल गुजरात में पाई जाती है। इसका शरीर भी मध्यम डीलडौल व आकार का होता है। सुडौल, गठी हुई, पीठ सीधी और सीग हसिए की तरह मुडे हुए होते हैं। दूध देने मे भी अच्छी है।

नागपुरी—इसका कद छोटा तथा सीग लम्बे, चपटे और टेढे होते हैं। यह नस्ल मध्य भारत तथा दक्षिणी भारत मे पाई जाती है। इससे उत्पन्न भैंसे अत्यधिक सुस्त होते हैं और प्राय भार ढोने मे ही प्रयुक्त होते हैं। यह नस्ल

अपेक्षाकृत कम दूध देने वाली होती है और डेरी फार्म आदि व्यावसायिक उद्योगो के लिए उपयुक्त नही। हां, घरो के लिए ठीक है।

उत्तम दूध प्रदायक सस्ता पशु—बकरी

बकरी हमारे देश मे सुलभ और सस्ता पशु माना गया है, जिसे हर अमीर और गरीब आसानी स खरीद कर पाल सकता है। इसका दूध भी बहुत पौष्टिक, सुपाच्य और गुणकारी तत्वा से परिपूर्ण माना गया है। महात्मा गाधी तो सदैव बकरी का दूध पीते थे। वैसे भारत के गावो मे आपको अधिकतर घरों मे बकरिया ही मिलेंगी। ग्रामीण बच्चे प्राय बकरियो के दूध पर ही पलत है, क्योंकि एक तो वे मूल्य मे सस्ती होती हैं, दूसरे उन्हें पालने पर अधिक व्यय नही होता। तीसरे यह एक छोटा और सीधा पशु है जो बच्चों तक को कोई हानि नहीं पहुचाता। गावो म इसे प्राय जगल या खेतो मे चरने के लिए छोड दिया जाता है। घास पतवार चर कर ही यह अपना गुजारा कर लेती है और पालक को दूध देती रहती है। एक अन्य लाभ भी है। यह एक बार मे कई कई बच्चो को जन्म देती है, जिनमे बकरिया तथा बकरे दोनो होते हैं। इस प्रकार इस पशु का परिवार बहुत जल्दी बढता है और पालने वाले का उतना ही अधिक लाभ होता है।

भारत मे बकरी की प्रमुख जातिया

भारत मे अनेक जातियो की बकरिया पाई जाती हैं, किन्तु उनम दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से निम्न जातियां प्रमुख हैं—(१) जमुनापारी (२) बीतल (३) बारबारी (४) कच्छी या कच्छवी (५) उस्मानाबादी (६) बगाली—इनम भूरी, काली और सफद दाढ़ी वाली तीन नस्लें हैं (७) सूरती (८) मनाबारी (९) उत्तर गुजरात, जिसे सिरोही भी कहते हैं (१०) गद्दी या सफेद बालों वाली पर्वतीय बकरी (११) भाखरवाल, जो कश्मीर मे पाई जाती है। इनके अतिरिक्त लद्दाख, गिलगित तथा तिब्बत के क्षेत्रों म पश्मीना जाति की बकरी भी पाई जाती है जिससे पश्मीना प्राप्त होता है और उसके वस्त्र बनते है। पश्मीने के वस्त्र बहुत मूल्यवान और उत्कृष्ट कोटि के मान जाते हैं। जाड़ों के मस मे यह बकरी टिहरी, गढ़वाल आदि पहाडी जिलो म भी देखन को

मिलती है, क्योंकि अधिक ऊचाई पर बर्फ पडने पर यह निचले पहाडी क्षेत्रों मे आ जाती है ।

कुछ विशेषज्ञो के अनुसार मलाबारी जाति की बकरियां शुद्ध नस्ल की नही हैं । उनमे सूरती नस्ल का प्रभाव व रक्त पाया जाता है, जो अरब तथा मेसोपोटामिया नस्ल से उत्पन्न हुई हैं । उत्तर गुजरात नस्ल की बकरियो मे भी तीन जातिया हैं मारवाडी, मेहसाना तथा जालवाडी ।

उत्तर भारत मे जमनापारी, बीतल तथा बारबारी नस्ल की बकरियो की ही अधिक माग है, क्योंकि दुग्ध उत्पादन मे ये तीनो नस्लें सर्वोपरि हैं । वैसे सरकार की ओर से आजकल देशी तथा गैर नस्ली बकरियो की नस्ल सुधारने के लिए देहात मे जगह-जगह केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं जहा बढिया नस्ल के बोक (साड बकरे) वितरित किये जाते हैं । सरकारी फार्मों मे भी ऐसी सुधारी गई नस्लें पाली जा रही हैं । दक्षिणी भारत मे बकरियो की अधिकाश आवश्यकता सूरती तथा मलाबारी बकरिया पूरी करती है । पूर्वी भारत मे बगाल की काली, भूरी तथा सफेद दाढी वाली बकरियां अधिक पाली जाती हैं, क्योंकि वे वहा की जलवायु के लिए अनुकूल सिद्ध होती हैं । पश्चिमी भारत मे अधिकतर घरो म कच्छी, उस्मानाबादी तथा सिरोही नस्ल की बकरिया पाली जाती हैं ।

जमुनापारी नस्ल के बकरे भी बहुत उच्चकोटि के माने गए है । यहा तक कि इनकी इग्लड मे भी बडी माग है । वहा ये बकरे मशहूर ऐंग्लो नूबियन नस्ल की बकरियो की नस्ल सुधारने तथा विकसित करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं ।

विश्व मे सर्वाधिक दूध देने वाली बकरियो की दो नस्लें मानी जाती हैं—एक सनेन, दूसरी रोजेनबग । ये दोनो ही विदेशी नस्ल हैं और भारत म नही पाई जातीं । हा, भारत सरकार प्रयत्न कर रही है कि सकर प्रजनन द्वारा यह नस्ल भारत मे भी सुलभ कराई जा सक ।

भारत की मशहूर नस्ल जमुनापारी बकरिया जिला इटावा (उत्तर प्रदेश) और ग्वालियर (मध्य प्रदेश) के मध्य भाग मे अर्थात यमुना तथा चम्बल नदियो के बीच के क्षत्र मे पाई जाती हैं । इस नस्ल का कोई एक रग-विशेष नही

होता। सफेद भी होती हैं काली भी तथा धारीदार भी। ये बकरियाँ ऊँची तथा लम्बी टांगो वाली और तगड़ी होती हैं। इस नस्ल की बकरियां प्रतिदिन १३ पौण्ड तक दूध देती हैं। दूसरी मशहूर नस्ल बारबारी एटा, इटावा, आगरा तथा मथुरा (सब उत्तर प्रदेश में) पाई जाती हैं। इनका कद नाटा तथा ठसदार होता है। रंग आमतौर पर सफेद किन्तु कुछ पर काले भूरे धब्बे भी होते हैं। टांगें छोटी तथा मजबूत होती हैं। ये बकरियां प्रतिदिन ५ ६ पौण्ड तक दूध देती हैं। इनमें एक विशेषता और भी है कि ये जमुनापारी बकरियों की भांति जंगलों में चरना अधिक पसंद नहीं करती। ये घरों पर भी आराम से पाली जा सकती हैं, इसलिए शहरों तथा कस्बों में उपयोगी हैं।

बकरी का दूध बच्चों बूढ़ों तथा जवानों सभी के लिए उपयोगी, आवश्यक तत्त्वों से परिपूर्ण तथा पौष्टिक होता है। निम्नांकित तुलनात्मक चार्ट सरकारी अनुसंधानशालाओं में किए गए जांच प्रयोगों के आधार पर तैयार किया गया है। इसमें आप देखेंगे कि मां के दूध और गाय के दूध से बकरी का दूध किसी प्रकार कम उपयोगी नहीं। यहां तक कि कुछ आवश्यक तत्त्व तो बकरी के दूध में मां के दूध तथा गाय के दूध से भी अधिक मात्रा में पाए जाते हैं।

तीन श्रेष्ठ दूधों का तुलनात्मक चार्ट

दूध	आवश्यक तत्त्वों की प्रतिशत मात्रा				
	प्रोटीन	चिकनाई	शकरा	खनिज	जल
१ मां का दूध	१ ५२	३ ५५	६ ५०	० ४५	८७ ९८
२ गाय का दूध	४ ४८	३ १३	४ ७७	० ६०	८७ ०२
३ बकरी का,	४ ०६	५ १४	५ २८	० ५८	८४ ९४

उक्त तालिका बकरी के दूध की श्रेष्ठता को स्पष्ट रूप से प्रकट करती है। रोगियों तथा छोटे बच्चों के लिए तो सुपाच्य होने के कारण बकरी का दूध अत्युत्तम है। साथ ही खांसी, दमा तथा गरमी के शिशु ज्वर में भी बड़ा लाभदायक होता है। गाय का दूध अम्लीय प्रभावकारी होता है और बकरी का दूध क्षारीय प्रभावकारी। अम्लपित्त रोगों में बकरी का दूध विशेष

गुणकारी है। तीसरे बकरी के दूध मे कुछ उपयोगी तत्त्व मा के दूध से भी अधिक मात्रा मे पाए जाते हैं, यथा—दूध मे पाए जाने वाले १२ प्रकार के खनिज लवणो मे से मा के दूध में केवल ५ लवण, गाय के दूध में केवल ६ खनिज लवण और बकरी के दूध मे ६ खनिज लवण पाए गए हैं। साथ ही गाय के दूध मे लोह की मात्रा अत्यल्प पाई जाती है, जबकि शरीर मे लोह तत्त्व की पर्याप्त मात्रा होना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। बकरी के दूध मे गाय के दूध की अपेक्षा आठ या दस गुना लोह तत्त्व अधिक पाया जाता है।

इन सब बातों से प्रकट है कि बकरी का दूध भी अति उत्तम तथा स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। बकरी पालन को भी वही महत्त्व दिया जाना चाहिए, जो गोपालन अथवा मम पालन को। बकरी के दूध मे जो कभी-कभी एक तेज गध (होक) भी आती है, उसका मूल कारण बकरियो को गदे स्थानो मे रखना, दूध को असावधानी से दुहना तथा बकरियो को भेडो अथवा बकरो के साथ रखना है। इसी गध के कारण प्राय लोग बकरी के दूध से घृणा करते हैं और उसे निकृष्ट मानते हैं।

होता। सफेद भी होती हैं, काली भी तथा चक्त्तेदार भी। ये बकरियां ऊंचे तथा लम्बी टांगो वाली और तगडी होती हैं। इस नस्ल की बकरियां प्रतिदिन १३ पौण्ड तक दूध देती हैं। दूसरी मशहूर नस्ल बारबारी एटा, इटावा, आगरा तथा मथुरा (सब उत्तर प्रदेश म) पाई जाती हैं। इनका कद नाटा तथा दरा कार होता है। रग आमतौर पर सफेद किन्तु कुछ पर काले भूरे धब्बे भी होते हैं। टांगें छोटी तथा मजबूत होती हैं। ये बकरियां प्रतिदिन ५ ६ पौण्ड तक दूध देती हैं। इनमे एक विशेषता और भी है कि ये जमुनापारी बकरियो की भांति जगलो मे चरना अधिक पसद नही करती। ये घरो पर भी आराम से पाली जा सकती है, इसलिए शहरा तथा कस्बो मे उपयोगी हैं।

बकरी का दूध बच्चो, बूढ़ो तथा जवानो सभी के लिए उपयोगी, आवश्यक तत्त्वो से परिपूर्ण तथा पौष्टिक होता है। निम्नांकित तुलनात्मक चार्ट सरकारी अनुसधानशालाओ मे किये गये जाच प्रयोगों के आधार पर तयार किया गया है। इसमे आप देखेंगे कि मा के दूध और गाय के दूध से बकरी का दूध किसी प्रकार कम उपयोगी नही। यहा तक कि कुछ आवश्यक तत्त्व तो बकरी के दूध मे मां के दूध तथा गाय के दूध से भी अधिक मात्रा मे पाए जाते हैं।

तीन श्रेष्ठ दूधों का तुलनात्मक चार्ट

दूध	आवश्यक तत्त्वा की प्रतिशत मात्रा				
	प्रोटीन	चिकनाई	शकरा	खनिज	जल
१ मां का दूध	१ ५२	३ ५५	६ ५०	० ४५	८७ ९८
२ गाय का दूध	४ ४८	३ १३	४ ७७	० ६०	८७ ०२
३ बकरी का,	४ ०६	५ १४	५ ^८	० ५८	८८ १४

उक्त तालिका बकरी के दूध की श्रेष्ठता को स्पष्ट रूप स प्रकट करती है। रोगियो तथा छोटे बच्चो के लिए तो सुपाच्य होने के कारण बकरी का दूध अत्युत्तम है। साथ ही खासन, दमा तथा गरमी के मियादी ज्वर म भी बड़ा लाभदायक होता है। गाय का दूध अम्लीय प्रभावकारी होता है और बकरी का दूध क्षारीय प्रभावकारी। अम्लपित्त रोगों में बकरी का दूध विशेष

गुणकारी है। तीसरे बकरी के दूध मे कुछ उपयोगी तत्त्व मा के दूध से भी अधिक मात्रा म पाए जाते हैं, यथा—दूध म पाए जाने वाले १२ प्रकार के खनिज लवणों मे से मा के दूध मे केवल ५ लवण, गाय के दूध में केवल ६ खनिज लवण और बकरी के दूध मे ९ खनिज लवण पाए गए हैं। साथ ही गाय के दूध म लोह की मात्रा अत्यल्प पाई जाती है, जबकि शरीर मे लोह तत्त्व की पर्याप्त मात्रा होना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। बकरी के दूध मे गाय के दूध की अपेक्षा आठ या दस गुना लोह तत्त्व अधिक पाया जाता है।

इन सब बातों से प्रकट है कि बकरी का दूध भी अति उत्तम तथा स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। बकरी पालन को भी वही महत्त्व दिया जाना चाहिए, जो गोपालन अथवा भैंस पालन को। बकरी के दूध मे जो कभी-कभी एक तेज गंध (हीक) सी आती है, उसका मूल कारण बकरियों को गंदे स्थानों म रखना, दूध को असावधानी से दुहना तथा बकरियों को भेड़ों अथवा बकरों के साथ रखना है। इसी गंध के कारण प्राय लोग बकरी के दूध से घृणा करते हैं और उसे निकृष्ट मानते हैं।



मूलत स्पेनिश भेडें हैं, किन्तु सुनहरे पैरो वाली ये भेडे आजकल आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका तथा अमरीका मे बहुत बडी सख्या मे पाली जाती हैं। इस नस्ल की सर्वोत्तम किस्म की होने के कारण बहुत ऊचे दामो मे बिकती हैं। विश्व की कुल ऊन उत्पादन का लगभग ४० प्रतिशत भाग ब्रिटेन आदि देशो में इसी नस्ल से विकसित अ य नस्ल की भेडो से प्राप्त होता है, जो मध्यम श्रेणी की ऊन मानी जाती है। शेष २० प्रतिशत भाग एशियाई देशो की नस्लो मे प्राप्त किया जाता है, जो मोटी ऊन या घटिया ऊन कहलाती है और विशेष रूप से गलीचे बनाने म प्रयुक्त होती है, कि तु भारत जैसे विशाल कि तु निधन देश म वस्त्र, कम्बल आदि बनाने के लिए आ तरिक खपत इस मोटी ऊन की ही अधिक है।

ब्रिटेन की जलवायु आर्थिक स्थिति वहा के निवासियो की इस व्यवसाय म अभिरुचि आदि कारणो से वहा भेड पालन का अच्छा विकास हुआ है। वहा की भेडो म डाउनी नस्लें यथा साउनडाउन व हैम्पशायर, पहाडी नस्लें यथा चवियर फैरी व ब्लैक फेस, लस्टर वूल आदि और चमकीली ऊन देने वाली नस्लो मे बोडर वालीसेस्टर तथा लिंकजन आदि विशेष रूप से विख्यात हैं। लिंकजन नस्ल की भेडो स और भी अनेक नस्लें तयार की गई हैं। ब्रिटेन म अच्छी नस्ल की एक भेड का वजन १२० पौण्ड से १७५ पौण्ड तक होता है, जबकि भारतीय भेड का वजन ५०-६० पोण्ड ही होता है। वहा एक मेंढे का भार १५० पौण्ड से २४० पोण्ड और किसी किसी का ४०० पौण्ड तक होता है, जब कि भारतीय मेंढे प्राय ८० से १०० पौण्ड के मध्य ही रहते हैं।

भेडो से ब्रिटन, आस्ट्रेलिया आदि देशो मे केवल ऊन ही नही प्राप्त की जाती वरन दूध तथा मास भी प्राप्त किया जाता है और वहां इन दोनो वस्तुओ की भी बडी माग है। कि तु हमारे देश मे अधिकाशत भेड ऊन प्राप्त करने के लिए ही पाली जाती है। यद्यपि भेड का दूध बहुत शक्तिदायक और स्वास्थ्यवद्धक होता है तथापि भारत मे इसे पस द नही किया जाता।

भारतीय भेडों की नस्लें व ऊन का उत्पादन

भारतीय भेडो की नस्लो मे गलीचे की ऊन की सबसे बढिया किस्म देने

वाली बीकानेर की मगरा और चाकेला तथा जोरिया की अच्छी नस्लें मानी गई हैं। कश्मीर तथा तिब्बत, नेपाल, भूटान आदि में भेड़ों की मिली-जुली नस्ल पाई जाती हैं जो मुलायम तथा बारीक ऊन के लिए प्रसिद्ध हैं। पंजाब में लोही नस्ल की भेड़ पाली जाती है जो ऊन तथा मास दोनों की दृष्टि से उपयोगी है क्योंकि यह नस्ल दूसरी नस्लों की अपेक्षा डीलडौल व वजन में भारी व तगड़ी होती है। भारत में राजस्थान कच्छ, महाराष्ट्र व उत्तरी गुजरात ही भेड़ पालन व ऊन उद्योग के प्रमुख क्षेत्र हैं।

भारत की एक भेड़ से औसतन पौन पौण्ड से ४ पाण्ड तक ऊन प्राप्त होती है। भारत की कुल ऊन उत्पादन क्षमता लगभग ५ करोड़ ६० लाख पौण्ड वार्षिक है। विश्व भर में लगभग ६० करोड़ भेड़ें हैं जिनमें ४ करोड़ भेड़ें अकेले भारत में हैं। भारतीय भेड़ों की अधिकांश ऊन सफेद होती है, किन्तु कुछ की रंगीन भी होती है। उत्तरी भारत में उत्पन्न सफेद ऊन की विदेशों में अच्छी ख्याति है। भारत को ऊन के निर्यात से लगभग ८ करोड़ रुपए वार्षिक की आय होती है। भारत की ऊनी मिलें, जो सूट का ऊनी कपड़ा बनाती हैं प्राय विदेशी ऊन आयात करके प्रयोग करती हैं। भेड़ों की खाल भी बिकती है। उससे भी लाखों रुपये की आय होती है। दूसरे इसकी मेंगनी खेती के लिए बहुत उत्तम खाद मानी जाती है, क्योंकि इसमें नाइट्रोजन व पोटाशियम की मात्रा अन्य पशुओं से प्राप्त गोबर खाद से दुगनी होती है।

मुलायम ऊन के लिए कश्मीर आदि पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाने वाली भेड़ों में पुंछ करनाह तथा कश्मीर घाटी में तीन नस्लें प्रसिद्ध हैं। रंगीन ऊन के लिए रामपुर की बुशायर नस्ल प्रसिद्ध है जो मूलत हिमालय के मासो स्थान की नस्ल है। पूर्वी भारत में नेरोली माड़या, यालगा या तेंगुरी नस्लें पाई जाती हैं। ये भेड़ें देखने में बकरी के समान लगती हैं। इनके गले के नीचे दो झब्बे होते हैं। राजस्थानी गड़रियों के किसी किसी रेवड़ में छनोत्तर या सोमाड़ी नस्ल की भेड़ें भी पाई जाती हैं, जिनके कान विशेष रूप से बड़े होते हैं और जो दूध भी अधिक देती हैं।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यदि अच्छे ढंग के रेवड़ बनाकर समुचित रखरखाव व पशुओं की चिकित्सा व देखभाल का पर्याप्त ध्यान हो, तो भेड़ पालन भी लाभ का व्यवसाय है। ऊन, दूध तथा चमड़ा और खाद प्राप्त कर हम उनसे चौहरा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

तेज दौड़ने वाला हृष्ट-पुष्ट पशु

घोड़ा

घोडा एक बहुत ही चुस्त फुर्तीला तेज दौडने वाला, समझदार और स्वामिभक्त पशु है। यह सवारी के काम मे आता है और माल ढोने के लिए भी उपयुक्त होता है। पिछली शताब्दी तक एक स्थान से दूसरे स्थान तक आवागमन का प्रमुख साधन घोडा ही था। यह भारत मे फैली हुई छोटी-बडी रियासतों की सेना तथा पुलिस का एक प्रमुख अग था। यही कारण है कि पिछले राजाओं महाराजाओ नवाबो, रईसो जमींदारो आदि मे घुडसवारी का बहुत शौक तथा प्रचलन था और दूर-दूर देशो से एक से एक बढिया नस्ल के घोडे मगाए जाते थे। अधिकाश सेना घुडसवार सेना होती थी अथवा पदल सेना। व्यापारी वर्ग मे भी दूर-दूर प्रदेशो मे जाकर व्यापार करने, अपने प्रदेश की वस्तुए दूसरे प्रदेशों अथवा देशों मे ले जाने और वहाँ से उपयोगी वस्तुए लाने के लिए घोडों का ही अधिक प्रयोग किया जाता था। अब तो मोटरें रेलें, जहाज आदि चल जाने के कारण घोडो की माँग तथा उपयोगिता घट गई है और जन-जीवन से इसका बहुत थोडा सम्बन्ध रह गया है अर्थात् छोटे छोटे कस्बों शहरो अथवा गावो म तागो तथा इक्को मे घोडे जोतकर सवारिया तथा माल ढोया जाता है अथवा पहाडी स्थानो मे जहा रेलें तथा मोटरें नहा पहुच पातीं, वहा आने-जाने व माल ढोने के लिए ही घोडो का अथवा खच्चरों का प्रयोग किया जाता है। खच्चर भी घोडो की एक नस्ल समझी जाती है।

आजकल भारत मे घाडों का प्रयोग सेना अथवा पुलिस विभागो मे ही मुख्य रूप मे होता है और इन्ही से निकाले गये घोडे बाजारों मे जनता के हाथों मे पहुचते हैं, जो तांगो, इक्को आदि मे जोते कहीं कहीं सवारी के काम में लाये जाते हैं।



विशालकाय पशु

हाथी

हाथी हमारे देश का सर्वाधिक विशालकाय, ताकतवर और बहुत सीधा सादा पालतू पशु है। गत शताब्दी तक यह पशु राजाओ महाराजाओ के महलो मे बडे आदर व चाव से पाला जाता था, क्योकि यह राजाओ की विशेष प्रिय सवारी के रूप मे प्रयोग किया जाता था। सेना मे एक डिवीजन हाथी सेना का भी होता था। यह पशु भी बहुत समझदार तथा स्वामिभक्त होता है, किन्तु इसे खिलाना पिलाना, रखना पालन व्यय आदि एक सामान्य जन की सामर्थ्य के परे है। यह राजमहलो मे ही पाला जाता था। पहाडी स्थानो मे पहाडो जगलो की लकडी ढोकर मैदानी भागो म पहुचाने के लिए भी इसका प्रयोग होता था और अब भी हो रहा है चूकि यह इतना ताकतवर और विशाल पशु है कि कई मन लकडी के लट्ठे एक साथ लादकर आसान से चल सकता है, जबकि उतनी लकडी ढोने के लिए अन्य साधन अधिक महगे पडते है। पहाडी लकडी के व्यापारियो के लिए, जहाँ अन्य साधन सुलभ नही, आज भी हाथी की विशेष उपयोगिता है। यह इतना समझदार जानवर है कि मनुष्य की भाति ही इशारो को जल्दी समझ लेता है। अत इसका सकस कम्पनियों मे भी बहुत महत्व है। वे लोग हाथियो को स्टूल पर बैठना, मोटर-साइकल चलाना, नाचना आदि काय सिखा कर जनता का अच्छा मनोरजन करते हैं। देश के विभिन्न चिडियाघरों म तो हाथियो की विविध नस्लें रखी तथा पाली जाती हैं और वहाँ भी वे जन साधारण (विशेष कर बच्चो) के लिए आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बनते हैं।

शिकारियों मे भी हाथी का विशेष महत्व व उपयोगिता है, क्योकि हाथी पर बैठकर शेरो, चीतो आदि का शिकार खेलना बडा आनन्ददायक व सुरक्षित माना जाता है। गुजरात के गिरि आदि वनों में सरकार द्वारा विशेषरूप से

शिकार के लिए हाथी पाले व रखे जाते हैं, जिन्हें विदेशी शिकारी यहा आने पर अच्छे पैसे देकर शिकार खेलने के लिए प्रयोग करते हैं। विश्व मे हाथियो की थोडी सी ही नस्लें पाई जाती है, अधिक नही। भारत के जगलो मे पाये जाने वाले हाथी बचपन मे ही पकड कर विदेशा के चिडियाघरो को बेचे जाते हैं और उनसे अच्छी आय होती है। उडीसा, बिहार, बगाल, असम, मध्य प्रदेश, गुजरात आदि के जगलो मे तथा हिमाचल की तराई म हाथियो के झुण्ड के झुण्ड विचरते दिखाई पडेंगे। चूकि इनकी सख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है और कुछ विशिष्ट नस्लें तो समाप्त प्राय हो रही हैं, इसलिए सरकार ने इन्हें कानूनी सुरक्षा प्रदान करते हुए हाथियो के शिकार पर सख्त प्रतिबध लगा रखा है।

भारत के कुछ विशिष्ट साधु समुदाय भी हाथी पालते हैं और बडे-बडे मठों तथा मन्दिरो में हाथी रखे जाते हैं। इस प्रकार आम जनता के लिए उपयोगी न होने पर भी हाथी देश का एक विशिष्ट व महत्त्वपूण पशु है। इसके दात बहुत कीमती होते हैं। हाथी दात की अनेक कलात्मक वस्तुए बनाकर भारत विश्व के बाजारो मे भेजता है, जो बहुत ऊचे दामो म बिकती हैं। हाथी का नाखून आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति मे महत्त्वपूण स्थान रखता है, क्योकि अनेक रोगों को जड से नष्ट करने का गुण उसमे पाया जाता है। इसीलिए हमारे यहा कहावत मशहूर थी 'जिन्दा हाथी लाख का, तो मरा सवा लाख का।'



रेगिस्तान का उपयोगी पशु

ऊट

लम्बी टागो तथा लम्बी गदन वाला यह पशु भारत के सब पशुओ से अधिक ऊचा होता है। यह पशु सामा य चाल से तो धीरे चलता है किन्तु दौडने पर काफी तेज दौड सकता है। प्राचीन काल मे यह सवारी के काम आता था और बोझा ढोने के काम भी। राजा महाराजा अपनी सेना मे ऊट सवार सेना की बिग्रेड भी रखते थे।

मुख्य रूप से ऊट रेगिस्तानी पशु है। रेगिस्तानी इलाको मे पानी की बहुत कमी होती है और मीलो तक फले रेगिस्तान मे न कही कोई पेड पौधा नजर आता है और न कुआ-तालाब। पानी की एक बूद भी दिखाई नही देती। इस पशु मे प्राकृतिक तौर पर एक विशेषता होती है। इसकी लम्बी गदन मे पानी की एक विशेष थैली बनी होती है। यह जब पानी पीता है तो उस थैली को भी भर लेता है और फिर कई कई दिन तक इसे पानी की जरूरत नही पडती। क्योंकि जब भी इसे प्यास लगती है यह उसी थली मे से थोडा थोडा पानी उडेल कर पीता रहता है। यही कारण है कि पानी की कमी वाले रेगिस्तानी क्षेत्रो मे यह अत्यधिक उपयोगी पशु साबित होता है।

आजकल ऊट का प्रयोग राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रो अथवा पहाडी स्थानो मे भी होता है। वैसे इक्का-दुक्का तौर पर मैदानी क्षेत्रों मे भी देखने को मिलता है। राजस्थान मे यह गाडी मे बैल या घोडे के स्थान पर जोतकर माल ढोने के भी काम आता है और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र म जाने के लिए सवारी के काम म भी आता है। इसके पैर भी ऐस बने होते हैं कि रेगिस्तान की रेतीली भूमि पर यह बहुत आराम से चल सकता है। यहां तक कि दोपहर की चिलचिलाती धूप में जबकि रेत बहुत गरम हो जाती है, यह पशु बडे मजे

से उस पर दौड़ता चला आता है। पहाड़ी क्षेत्रों मे यह जगली लकड़ी लादकर मदानी क्षेत्रो म पहुचाने के काम में आता है। राजस्थान मे, जहां यह सवारी के काम भी आता है, इसकी पीठ पर दो या तीन व्यक्ति बठकर बडे मजे मे दूर तक जा सकते हैं। भारत की सेना मे आजकल भी ऊट सेना रखी जाती है, ताकि रेगिस्तानी क्षेत्र मे सैनिकों का पहुचाने के लिए यथावसर उनका प्रयोग किया जा सके। यह पशु यद्यपि घोड़े तथा हाथी के समान समझदार तथा स्वामिभक्त तो नही होता, फिर भी सीधा होने के कारण तथा अपने प्राकृतिक विशेष गुणो के कारण महत्त्वपूर्ण है।



मालवाही सस्ता पशु

गधा

गधा माल ढोने वाले पशुओ म सबसे सस्ता पशु है। व्यक्तिगत रूप से ऐसे व्यवसाय करने वाले व्यक्ति, जिन्हें लाभ थोडा होता है और माल ढोना पडता है, गधे का प्रयोग करते हैं, जैसे धोबी तथा कुम्हार आदि जातियो के लोग। धोबी को चूकि सुबह कपडों के गटठर लादकर नदी या तालाब पर ले जाने होते हैं, जहां वे घाटो पर कपडे धोते हैं और शाम को उन्हें पुन इकटठा करके घर लाना होता है और यह उनका लगभग प्रतिदिन का ही काम होता है, इस लिए वे कपडे लाने ले जाने का काम गधे से ही लेते हैं। इसके रखरखाव पर भी उन्हें कुछ व्यय नही करना पडता। क्योंकि जब तक धोबी कपडे धोते हैं, गधे नदी या तालाब के किनारे इधर-उधर चर कर अपना पेट भर लेते हैं और शाम को कपडे वापस लाकर धोबी या तो इन्हें बाध देते हैं या रात म भी खुला ही छोड देते हैं। यह भी इतना सीधा पशु होता है कि खुला रहने पर भी भागकर कही नही जाता। हां, दुलत्ती चलाने मे इसे बडा मजा आता है इसलिए गधे आपस म ही एक दूसरे को दुलत्ती मारते रहते हैं।

कुम्हार जाति के लोग, जो घडे, सुराहिया आदि मिट्टी के बतन बनाते हैं, गधो पर ही अपना माल लाद कर एक स्थान से दूसरे स्थान तथा मडियो व शहरो तक ले जाते हैं, क्योकि अन्य सचार साधनो से ले जाने मे एक तो खर्चा अधिक बैठता है दूसरे बतनो के टूटने का भी भय रहता है। गधे की पीठ पर वे एक विशेष प्रकार से बुने जाल के थलो मे रखकर इसकी पीठ पर दोनाओर लटका कर इस प्रकार रख देते हैं कि फिर कितनी ही दूर चले जायें, वे बतन एक-दूसरे से टकराकर टूटेंगे नहीं। इस प्रकार गधा धाबियों तथा कुम्हारों का ही पशु विशेष बन गया है।

यद्यपि बडे शहरो मे अब कपडे मशीनो द्वारा धुलने तथा ड्राईक्लीन होने लगे हैं, फिर भी अधिकाश जनता गावो, छोटे कस्बो या छोटे शहरो मे बसी है और बडे शहरो म भी सामान्य व निधन व्यक्तियो के कपडे धोबी लोग नदी-तालाबो के घाटो पर ही धोते हैं। यही कारण है कि मशीनी युग मे भी भारत मे गधों की उपयोगिता व महत्त्व मे किसी प्रकार की कमी नहीं हुई है, वरन् इसका महत्त्व बढता ही जा रहा है। इसकी भारत मे अधिक नस्लें भी नही है। सब गधे एक दो नस्लो के ही हैं।



स्वामिभक्त व सजग पशु

कुत्ता

कुत्ता एक छोटा-सा पशु है, जा न तो सवारी के काम आता है और न माल ढाने के ही। फिर भी यह मनुष्य जाति के लिए बहुत उपयोगी पशु सिद्ध हुआ है। क्योंकि इसमे कुछ बहुत ही उत्कृष्ट कोटि के स्वाभाविक गुण पाये गये हैं। एक तो यह बडा ही स्वामिभक्त होता है और अपने पालने वाले स्वामी से बहुत प्यार करने लगता है। दूसरे यह इतना चौकन्ना पशु होता है, कि रात को सोते समय भी तनिक से खटके या पद-चाप से ही फौरन जाग जाता है और भौंकने लगता है। इसके भौंकने से घर तथा पडौस के दूसरे व्यक्तियो की भी नीद खुल जाती है। उस दशा मे यदि कोई चोर-उच्चका घर मे चोरी करने के इरादे से घुसा है, तो वह असफल रहकर भाग खडा होता है। इस प्रकार यह एक सजग प्रहरी का काम करता है, यही कारण है कि घरो मे लोग कुत्ते पालते हैं। शहरों मे तो प्रत्येक कोठी मे कुत्ते का पाला जाना आवश्यक सा हो गया है।

साथ ही कुत्ता बहुत समझदार पशु है। यह अपनेप राये को अच्छी तरह पहचानता है। यही कारण है कि जिस घर मे यह पाला जाता है, उस घर के छोटे छोटे बच्चे तक उसे मारते रहते हैं, कान खीचते रहते हैं, सवारी करते हैं, किन्तु वह उन्हें कभी नहीं काटता। किन्तु यदि पडोस का दूसरा आदमी कभी घर के दरवाजे के अन्दर पांव रखने की चेष्टा करता है, तो कुत्ता फौरन भौंक कर उस पर दौड पडता है और यदि पालने वाला उसे रोके नही अथवा आने वाला पीछे न हट जाये, तो कुत्ता उसे फौरन काट लेता है।

इस पशु मे एक विशेषता और भी पाई जाती है, जो अन्य पशुओं म नहीं। इसकी घ्राण शक्ति (सूंघने की शक्ति) बहुत तेज होती है और यह किसी भी

व्यक्ति के पैरो के निशान सूघ सूघ कर जिधर और जहा तक वह गया है, वहां तक पहुच सकता है। इसी गुण विशेष के कारण कुत्ते का विश्व के प्रत्येक देश में पुलिस तथा सेना विभागो मे बडा महत्त्व है। इन विभागों म अपराधियों अथवा जासूसो का पता लगाने के लिए कुत्तो को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है और कत्ल, चोरी, डाक आदि जघन्य अपराधो मे इन प्रशिक्षित कुत्तो की घ्राण शक्ति की सहायता से पुलिस अथवा सेना के अधिकारी इन कुत्ता के पीछे-पीछे जाकर शीघ्र ही असली अपराधी को जा पकडते हैं। इस काय मे यह पशु अत्यन्त विश्वसनीय काय करता है। अपराधी के पैरो के निशान या हाथ के निशान को सूघकर कुत्ता फौरन उस दिशा मे बढने लगता है, जिधर अपराधी गया है।

विश्व म कुत्तो की अनेक जातिया पाई जाती हैं। रूस के उत्तरी क्षेत्रों तथा साइबेरिया मे कुत्तों की एक ऐसी नस्ल पाई जाती है, जो बफ के ऊपर गाडियां खींचकर सवारियों को सैर कराने,या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुचाने के काम आती है। बफ पर चलने वाली विशेष प्रकार की गाडियाँ वहां प्राय उस जाति के कुत्ते ही खीचते हैं।

भारत मे भी कुत्तो की अनेक जातिया हैं, जिनमे शिकारी कुत्ते विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये अत्य त दुबले-पतले, लम्बे और काफी ऊचे होते हैं। प्राय ये कुत्ते भारत की खानाबदोश जातियो के पास पाये जाते हैं। क्योकि वे लोग सफर मे इन कुत्तो द्वारा ही खरगोश, हरिण आदि पशुओ का शिकार करते हैं और उनके मास स ही अपना व अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। ये शिकारी कुत्ते इतने खूख्वार तथा फुर्तीले होते हैं कि शिकार को दूर से देखते ही बिजली की तरह झपटते हैं और देखते-देखते शिकार को धर दबोचते हैं। इन कुत्तों की छलागें भी बहुत लम्बी पडती हैं। घरो मे पाले जाने वाले सामान्य कुत्ते न तो इतने फुर्तीले ही होते हैं और न ही खूख्वार। इनम कुछ बहुत छोटे, कुछ बडे और कुछ मध्यम आकार के होते हैं। ये कुत्ते प्राय भौंकने वाले अधिक होते हैं, ताकि पहरेदारी कर सकें और भौक कर गृहस्वामी को चौकन्ना कर दें।

व्यावसायिक रूप से कुत्ते पालने की हमारे देश मे कोई उपयोगित नही और न ही ये व्यावसायिक तौर पर पाले जाते हैं। क्योकि यहा के कुत्ते इतने अच्छी नस्लो के भी नही होते, जो अन्य देशो को निर्यात करके धन प्राप्त किया जा सके। बल्कि हमारे देश के बडे-बडे शहरो मे तो गलियो व सडको के आवारा कुत्तो को पकडने व समाप्त करने के लिए स्थानीय प्रशासन को एक अलग विभाग स्थापित करना पडता है। फिर भी ये सिरदद बने रहते हैं।



चर्बी के लिए उपयोगी पशु

सूअर

प्रकृति ने इस सष्टि मे कैसे-कैसे अदभुत जीव उत्पन्न किए हैं। सूअर एक अति साधारण पशु होते हुए भी अदभुत पशु है। इसका मुख्य भोजन मनुष्य का मल (टट्टी) है जो इसे बहुत ही प्रिय है और यही इसके लिए सबसे अधिक अनमोल, लाभप्रद तथा उपयुक्त भोजन है। इससे आप सहज ही समझ सकते हैं कि इसे पालने के लिए किसी प्रकार का व्यय नही उठाना पडता। यह पशु स्वत इधर-उधर घूम घूम कर लोगो की टट्टी खाता रहता है और उसी से इसका पेट भरा रहता है। अन्य किसी वस्तु की इसे आवश्यकता नही।

इसमे एक विशेषता और भी है कि इसके शरीर मे चरबी जितनी अधिक मात्रा मे पाई जाती है, उतनी किसी अन्य पशु में नही और यह भी आप जानते ही होंगे कि आज के वैज्ञानिक युग मे डक्टरो ने मानव स्वास्थ्य के लिए च को एक आवश्यक व उपयोगी तत्त्व माना व सिद्ध किया है। यही कार कि सूअर की चर्बी से असख्य दवाइया बनती हैं, जो लाखों-करोडो मनुष्यो स्वास्थ्य व जीवन दान देती हैं।

इस प्रकार आज के युग मे यह पशु भी एक महत्त्वपूर्ण पशु बन गया यद्यपि प्राचीन काल मे हमारे देश मे इसे प्राय मेहतर जाति के लोग ही पा थे, किन्तु अब सरकारी तौर पर बडे-बडे केन्द्रो मे भी इसे पालने की योज बन रही है और लघु स्तर पर भी यह काय हो सकता है।

इस प्रकार अनेक देशों में सूअर पालन भी एक अच्छा व्यवसाय बन गय और भविष्य मे भारत मे भी यह व्यवसाय बन जायेगा।

पशुओं की शरीर-रचना

हम आपको पशुओ के शरीर की रचना, उनके विविध अगो व अवयवों और उनकी काय प्रणालियों आदि के विषय मे आवश्यक जानकारी करा देना चाहते हैं। क्योकि इन बातो की जानकारी के बिना पशुओ के रोगो की चिकित्सा करना कठिन होगा। जिस प्रकार मनुष्यो को विविध रोगों से बचाने के लिए डाक्टरो ने मानव शरीर को चीर फाडकर उसकी बनावट, उसके अग प्रत्यग की स्थिति व काय प्रणाली का गहन अध्ययन करके उपयोगी ज्ञान अर्जित किया, उन अवयवो की काय-प्रणाली मे दोष अथवा अवरोध उत्पन्न होने के कारण तथा रोगो की उत्पत्ति आदि के बारे मे जाना और तब उन रोगों अथवा दोषो के निवारण के लिए तदनुकूल चिकित्सा, औषधि व उपचार की खोज की, ठीक उसी प्रकार पशु चिकित्सा विज्ञान भी पशु के शरीर की रचना से आरम्भ हो कर आज इतना विकसित हो गया है कि मानव रोगो की भाति ही पशु रोगों के लिए भी अनेक प्रकार की औषधियो तथा इजेक्शनों का अविष्कार हो गया है, जिनके द्वारा शीघ्र ही पशु रोगो पर नियत्रण पाया जा सकता है। साराश यह कि हम पशुओ के रोगो की चिकित्सा भली भाति तभी कर सकते हैं, जबकि हमे उसके शरीर की रचना यानी अग प्रत्यग की स्थिति, बनावट, काय तथा उत्पन्न होने वाले दोषो आदि का समुचित ज्ञान हो। आशा है कि निम्नांकित जानकारी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पशु शरीर के प्रमुख अवयव-सस्थान

मनुष्य या पशु, किसी भी जीव के शरीर का प्रत्येक छोटे से छोटा अग उपयोगी होता है। प्रकृति ने जीवो के शरीर की रचना मे अदभुत कमाल दर्शाया है। प्रत्येक अग शरीर के पोषण, शक्ति प्रदान, आवश्यक तत्त्व ग्रहण, शरीर रक्षा तथा काम करने वाले एक प्रमुख केन्द्र अथवा सस्थान से सम्बधित होता है और इन सस्थानो का पारस्परिक सम्बन्ध इस प्रकार जुडा होता है कि वे समस्त शरीर की आवश्यकता एक-दूसरे द्वारा पूरी करते रहते हैं। इसी प्रकार अपनी-अपनी काय प्रणालियो के अनुसार पशु शरीर को निम्नलिखित आठ प्रमुख सस्थानो मे विभाजित किया जा सकता है —

१ पोषण-सस्थान

इस संस्थान का मुख्य काय शरीर के पोषण के लिए आवश्यक आहार का

प्राप्त करना व उसमे रक्त बनाना है। इस सस्थान के कार्यों को तीन श्रेणियो मे विभक्त किया जा सकता है। पहली भोजन को शरीर मे पहुचाना, दूसरी खाये हुए आहार को रासायनिक क्रियाओ द्वारा पचाना और तीसरी पचे हुए भोजन से रस खीचकर यकृत (Liver) मे रक्त निर्माण के लिए पहुचाना। इन तीनों श्रेणियो की क्रियाओ को पूरा करने मे पशु शरीर के जो अग सहायता देते हैं, वे इस सस्थान के अन्तगत आते हैं, यथा थूथनी या थाथ (Muzzle or Muffee)—जो विभिन्न प्रकार के चारे चरने तथा उन्हें जानने मे पशु की सहायता करती है।

मुह (Mouth)—जिसके द्वारा पशु खाद्य पदाथ ग्रहण करता है और उसे चबाकर लार के मिश्रण द्वारा पाचन योग्य बनाकर अन्दर ले जाता है।

जबडे (Jaws)—इसमे एक नीचे का जबडा (Lower jaw) और दूसरा ऊपर का जबडा (upper jaw) होते हैं। नीचे के जबडे मे वस्तु को कुतरने वाले दात लगे होते हैं, और ऊपर के जबडे मे वस्तु को चबाने या जुगाली करने मे सहायता करने वाले (चौह) लगे रहते हैं।

गाल (Cheeks)—इनमे अन्दर की ओर मैसीटर (Masiter) नामक मास होता है, जो जुगाली के समय मदद करता है।

जीभ (Tongue)—इसके द्वारा पशु खाने की वस्तु को समेटकर अन्दर खाच ले जाते हैं। पशुओ की जीभ प्राय: काफी लम्बी और बाहर निकल सकने योग्य होती है। इसका दूसरा भाग बहुत सूखड और दृढ होता है तथा चारे को ठीक प्रकार से समेट लेता है।

खाने की नली (Food pipe or Oesophagus)—इस नली के द्वारा भोजन पशु के मुह से लार सयुक्त हो, गीले के रूप मे प्रथम आमाशय (Rumen) या झोझ में जाता है। झोंझ या प्रथम आमाशय (Rumen) पागुर या जुगाली करने वाले पशुओं के शरीर मे यह प्रथम आमाशय होता है, जिसमे लगभग 30 से 50 गलन तक खाद्य पदाथ आ सकता है। यह आमाशय पट अर्थात Abdomen के बाई ओर होता है। झोझ मे इकट्ठा किया हुआ खाद्य पशु अपनी इच्छानुसार किसी भी क्षण पुन: मुख मे निकालकर जुगाली कर सकता है। जुगाली करना उसे कहते हैं जो कि चारे आदि खाद्य को पशु

अनुपयोगी, दूषित या अवशिष्ट रस रह जाता है, वह यकृत् की निचली सतह में बनी एक थैली मे जमा होता रहता है, जिसे गाल ब्लेडर (Gall Bladder) कहते हैं। हिन्दी मे इसे पित्ताशय कहते हैं। दूसरे कलेजे का मुख्य काम रक्त मे मिश्रित अनुपयोगी अथवा दूषित अणुओ व यूरिया व यूरिक एसिड (uria and uric acid) जैसे पदार्थों को खीचकर रक्त को शुद्ध रूप म प्रवाहित रखना भी होता है। पशुओ के शरीर मे कलेजा दाई ओर डायाफ्राम (Diaphragm) के निकट होता है, जो दूसरे और तीसरे आमाशय को स्पर्श करता है।

इस सस्थान के काय को सुचारु रूप से चलाने के लिए कुछ अन्य तत्व भी शरीर म विद्यमान रहते हैं, यथा—लैक्टिक ऐसिड (Lactic acid), गैस्ट्रिक जूस (Gastric juice), कैजीन (cagine), पैप्टीन (paptone), रेनेट (Rennet), रेनीन (Renin), कैसीनोजेन (casinogen) इत्यादि। इस प्रकार इन तत्वो व उक्त अगो द्वारा इस सस्थान का काय ठीक प्रकार से सम्पन्न होता रहता है।

२ श्वास-सस्थान (Respiratory system)—जिस प्रकार मनुष्य के शरीर मे फेफडे वायु मण्डल मे से प्राणवायु (Oxygen) खीचने और कावन-डाइआक्साइड गैस (Carbondioxide) बाहर निकालने का काय करते हैं, उसी प्रकार पशु के शरीर मे भी फेफडो और श्वास नलिका द्वारा यह क्रिया होती है। क्योंकि वायु सभी जीवो के लिए जीवन का एक आवश्यक तथा प्रमुख आधार है। पशुओ के शरीर मे श्वासनली के ऊपर एक नली और होती है, जो पशु के पानी पीते समय ऊपर को उठ जाती है। इसे स्वर यन्त्र कहते हैं। नाक द्वारा वायु खीचे जाने पर फैरिक्स (Phyrynx) और लैरिक्स (Lrynx) मे जाती है। इन दोनों से ही मिलकर स्वर यन्त्र अथवा (Copsoice Eox) बना है। उसके बाद वायु बडी श्वास नलिका (Trachea) या टेंटुआ म पहुचती है। धूल के वे कण जो नाक के बालों आदि से नही रुक पाते हैं, फैरिक्स की लार मे फंस जाते हैं। आगे चलकर यह नली दो मार्गों में बट जाती है। एक भाग पशु के दायें फेफड़े में पहुचता है दूसरा बायें फेफडे

दातो से धीरे धीरे चबा-चबा कर पीसता रहता है। इसके पश्चात वह पदार्थ आमाशय नम्बर दो (जिसे मधुछत्राकार (Reticulum) कहते हैं) मे जाता है। घोड़े जुगाली नही करते, अस्तु उन्हे अपना चारा पहले अपने मुह मे अच्छी तरह चबाकर तभी अन्दर ले जाना पड़ता है। यह आमाशय पहले आमाशय से एक चौडे मुख द्वारा जुड़ा होता है, और दूसरी ओर एक छोटे मुख द्वारा तीसरे आमाशय, जिसे अंग्रेजी मे Osman कहते हैं से भी जुड़ा होता है जो शरीर के दाई ओर चौथे आमाशय से कुछ ऊपर होता है। दूसरा आमाशय शरीर के मध्य मे पहले आमाशय के कुछ नीचे होता है। चौथा आमाशय Abomen Sum अथवा जिसे वास्तविक पेट (True Stomach) कहा जाता है। तीसरे आमाशय से चौथे आमाशय मे आने पर खाद्य पदार्थ कुछ समय तक क्षारयुक्त रहते हैं और फिर कीटाणु चीनी को बदलकर लक्टिक एसिड (Lactic acid) बनाता है। इस प्रकार पशु शरीर मे चार आमाशय (मेदे) होते हैं। यही कारण है कि पशुओ को मेदे की बीमारियां प्राय नही होतीं क्योकि भोजन को पचाने का काम क्रमश चारो मेदे करते हैं और उन पर अधिक दबाव या जोर नही पड़ता। प्रत्युत वे स्वाभाविक ढग से अपना काम करते रहते हैं।

आँतें (Intestines)—मनुष्य के शरीर की भांति ही पशुओं के शरीर मे भी सिकुड़ी हुई आँतें रहती हैं, जो आमाशय द्वारा पचाये हुए भोजन म से रस चूसती हैं और पदार्थ के रहे-सहे अश को और पचाती हैं। आँतें दो प्रकार की होती हैं। छोटी आतें और बड़ी आतें। दोनो प्रकार की आतो के मध्य मे जोडने वाली एक तीसरी आंत (Caecam) होती है, जो गो-पशुओ म छोटी किन्तु घोडो मे बहुत बड़ी होती है। कारण—गो पशुओं मे जो काम मासा (Rumen) करती है, घोडों में यही काम Caecam करती है आहार म से समस्त शरीरोपयोगी तत्व खीचकर आँतें शेष फोक को गुप्त भाग से गोबर या लीद के रूप में बाहर निकाल देती हैं।

कलेजा या यकृत (Liver)—आमाशयों व आंतों द्वारा प्राप्त किये बहुरस कलेजे में जाकर रक्त का रूप धारण करते हैं। यकृत में रक्त बहने के पश्चात्

अनुपयोगी, दूषित या अवशिष्ट रस रह जाता है, वह यकृत् की निचली सतह मे बनी एक थैली मे जमा होता रहता है, जिसे गाल ब्लेडर (Gall Bladder) कहते हैं। हिन्दी मे इसे पित्ताशय कहते हैं। दूसरे कलेजे का मुख्य काम रक्त मे मिश्रित अनुपयोगी अथवा दूषित अणुओ व यूरिया व यूरिक एसिड (uria and uric acid) जैसे पदार्थों को खीचकर रक्त को शुद्ध रूप म प्रवाहित रखना भी होता है। पशुओ के शरीर मे कलेजा दाई ओर डायाफ्राम (Diaphragm) के निकट होता है, जो दूसरे और तीसरे आमाशय को स्पर्श करता है।

इस सस्थान के काय को सुचारु रूप से चलाने के लिए कुछ अन्य तत्व भी शरीर मे विद्यमान रहते हैं, यथा—लैक्टिक ऐसिड (Lactic acid), गैस्ट्रिक जूस (Gastric juice), कैजीन (cagine), पैप्टीन (paptone), रेनेट (Rennet), रेनीन (Renin), कैसीनोजेन (casinogen) इत्यादि। इस प्रकार इन तत्वो व उक्त अगो द्वारा इस सस्थान का काय ठीक प्रकार से सम्पन्न होता रहता है।

२ श्वास-सस्थान (Respiratory system)—जिस प्रकार मनुष्य के शरीर मे फेफडे वायु मण्डल मे से प्राणवायु (Oxygen) खीचने और कार्बनडाइआक्साइड गैस (Carbondioxide) बाहर निकालने का कार्य करते हैं, उसी प्रकार पशु के शरीर मे भी फेफडो और श्वास नलिका द्वारा यह क्रिया होती है। क्योंकि वायु सभी जीवो के लिए जीवन का एक आवश्यक तथा प्रमुख आधार है। पशुओ के शरीर मे श्वासनली के ऊपर एक नली और होती है जो पशु के पानी पीते समय ऊपर को उठ जाती है। इसे स्वर यन्त्र कहते हैं। नाक द्वारा वायु खीचे जाने पर फैरिक्स (Phyrynx) और लैरिंक्स (Lrynx) मे जाती है। इन दोनो से ही मिलकर स्वर यन्त्र अथवा (Copsoice Eox) बना है। उसके बाद वायु बडी श्वास नलिका (Trachea) या टेटुआ मे पहुचती है। धूल के वे कण जो नाक के बालो आदि से नही रुक पाते हैं, फैरिक्स की लार मे फंस जाते हैं। आगे चलकर यह नली दो भागों में बट जाती है। एक भाग पशु के दायें फेफडे मे पहुचता है दूसरा बायें फेफडे

में। फेंफड़ो मे पहुचकर यह नली धागे के समान पतली हो जाती है और इसके ऊपर फेफड़े की बारीक झिल्ली चढी रहती है। इस झिल्ली के ऊपर अति सूक्ष्म रक्त शिराएं बहती रहती हैं।

श्वास के साथ वायु म जो ऑक्सीजन फेफड़ो म पहुचती है, वह उसी झिल्ली से छनकर रक्त शिराओ मे चली जाती है और रक्त को शुद्ध तथा गतिशील बनाती रहती है तथा उस रक्त मे जो अम्ल गैस (Carbon Dioxide) रहती है, वह भी उसी झिल्ली द्वारा छनकर श्वासनली मे होकर बाहर निकलती रहती है। फेफड़े हर समय स्पन्दन करते रहते हैं, क्योकि ये स्पज के समान होते हैं, जो स्वाभाविक रूप से सिकुड़ने तथा फैलते हैं। इनके स्पन्दन से ही श्वास का आवागमन निर्बाधगति से होता रहता है। पशुओ के दोनो फेफड़े बराबर नही होते। दाया फेफड़ा बायें फेफड़े से तौल मे आधा तथा आकार मे भी छोटा होता है। ये गहरी दरारो द्वारा पिण्डो मे बटे रहते हैं। इस प्रकार शरीर मे यह श्वास-सस्थान अपना कार्य करता रहता है।

३ मलमूत्र वाहक सस्थान (Excretory System)—मानव शरीर की भांति ही पशुओं के शरीर मे भी भोजन व पानी के अवशिष्ट सारहीन अश तथा शरीर की गन्दगी को निकालने के लिए प्रकृति ने मलमूत्र वाहक सस्थान (Excretory System) का निर्माण किया है।

इस सस्थान के अन्तर्गत तीन मुख्य अवयव होते हैं —

(१) गुर्दे या मसाने—पशु के शरीर मे दो गुर्दे होते हैं, जो सेम के बीज की आकृति के होते हैं और प्रत्येक गुर्दा 20 से 25 तक मासपिण्डो से युक्त होता है। ये गुर्दे कमर के ऊपरी भाग मे होते हैं, जिनमे मूत्रवाहिनी नलिका निकलकर मूत्रालय (Urinary Bladder) तक जाती है। यह इस सस्थान का दूसरा अवयव है। तीसरा अवयव मूत्रेन्द्रिय है, जिसे (uretor) कहते हैं। गुर्दा सुषुम्ना शीर्षक अगल-बगल यानी सीने के दाई व बाई ओर रहता है। मूत्र अर्थात् जल का अनुपयोगी अश मूत्रवाहिनी नलियो द्वारा गुर्दे मे मूत्राशय मे जमा होता है और फिर समयानुसार मूत्रेन्द्रिय द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है। इसी प्रकार खाद्य का अनुपयोगी अश, जो ठोस रूप मे होता है,

गुदा भाग से गोबर, लीद अथवा मेंगनी की शक्ल मे निकल जाता है। स्वस्थ अवस्था मे पशु प्राय 5-6 बार मलमूत्र त्याग करता है। इन दो मलमूत्र ग्राहक अवयवो के अतिरिक्त शरीर का विषैला अश पानी द्वारा बाहर निकालने के लिए खाल म सफेद ग्रथिया तथा छिद्र भी काय करते हैं और छिद्रो द्वारा पसीने के साथ शरीर का विषाक्त मल निकलता रहता है। पशुओ के शरीर को भी खूब रगड कर सफाई करनी चाहिए ताकि उनकी खाल के छिद्रो पर जमी धूल, मिट्टी आदि साफ होती रहे और वे बन्द न हो जायें। वर्ना पशु जल्दी बीमार हो जाते हैं।

४ रक्त सचारक सस्थान (Circulatory System)—

रक्त-सचार सस्थान का केन्द्र हृदय होता है और रक्त को शरीर के एक भाग से दूसरे भाग तक पहुचने का माध्यम नसे होती हैं, जिन्हे नाडिया भी कहते हैं। पशु के शरीर मे हृदय यानी दिल शरीर के निचले भाग मे छाती के सम्मुख दोनों फेफडो के मध्य मे होता है, जो दाई ओर की अपेक्षा बांइ ओर कुछ निकला रहता है। पशु के चुपचाप खडे रहने की स्थिति मे यह कुहनियो के मध्य मे अवस्थित रहता है। पशुओ के दिल और द्वितीय आमाशय जिसे मधुछत्राकार कहते हैं, के मध्य थोडा सा ही अन्तर होता है, इसीलिए यदि पशु कोई नुकीली वस्तु खा लेता है और वह दूसरे आमाशय तक पहुच जाती है, तो वह नुकीली वस्तु उसके हृदय मे जाकर चुभ जाती है और पशु की तत्काल मृत्यु हो जाती है। इसी प्रकार पशु के आमाशय मे यदि कारण विशेष से कोइ रोग उत्पन्न हो जाता है तो वह हृदय की स्थिति को भी शीघ्र ही प्रभावित करता है। पशु का हृदय स्वाधीन मास पेशियों का बना, अन्दर से खोखला और बाहर से एक पर्दे से ढका होता है जिसे पेरीकार्डियम (Pericardium) कहते हैं। इसमे चार कोठरिया होती हैं, दो बाई ओर, दो दाइ ओर जो अपनी-अपनी ओर के दूसरे कोठे से वाल्व द्वारा सम्बन्धित होते हैं, किन्तु एक ओर की कोठरियो का दूसरी ओर की कोठरिया से प्रत्यक्षत. कोई लगाव नही होता।

हृदय का मुख्य काय रक्त को खीचकर शुद्ध करके उसे पुन बाहर

निकालकर नाडियो व नसो द्वारा शरीर के अग प्रत्यग मे पहुचाना होता है, इसीलिए वैज्ञानिको ने हृदय को रक्त का पम्पिग स्टेशन (Pumping Station of Blood) कहा है। इसकी मास पेशिया प्रतिक्षण सिकुडती तथा फलती रहती हैं और उनके इस सिकुडने व फैलने मे ही रक्त के आने और बाहर जाने के कार्य सम्पन्न होते हैं। जिस समय हृदय का सिकुडना व फलना बन्द हो जाता है अर्थात् हृदय अपना कार्य बन्द कर देता है, उसी क्षण मनुष्य हो या पशु, उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार जीवन को गतिशील रखने के लिए हृदय बहुत महत्वपूर्ण अग है।

हृदय से शुद्ध हुआ रक्त शरीर के अन्य अवयवो तक पहुचाने और दूषित रक्त को शरीर के विविध अगो से एकत्रित कर हृदय तक शुद्ध होने के लिए पहुचाने का काम पृथक-पृथक नाडियां करती हैं, क्योंकि शुद्ध रक्त ही प्रत्येक अग को शक्ति प्रदान करता है और तभी वे सब ठीक प्रकार से अपना-अपना काम करते हैं। इन रक्तवाहिनी नाडियो को वैज्ञानिको ने तीन भागो मे बांटा है—(१) धमनी (Artery), (२) शिराए (Veins), और (३) रासायनी नाडिया (Lymphatics)। इनके अतिरिक्त शरीर में जो अन्य सहायक नाडियां या नसें होती हैं वे सूक्ष्म होती हैं। उन्हें अग्रेजी मे (Nerves) कहते हैं। धमनी नाडिया दिल द्वारा शुद्ध किए गए रक्त को सब अगो तक पहुचाने का काम करती हैं और शिरायें शरीर के अगों से तथा फेफड़ों व जिगर से रक्त को शुद्ध होने के लिए हृदय तक पहुचाती हैं। रासायनी नाडियां रक्त के दूषित तत्वो को खीचने का काम करती हैं। धमनी व शिरा नाडियों को परस्पर जोडने वाली सूक्ष्म रक्त नाडियों को केशिकाएं (Capillaries) कहते हैं।

स्वस्थ पशु की धमनी नाडी की चाल एक मिनट म ३० व ४० रहती है, किन्तु रोगी पशु की नाडी की गति तेज हो जाती है। इसी प्रकार स्वस्थ पशु का टेम्परेचर सामान्यत १०२ फारनहीट रहता है। पशु का तापमान और नाडी की गति पूछ के नीचे गुदा भाग के पास देखी जाती है।

५—स्नायु-संस्थान—(Nervous System)

मनुष्य अथवा पशु के शरीर मे जितनी भी ज्ञानेन्द्रियां होती हैं, वे सब

इसी सस्थान के अन्तर्गत आती तथा काम करती हैं। जिस प्रकार रक्त सस्थान के अन्तर्गत काय करने वाली धमनियो, शिराओ और केशिकाओ का समस्त शरीर मे जाल सा बिछा होता है, उसी प्रकार उज्ज्वल धागे के समान पतली और सूक्ष्म स्नायु नाडियो का भी घना जाल फैला है। रक्त सचार की नाडिया हृदय से सम्बन्धित और निर्देशित होती हैं। उसी प्रकार स्नायु तन्तुओ का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है और ये उसी के निर्देशानुसार काम करती हैं। इन्ही स्नायु तन्तुओ द्वारा मस्तिष्क को विद्युत् गति से भी अधिक तीव्र गति से हर बात की सूचना तत्क्षण मिल जाती है और मस्तिष्क तत्काल शरीर के विभिन्न अगों को तदनुकूल काय करने व सजग होने का निर्देश कर देता है। साथ ही शरीर मे कुछ अग ऐसे भी हैं, जो न तो हृदय द्वारा निर्देशित होकर काय करते हैं और न मस्तिष्क द्वारा। वे स्वतन्त्र रूप से बिना इच्छा या आवश्यकता के भी अपना काम स्वतन्त्र रूप से व निर्बाध गति से करते रहते हैं। श्वास क्रिया, पाचन-क्रिया, पसीना निकालना आदि क्रियाए ऐसे ही स्वतत्र अगो के काय हैं।

पशुओ के स्नायु तन्तु अथवा ज्ञानेन्द्रियाँ भी कितनी तीव्र गति से काय करती हैं, यह सहज ही देखा जा सकता है। पशु के शरीर पर कही भी कोई मक्खी या कीडा बैठ जाये, तो मस्तिष्क को तुरन्त सूचना मिल जाती है और उसके निर्देश से पशु की पूछ फौरन उसे उडा देती है। यह सब क्रिया स्वत और क्षण मात्र मे पूरी हो जाती है।

मस्तिक यानी Brain के जो इस सस्थान का मुख्य निर्देशक केन्द्र है, चार भाग होते हैं —

(१) बहत मस्तिष्क (Cerebrum)

(२) लघु मस्तिष्क (Cerebellum)

(३) सेतु (Pons)

(४) सुषुम्नाशीर्षक (Medulla)

मस्तिष्क के ये चारा भाग पृथक्-पृथक विभाग समझिए, जो अलग अलग कार्यों के लिए बने हैं। परीक्षणो से ज्ञात हुआ है कि बुद्धि, भाव, इच्छा आदि

बृहत् मस्तिष्क से ही सम्बन्धित होते हैं। पीड़ा, सुख, दुःख, शीत, ग्रीष्म, वर्षा आदि का शरीर पर प्रभाव स्नायु तन्तुओं द्वारा तत्क्षण बृहद् मस्तिष्क को ही प्रेषित होता है और वहां से अंग विशेष का निर्देश दे दिया जाता है। यथा धूप, वर्षा आदि से रक्षा के लिए तत्काल पैरों को छाया की ओर चलने की आज्ञा हो जाती है और पशु चल देता है। डंडा आदि मारने की दशा में पैरों को तेजी से भागने का निर्देश दिया जाता है और पशु भाग खड़ा होता है। देखने, सुनने तथा सूंघने आदि से मस्तिष्क के पृथक्-पृथक् हिस्सों का पृथक् पृथक् सम्बन्ध होता है। एक विशेष बात और भी होती है कि बृहद् मस्तिष्क का बायां भाग शरीर के दायें भाग के अंगों का नियन्त्रण करता है और दायां भाग शरीर के बायें भाग के अंगों का नियन्त्रण संचालन करता है।

दूसरा लघु मस्तिष्क (Cerebellum) अपेक्षाकृत बहुत छोटा और नीचे की ओर होता है। यह पशु को खड़े रहने तथा चलने फिरने के समय मदद देता इसमें खराबी आ जाने पर पशु चल फिर नहीं सकता।

तीसरा भाग सेतु (Pons) है, जो लघु मस्तिष्क के सामने पुल की भांति बना होता है और लघु मस्तिष्क के दोनों भागों को मिलाए रखता है। इसी से होकर बृहत् मस्तिष्क से आई हुई स्नायु नीचे की ओर जाती है और बायें व दायें भागों से आई हुई स्नायु नाड़ियां एक दूसरे को यहीं से पार कर दाएं बाएं भागों में पहुंचती हैं।

चतुर्थ भाग सुषुम्ना शीर्षक (Medulla) होता है। इसके नीचे सुषुम्ना (Spinal cored) निकलती है। श्वास संचालन, रक्त-संचार तथा आहार को निगलने आदि क्रियाएं इसी के अन्तर्गत होती हैं। मस्तिष्क के इस प्रमुख भाग में आघात लग जाने की दशा में मनुष्य या पशु की तत्काल मृत्यु हो जाती है।

६ अस्थि-संस्थान (Bones structure)—इसे संस्थान का आधार संस्थान भी कहते हैं, क्योंकि इसी पर किसी भी पशु या मनुष्य का शरीर खड़ा रहता है। शरीर के अन्दर जितनी भी हड्डियां हैं, वे सब इसी के अन्तर्गत हैं। हड्डियों में अति दृढ़ता व भार वाहन शक्ति होती है। यदि शरीर में हड्डियों का यह मजबूत ढांचा न हो, तो जीवमात्र का शरीर वायु के दबाव

से ही मांस का लोथडा बनकर एक ही स्थान पर धरा रह जाये और शरीर के अन्य समस्त अग बेकार व निष्क्रिय हो जायें। इस से स्पष्ट सिद्ध होता है कि शरीर रचना मे हड्डियों का कितना महत्व है। हड्डिया ही शरीर के प्रत्येक अवयव को सुरक्षित रखती हैं। उन्हें अपना काय स्वतत्र ढग से करने के योग्य बनाए रखती हैं। यहाँ तक कि सूक्ष्म से सूक्ष्म नाडियाँ भी इस आधार के कारण ही बाह्य दबाव व आघात से सुरक्षित रहती हैं। साथ ही अपनी भार-वहन क्षमता के कारण हड्डियाँ ही पशुओ को यातायात कृषि आदि के लिए इतना उपयोगी बनाती हैं।

हड्डियाँ कई प्रकार की होती हैं, जिन्हें प्रमुख रूप से निम्न ७ वर्गों मे विभक्त किया गया है —

१ चपटी व चौडी हड्डिया (Flat Bones)—इसमे कन्धे की हड्डियाँ तथा खोपडी की हड्डिया आती हैं। जिसे अग्रेजी म स्कल (Skull) कहा जाता है। दायाँ और बायाँ माथा बनाने वाली चपटी हड्डियाँ इसी स्कल का भाग हैं जिन्हें फ्रन्टल बोन्स (Frontal Bones) कहते हैं। कधे की हड्डी (Osteonominet or Pelvic Bone or Pelvic Girdle) में तीन हड्डियाँ होती हैं जिन्हें इलियम (Iliem), इस्कियम (Ischium) और प्यूबिस (Pubis) कहते हैं।

२ लम्बी हड्डिया (Long Bones)—इस वर्ग मे कमर से लेकर घुटन तक की जाघों वाली हड्डियाँ (Feunurs) जाँघ से पावों तक की हड्डियाँ (Tibias) आग वाले पाँवो की ह्यूमेरस तथा अलना (Humerus and ulna Bones) हड्डियाँ तथा घुटने से पाँव के जोड तक की हड्डियाँ (Matacarpals) इत्यादि लम्बी हड्डियाँ आती हैं।

३ फलने वाली हड्डियाँ (Elongated Bones)—इस वग में पसलियाँ (Ribs) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जो पशुओं के शरीर मे १३ जोडी पसलियाँ होती हैं।

४ अव्यवस्थित हड्डियाँ (Irregular Bones)—इस वग मे एक तो गदन की सात हड्डियाँ आती हैं जिन्हें (Cervical Vertbral) कहते हैं। दूसरी

मुह से कमर के अगले भाग तक १३ अन्य हड्डियां होती हैं, जिन्हें (Dorsal Vertibral) कहते हैं। तीसरी कमर की पाँच हड्डिया (Lumber Vert ibral) और चौथी पुठ्ठे की हड्डी (Sacrum) होती हैं, जो पांच हड्डिया एक-दूसर से सटी रहकर एक हड्डी के रूप मे रहती हैं। इन के अतिरिक्त पाँचवी पूछ की हड्डिया भी इसी वग मे आती हैं। इनकी सख्या १८ होती है और ये पुठ्ठे से लेकर पूछ के बालो के गुच्छे तक अव्यवस्थित ढग से फैली हुई होती हैं। इन्हे Coccigial Vertebral कहते हैं।

५ छोटी हड्डियाँ (Short Bones)—इस पाँचवें वग मे घुटने तथा टहुने की हड्डियाँ (Knee or Carpus Bones) ऊपर नीचे दो कतारों में होती हैं। ऊपर वाली कतार मे चार हड्डियाँ और नीचे वाली मे दो होती हैं। दूसरी मुखे की सधि हड्डियाँ (Fetlock Joints) होती हैं, जिनमे दो मुखे के ऊपर (Pastern Bonee) होती है। इनमे पैस्टन ज्वाइन्ट (मुखे के ऊपर वाली) मे दो हड्डियाँ होती हैं। साथ ही खुर के भीतर का जोड भी इसी वर्ग की हड्डियो मे आता है, जिसे (Coffin joint) कहते हैं। इनके अतिरिक्त पिछले पाँव के घुटने के जोड की हड्डी (Patella) जो कि (Stifle joint) बनाती है, तथा पिछले घुटनो के जोड की (Astraglus) तथा (Oscalcis) दो हड्डियाँ होती हैं 'जिन्हें (Small hock Bones) भी कहते हैं।

६ सीने की हड्डी (Sterrum)—जो कोमल अस्थि (कार्टीलेज) की बनी होती है और सीने का धरातल (Brisket and floor of chest cavity) बनाती है।

७ अन्य हड्डियाँ—उपरोक्त प्रमुख हड्डियों के अतिरिक्त कुछ अन्य हड्डियाँ भी होती हैं, यथा—

नाक की दो हड्डियाँ—(Right nasal and left nasal)
आँख के नीचे की हड्डियाँ—(Lachrymal)
पुट पुटी के ऊपर की हड्डी—(Temporal bone)
ऊपरी तालू की हड्डी—(Palatine bone)
नीचे के जबड़े की हड्डी—(Mandible) इत्यादि-इत्यादि।

८—प्रेरक-संस्थान—(Inspirative System)

यह संस्थान शरीर के अंग प्रत्यंग को प्रेरणा, उत्तेजना तथा शक्ति-प्रदान करके उसे क्रियाशील रखता है। जिगर, गुर्दे आदि शरीर की ऐसी ग्रन्थियां हैं, जो उनमें बने हुए रस तत्त्वों को नालियों द्वारा विभिन्न अंगों में भेजते हैं, किन्तु उनके अतिरिक्त शरीर में कुछ ऐसी ग्रन्थियाँ भी होती हैं, जो कि नली द्वारा रस नहीं निकालतीं, किन्तु उनसे भी रस निकलकर रक्त में मिलकर अन्य अंगों को प्राप्त होता है। इन्हें अंग्रेजी में (Ductless glands) कहते हैं। इनके रस ही शरीर को प्रेरणा व उत्तेजना प्रदान करते हैं।

इस प्रकार की ग्रन्थियों में प्रमुख ये हैं —

(१) थाइरायड ग्रन्थियां—(Thyroid glands)

(२) थाईमस ग्रन्थियां—(Thymus glands)

(३) सप्रारिनल या एड्रीनल ग्रन्थियां—(Suprarenal or Adrenal glans)

(४) पिचूटरी—(Pituitary body)

(५) पिनियल ग्रन्थि—(Pineal glands)

(६) लिंग ग्रन्थि—(Gonds or sex glands)

इनमें प्रथम थाइराइड ग्रन्थियां गर्दन में वायु नली के किसी ओर वाणी यन्त्र के आस-पास होती हैं। ये शक्तिप्रदायक ग्रन्थियां हैं, जो शरीर के विकास, गति तथा नेत्र, चर्म, रस, दन्त आदि की चंचलता में वृद्धि व विकास में गति देती हैं।

सप्रारिनल ग्रन्थियां गुर्दे के आस-पास होती हैं। ये ग्रन्थियां हृदय को शक्ति तथा गति प्रदान करती हैं। इनका वजन एक से दो औंस तक, चौड़ाई साढ़े तीन इन्च तक और मोटाई आधा इन्च के लगभग होती है। नेटों की इन्हीं ग्रन्थियों से एड्रेनेलिन (Adrenalin) नामक औषधि बनाई गई है।

पिचूटरी एक इन्च व्यास के एक मांस के लोथड़े जैसी ग्रन्थि है, जो मस्तिष्क की पेंदी में सटी हुई अवस्थित है। इससे एक विशेष प्रकार का रस

प्रवाहित होता रहता है, जो मादा पशुओं के डिम्बाशय (Ovary) को शक्ति तथा जीवन प्रदान करता रहता है।

पिनियल ग्रंथि भी पियूटरी के सान्निध्य मे ही अवस्थित होती है और इस ग्रंथि से प्रवाहित होने वाला रस यौवनावस्था के विकास, जननेंद्रियो में स्फूर्ति व उत्तेजना, वाणी मे ओज तथा अग-अग में उत्साह पैदा करता है। इसी कारण इन सब ग्रंथियों को प्रेरक सस्थान कहा गया है।

प्रजनन-सस्थान (Generative or productivesystem)

चूंकि मानव जाति की भांति पशुओ मे भी नर और मादा दो जातिया होती है और इन दोनों की प्रजनन इंद्रियां अलग-अलग प्रकार की होती हैं, जो एक-दूसरे की पूरक होती हैं, और इन दोनो के पारस्परिक ससग से ही प्रजनन क्रिया सचालित होती है, इनमे से कोई भी एक जाति (नर या मादा) बिना दूसरी जाति की सहायता के प्रजनन नही कर सकती। जिस प्रकार पुरुष के बिना स्त्री और स्त्री के बिना पुरुष बच्चा पैदा नही कर सकता, उसी प्रकार पशु भी।

नर पशुओ प्रजनन-सस्थान—नर पशुओ के प्रजनन सस्थान मे निम्न छह इंद्रियां होती हैं —

(१) अण्डकोषो का बाह्य भाग (Scrotum)

(२) अण्डकोष (Testicles)

(३) शुक्रनाडी का छिद्र (Inguinal canal)

(४) शुक्रनाडी (Spermatic cord)

(५) लिंगेंद्रिय का बाह्य भाग (Prepuce)

(६) लिंगेंद्रिय (Penis)

इनमे अण्डकोषों के बाह्य भाग (Scrotum) मे सात तहें होती हैं—(१) चमड़ी (Skin), (२) सबक्यूटिस (Subcutis), (३) डारटस (Dartus) (४) परपुरा वैजीनेलिस (Purpura Vaginalis), (५) परपुरा रिफ्लेक्सा (Purpura Reflexa), (६) परपुरा एलबुजिनिया (Purpura Albuginia), ७ अण्डकोष का मूल भाग—(Substance of Testicle)।

अण्डकोष की चर्म थैली अण्डकोषो की बाह्य आघात से रक्षा करती है। अण्डकोषो में दो ग्रन्थिया होती हैं, जो शुक्र नाडियो के सहारे पशु के पिछले भाग मे दोनो जाँघो के मध्य आमाशय के नीचे लटकती रहती हैं। इन्ही नाडियो के साथ रक्त धमनियां तथा शिराए व केशिकाए आदि अण्डकोषो में पहुच कर उनका पोषण व निर्माण करती हैं। पशुओ के अण्डकोष प्राय· अण्डाकार (Oval Shape) होते हैं। इन अण्डकोषो मे ही शुक्र अथवा वीय बनता है, जो मादा पशु के गर्भाशय मे रज के साथ मिलकर गर्भाधान करता है। पशु को बधिया या अखता करने में उसकी शुक्र नाडी को चाप दिया जाता है, जिससे उसमे शुक्र का निर्माण रुक जाना है और अण्डकोष धीरे धीरे सूख जाते हैं।

शुक्रनाडी (Spermatle Cord) रस्सी के समान मजबूत होती है और इसी के सहारे दोनो अण्डकोष लटके होते हैं।

जाँघ की जड मे जो दो छिद्र होते हैं, जिनसे होकर शुक्रनाडी नीचे उतरता है और अण्डकोषो को थामे रखती है, इन्हें शुक्रनाडी उतरने के छिद्र (Inguinal Canal) कहते हैं। इन्ही छिद्रो द्वारा बछडो की कभी-कभी आंत उतर जाती है, जिसे (Inguinal Hernea) कहते हैं।

लिगेन्द्रिय का ऊपरी भाग पेशाब की नली के ऊपरी भाग को कहते हैं, यह लिंग के ढक्कन तथा मूत्र त्याग का काय करता है। मुख्य लिंगेन्द्रिय (Penis) जननेन्द्रिय है। इसकी लम्बाई व मोटाई भिन्न-भिन्न पाई जाती है। घोडे, गधे आदि की लिंगेन्द्रिय की लम्बाई सब से अधिक होती है। सांड, बैल आदि की मोटाई व लम्बाई उनकी अपेक्षा कम होती है। इस इन्द्रिय मे दो प्रकार की मासपेशिया प्रमुख होती हैं। एक लिंगेन्द्रिय को खडी करने वाली (Erector) और दूसरी सिकोडने वाली (Retractor) मांसपेशियां कहलाती हैं।

मादा पशुओं के प्रजनन सस्थान—मादा पशुओ के प्रजनन सस्थान के मुख्य अंग ये हैं —

(१) जननेन्द्रिय (Vulva), (२) जननेन्द्रिय नली (Vagina), (३) गर्भाशय

(Uterus), (४) डिम्बग्रंथियां (Ovaries), (५) थन (Mammal), (६) भगनासा (Clitoris)।

मादा पशुओं में जननेन्द्रिय सबसे पीछे पूछ के नीचे होती है, जिसम दो खड़े होठ से होते हैं, जिन्हें (Labia या Labiar Lips) कहते हैं। इन होठो के अन्दर ऊपर की ओर मटर के दाने सदृश भगनासा (Clitoris) होती है, जो अति सूक्ष्मग्राही होती है। योनि के निचले भाग मे एक छिद्र होता है, जिसे मूत्र नली कहते हैं।

जननेंद्रिय नली (Vagina or Vaginal) प्रजनन योनि तथा गर्भाशय को मिलाता है। इसकी लम्बाई १ से २ फुट तक होती है, जो पशु के आकार पर निर्भर है।

गर्भाशय (Uterus) वह अंग है, जिसमे गर्भाधान के उपरांत बच्चा बनता तथा विकसित होता है और जन्म के समय तक रहता है। गर्भाशय के मुख को Osuterus कहते हैं। यह मुख गर्भाधान के बाद बन्द हो जाता है और जन्म के समय पर ही पुन खुलता है। गर्भाशय डिम्ब मे तैयार होने वाला रज दो नलियो Fillopian Tubes द्वारा गर्भाशय मे जाता है और नर पशु के शुक्र से मिलकर गर्भ स्थापित करता है। गर्भाशय डिम्ब (Ovaries) दो होते हैं। यही मादा पशु के शरीर मे रज बनाते हैं।

थन (Mammal) गो पशुओ मे ऊपर स नीचे दोनो जाघो के मध्य होते है। ये चार ग्रन्थि कोषों मे विभक्त होते हैं और इन्ही मे दूध तयार होता है, जो दुहकर निकाला जाता है।

पशुओ की नाक, आख, कान आदि ज्ञानेन्द्रियां बहुत ही तीव्र सवेदनशील व अदभुत शक्ति से सम्पन्न होती हैं। पशु हिंसक जगली पशुआ, कसाईखानो अथवा विषैले घास, पौधो आदि को दूर से ही जान लेते हैं। अपने पालने वाले या दुहने वाले व्यक्ति को पशु सूंघ कर ही पहचानते हैं। साड गाय को सूघकर उसके गर्भिणी होने का बोध कर लेते हैं। इसी प्रकार पशुओं की आखें व कान भी बहुत तेज होते हैं। थोडी सी आहट पर ही कुत्ता सोते हुए भी तुरन्त सुन लेता है। अन्य पशु भी आहट को फौरन सुन लेते हैं। यहां तक की सांप आदि रेंगने वाले पशुओ की आवाज भी उन्हें सुनाई दे जाती है और चौकन्ने हो जाते हैं।

हवा या सर्दी गरमी सहन नहीकर सकता। परिणामस्वरूप मनुष्य के शरीर की शक्ति का दिन प्रतिदिन ह्रास होता गया। नाना प्रकार के रोग उसे घेरने व सताने लगे और शीघ्र ही वह युग आने वाला है कि बिना दवाइयों का सहारा लिये मनुष्य का एक वर्ष जी सकना भी कठिन हो जायेगा। सभ्यता का विकास मानव जाति के लिए एक अभिशाप बन गया है।

पशुओं का प्रकृति से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसका एक प्रमाण और भी है। वह है पशुओ मे ज्ञानेन्द्रियो की अदभुत शक्ति। इन ज्ञानेन्द्रियो की शक्ति के सहारे ही वे अपना हित, अहित, आहार की शुद्धता अथवा विषाक्तता, यहा तक कि सभावित रोग अथवा प्राकृतिक विपत्तियो तक का आभास उन्हें पहले ही हो जाता है। यदि किसी जगल या शहर मे प्लेग आदि कोई महामारी फैलने वाली होती है, तो बिलो में रहने वाले जीव-जन्तुओं को उसका पूर्वाभास हो जाता है और वे बिलों को छोड कर अन्यत्र भागने लगते हैं, ऐसा देखा गया है। हरिण, वन गाए, खरगोश, गीदड आदि भी जगलो को छोडकर भागने लगते हैं। घास चरते-चरते यदि कोई विषैला जगली पौधा आ जाता है, तो उन्हें उसकी गध दूर से पता चल जाती है और वे उसे छोडकर दूसरी ओर मुड जाते हैं। कई बार भूचाल आने, मकान गिरने आदि का पूर्वाभास हो जाने के कारण कुत्तों ने भौंक भौंक कर तथा मनुष्यों कपडे पकड-पकड कर बाहर खींचकर प्राकृतिक विपत्तियों से मानव जाती की रक्षा की है। कुत्ते, बन्दर आदि पशु आपस मे लडकर घायल हो जाते हैं, उनके खून भी बहने लगता है, घाव भी हो जाते हैं, किन्तु प्राय: कुत्ते जीभ से चाट चाट कर ही अपने शरीर के घावों को ठीक कर लेते हैं। उन्ह किसी डाक्टर के पास नही जाना पडता। इसी प्रकार बन्दरों के घाव भी स्वत: ठीक हो जाते हैं या उन्हें प्राकृतिक रूप से ऐसी जडी-बूटियों का ज्ञान होता है कि वे जगल से उन बूटियों को लाकर रगड लते हैं और उनके घाव शीघ्र ही भर जाते हैं। ये सब बातें पशुओं मे प्राकृतिक जीवन, उनके प्राकृतिक ज्ञान और उनकी अनुभूतियों की परिचायक है। इसी प्रसग म एक और घटना इलाहाबाद में मुझे एक कॉलिज के प्रिंसिपल महोदय ने सुनाई थी। वह इस प्रकार है—

कश्मीर के किसी गाव मे एक किसान रहता था, जो नियमित रूप से

प्रात काल अपने बाग मे जाया करता था और शाम को वापिस आ जाया करता। उस बाग के पेडो पर कुछ लगूर रहते थे। शनै शनै एक लगूर उस किसान से बहुत हिल मिल गया। किसान उसे नित्य अपने खाने मे से रोटी देने लगा और उसे खूब प्यार करने लगा।

सयोगवश एक दिन उस किसान को ज्वर हो गया और वह उस दिन बाग म नही जा सका। वृद्धावस्था के कारण बुखार ने उसे ऐसा दबाया कि कई दिन तक वह चारपाई से भी नही उठ सका और हालत दिन प्रतिदिन गिरते गिरते अन्त मे वह मरणासन्न अवस्था मे पहुच गया। उधर लगूर बाग मे प्रतिदिन उदास रहकर सुबह से शाम तक उस किसान की प्रतीक्षा करता रहता। जब वह कई दिन तक नही आया तो लगूर उसके पैरो के निशान सूघता सूघता उसके घर जा पहुचा। किसान को चारपाई पर मरणासन्न पडा देखकर लगूर प्यार से उससे लिपट गया। किसान के घर वाले इस घटना को देख अवाक् रह गए। उधर किसान भी अपने प्यारे लगूर को देखकर बडा खुश हुआ और उसने उसे रोटी मगाकर खाने को दी। उसके बाद उस लंगूर ने किसान के सारे शरीर को सूघा, हाथ फेरा और इस प्रकार परीक्षा करने लगा मानो कोई डाक्टर हो। पूरी तरह परीक्षा करने के बाद वह भागा भागा जगल मे गया और न जाने कौन-सा फल तोड कर ले आया। उस फल को लेकर अब लगूर को पुन वापस आते उसके घर वाले व गाव के अन्य लोगों ने देखा, तो उनके आश्चय व उत्सुकता का पारावार न रहा। लगूर ने वह फल लाकर जबदस्ती किसान के मुह मे ठूस दिया। किसान उसे खा गया और लगूर पुन बाग में लौट गया।

इधर किसान को एक-दो दिन तक तेज बुखार चढ़ा। लेकिन तीसरे दिन वह बिल्कुल रोगमुक्त और स्वस्थ हो गया और चलने-फिरने मे भी समथ हो गया। यहां तक कि एक सप्ताह के अन्दर तो उसका काया पलट हो गया। उसे ऐसा लगने लगा मानो वह बुढ़ापे से निकल कर पुन जवानी मे आगया। अन्ततोगत्वा उस किसान ने तीन शादियां और की और कई वर्ष तक जीवित

रह कर अपनी तीनों पत्नियो को सन्तुष्ट रखते हुए सुखमय जीवन बिताया।

इस घटना के पश्चात् उस किसान ने तथा अन्य लोगो ने वैसे फल की बहुत खोज की, किन्तु व असफल रहे। इन सब बातो से प्रकट होता है कि पशुओ का प्राकृतिक ज्ञान कितना बढा चढा होता है। इसी कारण वे बहुत कम बीमार पडते हैं और अधिक स्वस्थ व हृष्टपुष्ट रहते है।

वैज्ञानिको द्वारा ध्यानपूवक अध्ययनक रने से यह निष्कष निकला है कि पशुओं का स्वास्थ्य मुख्य रूप से निम्नलिखित 8 बातो पर आधारित है —

(1) वायु (2) जल (3) प्रकाश (4) आहार (5) स्वच्छता (6) श्रम (7) विश्राम और (8) स्वच्छन्दता।

यहा हम इस विषय पर कुछ विस्तार से प्रकाश डालना आवश्यक तथा उपयोगी समझते हैं, ताकि पशु पालन मे रुचि रखने वाले बन्धु पशु स्वास्थ्य के लिए इनके महत्त्व को अच्छी तरह समझ लें और उनके द्वारा पाले जाने वाले पशु स्वस्थ रह सकें।

वायु (Air)

शुद्ध वायु न केवल पशुओ के लिए प्रत्युत जीव मात्र के लिए जीवन का प्रमुखतम आधार है, यहां तक कि पेड, पौधे व जल मे रहने वाले जीव जन्तु भी किसी न किसी प्रकार वायु ग्रहण करके ही जीवित रहते हैं। आज के वैज्ञानिक इन सब बातों को सप्रमाण सिद्ध कर चुके हैं। पृथ्वी के जीवमात्र वायुमडल मे से ऑक्सीजन व नाइट्रोजन (Oxygen and Nitrogen) खींचते रहते हैं। पानी के जीव जन्तु पानी मे घुली ऑक्सीजन खीचकर जीवित रहते हैं और अपने शरीर से कावनडाइऑक्साइड को निकालते रहते हैं। पेड-पौधे तथा वनस्पतिया कावनडाइऑक्साइड को वायुमडल में से खीचते रहते है क्योकि इन के लिए वही प्राणवायु है और वे जीवधारियो की प्राणवायु आक्सीजन को छोडते रहते हैं। इस प्रकार प्रकृति ने जीवधारियों तथा वनस्पतियो को एक दूसरे के जीवन के आधार का पूरक बनाकर ऐसा आश्चयजनक कौशल और सतुलन स्थापित किया है कि जीवन के लिए नितान्त आवश्यक इस तत्त्व का अनन्त काल तक कभी अभाव न होने पाए और सृष्टि चलती रहे, क्योंकि

न तो वनस्पतियों का विनाश हो सकता है और न जीवमात्र का। वे दोनों सदा ही एक-दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति करते रहते हैं और करते रहेंगे।

वायुमण्डल में ऑक्सीजन, नाइट्रोजन तथा कार्बनडाइऑक्साइड आदि गैसों का सम्मिश्रण रहता है। ऑक्सीजन अत्यधिक ज्वलनशील होती है। अकेली ऑक्सीजन भी घातक सिद्ध होती है। यदि वायुमण्डल में उसके साथ नाइट्रोजन गैस न होती तो उस दशा में विश्व के किसी भी कोने में आग जलाते ही सारा विश्व धू धू करके जल उठता।

मनुष्य, पशु आदि जीवधारी नाक द्वारा श्वास क्रिया में वायुमण्डल से आवश्यकतानुसार वायु खींचते रहते हैं, शरीर के अन्दर ऑक्सीजन तथा नाइट्रोजन तो जल्द हो जाती है और कार्बनडाइऑक्साइड निःश्वास के साथ बाहर निकल जाती है। उस कार्बनडाइऑक्साइड को पेड़ पौधे पत्तियों के छिद्रों द्वारा खींच लेते हैं और वायु के शेष भाग ऑक्सीजन को छोड़ते अथवा बाहर निकालते रहते हैं। यह क्रम निरन्तर चलता रहता है।

ऑक्सीजन हमारे शरीर में बड़े बड़े काम करती है, जिनमें फेफड़ों को गतिशील रखना, रक्त शुद्ध करना, पाचन क्रिया को ठीक प्रकार से संचालित करना तथा विषैले तत्त्वों को शरीर से बाहर निकालना आदि प्रमुख हैं। पशुओं के शरीर में भी वह उसी प्रकार काम करती है और उनके लिए भी उतनी ही आवश्यक तथा उपयोगी है। मनुष्यों अथवा पशुओं के रहने का स्थान जितना ही खुला हुआ, हवादार तथा पेड़ पौधों व वनस्पतियों से घिरा हुआ होगा, उतनी ही उसे अधिक शुद्ध वायु प्राप्त हो सकेगी। तंग, अंधेरी, बन्द और गन्दी कोठरियों में बांधने से पशु शीघ्र ही रोगी हो कर मर जाते हैं। घनी आबादी वाले शहरों में तंग कोठरियों में रहने वाले गरीब लोग अक्सर बीमार रहते हैं। रोगी पशुओं के लिए तो शुद्ध वायु की और भी आवश्यकता है। जिस ओर पशु का मुंह हो, उधर कोई छोटी-सी खिड़की आदि होनी चाहिए, ताकि उसे शुद्ध वायु मिलती रहे। किन्तु ध्यान रहे, बीमार पशु को हवा के तीव्र झोंकों से बचाना आवश्यक है। ऐसा प्रबन्ध करें।

जल (Water)

प्राणिमात्र के लिए पानी जीवन का एक अति आवश्यक आधार है,

जिसके बिना वह जीवित नही रह सकता। वैज्ञानिकों ने परीक्षणों द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि शरीर मे दो तिहाई भाग जल का होता है। इसीलिए प्रकृति ने ससार के प्रत्येक स्थल पर किसी न किसी रूप मे जल का प्रबन्ध किया है। यहा तक कि पृथ्वी के नीचे भी जल ही जल भरा है, पहाडो के गर्भ मे भी जल पाया जाता है, और नदियो तथा समुद्रो के रूप मे भी जल की अपार राशि प्राप्त है। इतना ही नही, हरी शाक सब्जिया, पेड़ों पत्तों और वायुमण्डल मे भी हर समय जल समाया रहता है, जो भोजन तथा श्वास द्वारा हमारे शरीर मे पहुचता रहता है। प्रकृति की अद्भुत लीला देखिए कि उसने केवल जल आदि तत्त्व ग्रहण करने का ही प्रबन्ध नही किया, अतिरिक्त अथवा अनुपयोगी मात्रा त्याग करने के लिए भी उसने समुचित प्रावधान रखा है। मल मूत्र, पसीने आदि द्वारा हर समय जल शरीर से निकलता भी रहता है। जब शरीर मे जल की थोड़ी-सी भी कमी होती है तो तुरन्त हमे प्यास लगती है और हम पानी पीकर उसे शान्त करते हैं। यदि यह कमी पूरी न की जाये तो शरीर का रक्त गाढ़ा होकर जम जाये। रक्त सचार क्रिया को नियमित व सुचारु रूप से चलाने के लिए पानी महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करता है। यदि कभी किन्हीं विशेष परिस्थितियों में फसकर किसी व्यक्ति अथवा पशु आदि प्राणी को पानी पीने को नहीं मिल पाता, तो कुछ घण्टों के उपरान्त ही उसका खून गाढ़ा होने लगता है, रक्त का सचार रुक जाता है, मांसपेशियां सूखकर ऐंठने लग जाती हैं और अन्त में पानी के अभाव मे उसका प्राणान्त हो जाता है। बिना भोजन के तो मनुष्य कई दिन जीवित रह सकता है किन्तु पानी के बिना वह कुछ घटो से अधिक जीवित नहीं रह सकता। हैजा आदि महामारियों में जब उल्टी तथा दस्तों द्वारा शरीर से जल की मात्रा तेजी से निकलती है, तो डाक्टर उसकी कमी को पूरा करने के लिए इन्जक्शनों द्वारा सैलाइन वाटर शरीर में पहुचाते हैं। अन्यथा वे रोगी को बचा नहीं सकते। क्योंकि मुख द्वारा पिलाया हुआ पानी रोगी को नहीं पचता और वह उल्टी द्वारा तत्काल निकल जाता है।

बेचारे पालतू पशु पराधीन और मूक होते हैं। वे आप के बन्धन में बधे होते हैं और मुह से बोलकर अपनी इच्छा आपको नहीं बता सकते। इसलिए

उनकी भूख, प्यास आदि का स्वत ध्यान रखना व यथोचित समय पर उन्हें भोजन व पानी देना हमारा मानवीय धर्म तथा उत्तरदायित्व है। जो लोग निरीह पशुओं के प्रति लापरवाही बरतते हैं और उनकी आत्मा को कष्ट पहुचाते हैं, वे मानव नही, राक्षसों के समान हैं और जीवन में कभी सुखी नही रह सकते।

पशुओं के लिए केवल समय पर पानी पिलाना ही हमारा कर्त्तव्य नही है, वरन उन्हें पीने के लिए स्वच्छ जल प्रदान करना भी हमारा उत्तरदायित्व है। गांवो मे प्राय लोग इस बारे मे आलस्य करते हैं और पशुओ को जोहड़, पोखर या तालाब पर ले जाकर नाना प्रकार के कीटाणुओ से युक्त गन्दा पानी पिला लाते हैं। बेचारा पशु प्यास के मारे उसे पी तो लेता है, किन्तु अन्तरात्मा से वह प्रसन्न व सन्तुष्ट नही होता और प्राय बीमार पड जाता है। हमारा धर्म है कि हम पशुओ को कुए से निकालकर स्वच्छ जल पिलाए अथवा नदी पर ले जाकर साफ पानी पिलाए। बहने वाला पानी पोखरों के एक ही स्थान पर भरे रहने वाले जल की अपेक्षा अधिक स्वच्छ व निर्मल होता है। गन्दा पानी पिलाने से न केवल पशुओ के स्वास्थ्य पर ही प्रभाव पडता है, प्रत्युत दुधारू पशुओं के पेट मे पहुचे वे कीटाणु उसके दूध द्वारा हमारे बच्चो के स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डालते हैं, क्योंकि गांवो के बच्चे प्राय जगलो मे ही पशुओ का दूध निकालकर बिना उबाले कच्चा ही पी जाते हैं और वे कीटाणु आसानी से उनके शरीर मे पहुचकर तरह-तरह के रोग उत्पन्न कर देते हैं। इसीलिए डाक्टरों द्वारा यह सलाह दी जाती है कि दूध को हमेशा उबाल कर ही पीना चाहिए, ताकि यदि उसमे किसी प्रकार के कीटाणु हो तो वे मर जायें।

हमेशा ध्यान रखिए कि पशुओ को शुद्ध जल यथोचित समय पर पिलाते रहने से वे आनन्दित रहते है और उसके दूध की मात्रा 3 से 5 प्रतिशत तक तथा घी की मात्रा 7 से 10 प्रतिशत तक बढ जाती है, यह वैज्ञानिक परीक्षणो द्वारा प्राप्त निष्कर्ष है। इस प्रकार पशुओ का ध्यान रखना हमारे और आपके अपने ही हित मे है। साथ ही पशु बीमार भी कम पडते हैं मरते भी कम हैं और अधिक समय तक दूध देते हैं।

- पानी का उपयोग न केवल पीने के लिए होता है, वरन् स्वच्छता के लिए भी। मनुष्य को अपने शरीर की भांति ही पशुओं के शरीर की भी सफाई रखनी चाहिए और नियमित रूप से रगड़ रगड़ कर नहलाते धुलाते रहना चाहिए। यदि उनके शरीर की ठीक प्रकार से सफाई न रखी जायेगी, तो उनकी त्वचा के छिद्र बन्द हो जावेंगे और शरीर से इन छिद्रों द्वारा पसीने के साथ निकलने वाला विषांश बाहर नहीं निकल पाएगा। परिणामस्वरूप पशु शरीर में वह विष अंश नाना प्रकार के रोग उत्पन्न कर देगा। कम से कम तीसरे चौथे दिन अपने पशुओं को खुरारे से रगड़-रगड़ कर भली प्रकार से अवश्य नहलाना चाहिए। यदि पास में कोई नदी हो, तो नदी पर ले जाकर डेढ़-दो घंटे अच्छी तरह नहलाना चाहिए। इस प्रकार पशु अधिक स्वस्थ, हृष्ट पुष्ट व अधिक दूध देने वाले रहेंगे और उन पर किया गया परिश्रम निष्फल नहीं जायेगा।

सूर्य का प्रकाश (Sun Rays)

यह सृष्टि प्रकृति की रचना का एक अद्भुत कला-कौशल और विलक्षण नमूना है, जिसका सर्वांगीण भेद मनुष्य लाखों वर्षों में भी अभी तक नहीं पा सका है यद्यपि वह निरंतर इसकी खोज में लगा रहा है। सूर्य भी उसकी रचना की एक उतनी ही महत्वपूर्ण, आश्चर्यजनक और शक्ति सम्पन्न कृति है, जितनी वायु, जल आदि तत्व।- सूर्य के बिना भी इस पृथ्वी पर एक दिन तो क्या एक घंटा भी जीवित नहीं रह सकता। यदि पांच मिनट के लिए सूर्य हट जाये या ठण्डा पड़ जाये, उसका प्रकाश तथा गर्मी पृथ्वी पर न आ सके तो सारी पृथ्वी बर्फ से ढक जाये। कोई प्राणी अथवा वनस्पति जीवित न रह सके। कल्पना कीजिए प्रकृति की उस उदारता की, जिसने जीवन के लिए इतनी महत्वपूर्ण व नितान्त आवश्यक वस्तुएं हर गरीब, अमीर छोटे, बड़े, मनुष्य, पशु, पक्षी सबको इतनी प्रचुर मात्रा में और बिना मूल्य के सुलभता के साथ प्रदान की हुई हैं, इसे देखकर किस नराधम का सिर कृतज्ञता से नत न होगा।

सूर्य का प्रकाश और गर्मी प्राणिमात्र के जीवन व स्वास्थ्य के लिए ही आवश्यक नहीं वरन् वनस्पतियों के लिए भी परम आवश्यक है। खाद्यान्नों,

शाक-भाजियों तथा वनस्पतियों में स्टार्च, शर्करा, कार्बोहाइड्रेटस आदि पोषक तत्त्व सूर्य की किरणो से ही उत्पन्न होते हैं। हमारा शरीर भी गरमी से ही जीवित है। यदि शरीर की गरमी समाप्त कर दी जाये, तो क्षण भर मे ही शरीर प्राणहीन व निश्चल हो जाये। शरीर की इस गरमी को स्थायी रूप से बनाए रखने के लिए हम सब सूर्य की किरणो पर ही निर्भर हैं।

सूर्य की किरणो में एक और विशेष गुण होता है कि वे वायु को शुद्ध रखने और कीटाणुओ को नष्ट करने का भी महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करती हैं। प्राणियो के अनेक रोगो के कीटाणु सूर्य की किरणो के तेज से ही नष्ट हो जाते हैं, यहा तक कि तपेदिक जैसे रोगो के कीटाणु भी सूर्य की किरणों से नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार सूर्य के प्रकाश का महत्त्व समझ लेने के उपरान्त हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि निरीह पशुओं को भी हम ऐसे स्थान पर रखें, जहा यथोचित रूप से उन्हें धूप तथा प्रकाश मिलता रहे, जैसा मनुष्य अपने लिए एक से एक सुदर हवादार मकान बनाता है। इसका यह मतलब कदापि नही कि आप सारे सारे दिन गरमी के मौसम की चिलचिलाती धूप में ही पशुओ को बाधे रखें। अति किसी भी वस्तु की हानिकारक होती है। अत पशुओ को भी धूप उतनी ही सुलभ करानी चाहिए, जितनी वे आराम से सह कर प्रसन्न व स्वस्थ रह सकें। जब धूप की तेजी उन्हें सताने लगे, तो तुरत वहा से हटाकर छायादार स्थान मे बाँध देना चाहिए।

आहार अथवा भोजन—(Food)

आहार यानी भोजन ही ससार के प्रत्येक प्राणी को शक्ति प्रदान करता है। पर्याप्त मात्रा मे पौष्टिक, स्वच्छ, अहानिकर तथा उपयुक्त भोजन की न केवल मनुष्य को अपितु पशु-पक्षी आदि प्राणियो को भी आवश्यकता होती है। यही कारण है कि मनुष्य ने सभ्यता विकास के साथ-साथ जहा अपने लिए अन्य प्रकार की सासारिक सुख-सुविधाए जुटाई हैं, वहा भोजन के विषय मे भी निरतर खोज की है और आज विश्व मे मनुष्य के आहार के लिए नाना प्रकार के सुस्वादु व्यजन प्राप्त हैं, जो सब प्रकार के पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर, अति रुचिकारक, है।

आहार विषयक खोज का यह क्रम आज तक जारी है और आगे भी जारी रहेगा क्योकि जन-सख्या वृद्धि, जीवन की तीव्र गति, रहन-सहन के ढग आदि मे परिवर्तन, शारीरिक क्षमता व शक्ति का दिन प्रतिदिन ह्रास होते जाना, आधुनिक जीवन मे यन्त्रों तथा मशीनो का प्रयोग बढ़ते जाना इत्यादि अनेक ऐसे प्रमुख कारण हैं कि आहार विषयक आवश्यकताए, अनुकूलताए नित्य प्रति बदलती जा रही हैं। एक युग था, जब हमारे देश मे घी-दूध की नदिया बहती थी। घर-घर में पशु पाले जाते थे। दूध, घी, मक्खन, छाछ आदि पौष्टिक पदार्थों की कोई कमी न थी। आज वह दिन है कि शुद्ध घी-दूध कठिनता से ही प्राप्त होता है।

पशु-पालन फार्मों अथवा गांवो के थोडे से परिवारो तक ही सीमित रह गया है। मशीनों द्वारा वनस्पति तेलो से जमाए गए नकली घी और विदेशों से मगाए गए दुग्ध-पाउडर का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। और तो और, अब तो मनुष्य चाद तक पहुच गया है, और अन्य ग्रहों पर भी पहुचने के लिए प्रयत्न-शील है, जिन पर हजारों मील प्रति घण्टे की गति से उडने वाले राकेटो (यानों) द्वारा भी कई महीनों मे पहुचा जा सकता है। भला सोचिए कि उन राकेटो मे न तो इतना अनाज या खाद्य पदाथ रखकर ले जाया जा सकता है कि उसकी इस लम्बी व साहसिक यात्रा की आवश्यकता पूरी कर सके और न ही राकेटो मे भोजन पैदा किया जा सकता है, क्योकि अन्तरिक्ष मे न वायु-मण्डल है और न जल है।

इस प्रकार ऐसी यात्राओं पर जाने वाले मनुष्यो के लिए आहार की समस्या प्रमुख है। प्रयास किया जा रहा है कि छोटी छोटी गोलियों म ही आहार के वे सब तत्त्व एकत्रित कर दिए जायें कि एक गोली खाकर ही मनुष्य के शरीर की आहार सम्बन्धी आवश्यकता १ २ या अधिक दिन के लिए पूरी हो सके। इसमे मुख्य समस्या भूख लगने की है कि पौष्टिक तत्त्व तो गोली के रूप मे इकट्ठे किए जा सकते हैं, किन्तु एक गोली से भूख तो शान्त नही हो सकती। इस प्रकार तात्पय यह है कि आने वाले युग मे मनुष्य की आहार सम्बन्धी आवश्यकताए और उनका रूप दिन प्रतिदिन बदलता ही जायेगा।

मनुष्य ने अपने आहार पर ही नहीं, पशुओं के आहार पर भी पर्याप्त वैज्ञानिक खोजें की हैं। जंगलों में घूमने वाले पशु तो प्रकृति की गोद में उत्पन्न होने वाले फल मूल तथा वनस्पतियां खाकर अपनी आवश्यकता पूरी कर लेते हैं, क्योंकि वनस्पतियों में सभी पौष्टिक तत्व विद्यमान होते हैं और उन तत्वों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य भी नाना प्रकार के शाक भाजी आदि वनस्पतियों का प्रयोग करता है। हिंसक जंगली पशु छोटे छोटे जानवरों का शिकार करके उनके मांस से अपनी आवश्यकता पूरी करते हैं।

पालतू पशुओं की दशा बड़ी ही करुणाजनक होती है। ये निरीह आपकी दयालुता और समझदारी के ही सहारे जीते हैं। उन्हें न तो अपनी इच्छानुसार स्वच्छन्दतापूर्वक घूम-फिर कर अपना भोजन तलाश करने और प्राप्त करने की स्वतन्त्रता है और न ही वे मुंह से कुछ बोलकर आपसे मांग ही सकते हैं। वे आपके बंधन में बंधे पराधीन हो पड़े रहते हैं। आप उन्हें खाने-पीने के लिए जो कुछ दे देंगे, वे चुपचाप खाकर उसी पर सन्तोष कर लेंगे। साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि इन बेचारों को आपके लिए स्वतन्त्र पशुओं की अपेक्षा परिश्रम भी अधिक करना पड़ता है। स्वार्थवश होकर हमें इन निरीह पशुओं को उचित भोजन देने में लालच, क्रूरता अथवा लापरवाही से काम नहीं लेना चाहिए। यह हमारा नैतिक व मानवीय कर्त्तव्य है। हममें से बहुतेरे हृदय से तो दयालु तथा पूरी तरह कर्त्तव्यपरायण होते हैं, किन्तु शिक्षा के अभाव में वे यह नहीं जानते कि पालतू पशुओं को किस प्रकार का चारा-दाना दिया जाना चाहिए। इस अज्ञानता के कारण उनके पशु बीमार हो जाते हैं अथवा मर जाते हैं।

पशुओं का आहार निर्धारित करते समय उनकी जाति, उनका काम, उनका स्वास्थ्य, उनकी उम्र तथा उनका शारीरिक ढांचा, भार आदि अनेक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है क्योंकि पशुओं में हाथी, घोड़े, बैल, सांड आदि विशालकाय और शक्तिशाली पशु भी होते हैं और बकरी, भेड़ें, कुत्ते, बिल्ली आदि छोटे छोटे पशु भी। भला इन दोनों प्रकार के पशुओं के लिए एक समान आहार कैसे उपयोगी हो सकता है? बड़े पशुओं को अधिक मात्रा में तथा

अधिक पौष्टिक भोजन चाहिए। इसी प्रकार बैल, भसे, घोड़े आदि भार ढोने अथवा सवारी आदि कामो म प्रयुक्त हान वाले पशुओ को शारीरिक श्रम अपेक्षाकृत अधिक करना पडता है। उनका भोजन विशेषरूप से ऐसा होना चाहिए कि उस परिश्रम से क्षीण हुई शक्ति की पुन पूर्ति हो सके। यो तो हरी घास, पत्तिया, हरियाली, जिनमे पेड पौधे, बेलें आदि शामिल हैं, इत्यादि वनस्पतिया पर्याप्त पोषक तत्वो से परिपूर्ण और पशुआ के लिए अति उपयोगी हैं, तथापि विशेष परिश्रम करने वाले बैल, घोड़े, खच्चर आदि पशुओ की आवश्यकता केवल वनस्पतियो से पूरी नही हो सकती।

वनस्पति से जो पोषक तत्त्व अथवा शक्ति प्राप्त होगी, वह तो उनके शरीर के पोषण तथा विकास मे ही व्यय हो जायेगी। परिश्रम से काय करने के लिए उन्हें अतिरिक्त शक्ति की आवश्यकता है, जो खली दाना आदि देकर पूरी करनी पडती है। इसके अभाव म उन पशुओ की शक्ति दिन प्रतिदिन क्षीण होती जाती है। वे दुबल होकर बीमार पड जाते हैं और फिर भी यदि उनसे उसी प्रकार काम लिया जाता रहे, तो वे अकाल मत्यु के ग्रास बन जाते हैं। इसी प्रकार दुधारू पशु, यद्यपि शारीरिक श्रम अधिक नही करते, तथापि दूध निकालने से उनके शरीर की काफी शक्ति बाहर आ जाती है। वे जो कुछ खाते हैं उसे पचाकर दूध बना देते हैं और दूध निकालकर एक प्रकार से हम उनका सारा खाया-पिया भोजन पुन बाहर निकाल लेते हैं। उसका बहुत थोडा अश ही उनके शरीर के पोषण म व्यय हो पाता है।

यह कभी न सोचना चाहिए कि गौए, भसें, बकरियां आदि तो सारा दिन आराम से बैठी रहती हैं। इन्हे पौष्टिक भाजन की आवश्यकता ही नही। सच पूछा जाये, तो उन्हें ही सबसे ज्यादा पौष्टिक भोजन की आवश्यकता है। समझदार पशु पालक सदैव दुधारू पशुओ को तथा भारवाहक पशुओ को उचित मात्रा मे खली, दाना, बिनौले आदि खिलाकर उनकी आवश्यकता पूरी करते रहते हैं।

एक बात और भी ध्यान मे रखिए। पशुओ को भी नमक की उसी प्रकार आवश्यकता होती है, जिस प्रकार मनुष्य को। इसलिए उसकी पूर्ति के लिए

कभी कभी पशुओं को नमक भी अवश्य खिलाते रहना चाहिए। अन्यथा परिश्रम से पसीने द्वारा उनके शरीर का लवण बाहर निकलता है और उसकी पूर्ति न होने की दशा मे नमक के अभाव से भी उनके शरीर मे अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

पशु आहार तथा उनके गुण—पशुओ का आहार दो श्रेणियो मे विभक्त किया जा सकता है —(१) साधारण चारा दाना (२) वैज्ञानिक खोजो के आधार पर विटामिन आदि पोषक तत्त्वो से युक्त तयार किया जाने वाला विशेष प्रकार का चारा दाना।

पहले प्रकार का पशु आहार वह है, जो हमारे देश के अधिकतर घरो मे पशुओ को खिलाया जाता है। दूसरे प्रकार का वह पशु आहार है, जो सरकारी डेरियो पशु-पालन केन्द्रो आदि मे वैज्ञानिक खोजो के आधार पर तैयार कर के पशुओ को खिलाया जाता है और नस्ल-सुधार, दुग्ध-उत्पादन मे वृद्धि, पशु-स्वास्थ्य विकास व पशु रोगो की रोकथाम व चिकित्सा विषयक खोजो के लिए परीक्षण के तौर पर प्रयोग किया जाता है।

सामान्य प्रकार का चारा-दाना—इस श्रेणी के चारे दाने में मुख्य रूप से चारा यानी हरी व रूखी घास, पत्तियां, छीलन, पेड-पौधे आदि वनस्पतिया और दाना अर्थात अनाज, उसकी भूसी, चोकर, खली आदि होती हैं, जो हमार देश के सर्वसाधारण द्वारा पशुओ को खिलाया जाता है। साथ ही कभी कभी चूना, नमक आदि खनिज तत्त्वो का भी प्रयोग किया जाता है। देश मे प्रयुक्त होने वाली इस सामान्य चारे-दाने की प्रणाली का भी वैज्ञानिक परीक्षण तथा अनुसंधान किया गया है जिसके निष्कर्षस्वरूप प्राप्त जानकारी विस्तार से आप सब के लाभार्थ प्रस्तुत की जा रही है।

चारा-वर्ग का पशु-आहार—चारा वर्ग के अन्तर्गत चरागाहो की घास, खेतो मे उगाई जाने वाली चारे की फसलें यथा ज्वार, बाजरा, मक्का, जई, रागी तथा दलहनी चारे की फसलें यथा बरसीम, लोबिया, सोयाबीन, मटर, ग्वार तथा धान का पुआल, भूसा आदि मुख्य रूप से आते हैं। इसके अतिरिक्त पेड़ की पत्तियां तथा अन्य हरी वनस्पतियां आदि भी चारे मे आती हैं। आप

तौर पर बरसात के दिनों में हरे चारे की बहुतायत रहती है, जाड़े के दिनों में भी कुछ विशिष्ट चारे की फसलें उगाकर तथा घास आदि से आवश्यकता पूरी होती रहती है, किन्तु गरमी के दिनों में, जब मैदानों व चरागाहों की घास भी सूख जाती है, चारे की समस्या विकटरूप धारण कर लेती है विशेष कर उस परिस्थिति में जब समय पर उपयुक्त मात्रा में वर्षा न हुई हो। इस समस्या का हल करने के लिए चारे को सुखाकर तथा सायलेज तैयार करके भण्डारण करने की पद्धतियां निकाली गई हैं।

घास—किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि घास ही पशुओं का प्रमुख तथा अति प्रिय आहार है। घास कई प्रकार की होती है, जिसमें चरागाहों की घास सर्वोत्तम और सस्ती है। आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, अमरीका आदि देशों में पशुओं के चरने के लिए विशेष रूप से चरागाह बनाए जाते हैं। हमारे देश की चूंकि अधिकांश भूमि खाली पड़ी रहती है, जहां घास पेड़ पौधे तथा जंगल हैं, इस लिए पशु स्वच्छन्दतापूर्वक चरते रहते हैं। हर गांव के आस पास मीलों लम्बे *मैदान तथा जंगल होते हैं।*

हरी तथा कच्ची घास में पकी तथा सूखी घास की अपेक्षा प्रोटीन तत्त्व अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। साथ ही कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन और खनिज तत्त्व भी प्रचुर मात्रा में होते हैं। इसके अतिरिक्त स्थान स्थान की भूमि के गुणावगुण के अनुसार भी घास में इन पोषक तत्त्वों तथा खनिजों की मात्रा कम या अधिक होती है। भारत की घासों में दूब, अंजन, पल्वान, मुसल स्टार, सूर्याला, बौरिया, सरपत आदि घासें अच्छी तथा प्रचुर मात्रा में प्राप्त हैं। यदि जंगलों के किनारे किनारे इन घासों के चरागाह बनाकर पशुओं को चराया जाये, तो बहुत लाभ हो सकता है। पहाड़ी चरागाहों के लिए विशेष-रूप से उत्तम बारहमासी राई घास उगाना भी लाभदायक है।

सूखी घास में यद्यपि हरी घास की अपेक्षा पोषक तत्त्व कम हो जाते हैं किन्तु आरम्भिक अवस्था में काटकर सुखाई गई घास भी पर्याप्त गुणयुक्त होती है। सूखी घास का चारा तैयार करने में इस बात *का ध्यान रखना* पड़ता है कि उसे इतना सुखाया जाए कि १० १५ प्रतिशत से अधिक

नमी न रहे, अन्यथा घास मे सड़ांद, बदबू तथा फफूद उत्पन्न हो जाती है और फिर पशु उसे नही खाते। धूप, ओस या वर्षा मे अधिक समय तक पड़ी रहने पर भी घास गुणहीन तथा अपाचक हो जाती है। घास को सुखाते समय यह भी ध्यान रख कि उसकी पत्तिया झडने न पाए। बरसात के शुरू के दिनो मे ही जब चारो ओर खूब हरी घास उग रही हो, काट कर हवादार गोदामो आदि मे एकत्रित करके सुखा लेनी चाहिए। बरसात खुलने पर थोडी थोडी धूप भी दिखा दें। बरसात के आखिरी दिनो तक घास पकने लगती है।

पेडो की पत्तिया—बकरिया, भेडें, ऊट तथा अन्य पशु पेडो की हरी पत्तियो को बडे चाव से खाते हैं। भेडो तथा बकरियो का तो मुख्य आहार ही पत्तिया हैं। पेडो की कोमल पत्तियो मे भी पोषक तत्व प्रचुर मात्रा मे होते हैं। पेडो की पत्तियो के अलावा झाडियो की पत्तियो मे भी कैल्शियम विशेष परिमाण मे पाया जाता है। परीक्षणो व अनुसधान से यह निष्कष निकलता है कि झडबेरी, बास, गोज, तूत, सदल, मरोडफली, कचनार, पीपल गूलर बेर, खर, फलीयात, बबूल, बल, सिरस, सॅजना, गेहिणी, कजू कुसुम, हल्दू, बरगद, फल्द, साल आदि पेडो व झाडियो की पत्तिया पशुओ के लिए उत्तम आहार हैं, यदि उनके साथ उन्हें उपयुक्त मात्रा म दाना तथा दूसरे चारे आदि भी दिये जाए।

गरमी के दिनों मे, जब घास प्राप्त नही होती, पेडो की पत्तिया पशुओ का खिलाई जा सकती हैं। हमारे देश मे गावों मे तो प्राय लोग पशुओ को चरने के लिए खुला छोड देते हैं और वे स्वत ही घास न मिलने पर पेडों की पत्तियाँ आदि चरते रहते हैं।

चारे दाने की फसलें—हमारे देश मे ज्वार, बाजरा, मक्का रागी तथा जई चारे की मुख्य फसलें है। किन्तु चूकि ये सिर्फ चारे के लिए ही नही उगाई जाती, इनके दाने मनुष्यो, विशेषकर निधना व किसानो के घरों मे खाने के काम आते हैं और पौधो की कुट्टी पशुओ के चारे के लिए रखी जाती है। इस चारे मे पौष्टिक तत्व तो दानो मे निकल जाते हैं। दानो की अधिक पदावार प्राप्त करने के लिए फसल अच्छी तरह पक जाने पर ही काटी जाती है। यदि

दाने निकलने से पहले ही ये फसलें काटकर पशुओं को चारा खिलाया जाए तो उन्हें अधिक पोषक तत्त्व प्राप्त हों। सरकारी फार्मों आदि में नेपियर ग्रास, सूडान आदि घासों की फसलें विशेषरूप से चारे के लिए ही उगाई जाती हैं।

दलहनी चारे की फसलों में बरसीन, रिजका, लोबिया, सोयाबीन, ग्वार, मटर आदि की फसलें भी उगाई जाती हैं, किन्तु इन फसलों का भी मनुष्य तथा पशु दोनों के लिए दुहरा लाभ उठाया जाता है। इन फसलों के चारों में अन्य फसलों की अपेक्षा प्रोटीन, कैल्शियम, कैरोटीन आदि की मात्रा अधिक होती है। इसलिए ये अच्छी हैं।

भूसा तथा धान का पुआल

भूसा गेहूं, ज्वार आदि अनाजों की फसलों से प्राप्त होता है और पुआल चावल की फसल से। चूंकि ये फसलें हमारे देश में बहुतायत से उगाई जाती हैं, इसलिए यह चारा आसानी से प्राप्य और सस्ता है। यही कारण है कि पौष्टिक तत्त्वों की सबसे ज्यादा कमी होने तथा देर में पचने पर भी भारत में पशुओं के आहार में ५० प्रतिशत मात्रा भूसा या पुआल की होती है। धान के पुआल को पानी में धोकर तथा थोड़ी सी खड़िया मिला देने से उसके पोषक अंश में पर्याप्त सुधार हो जाता है। गेहूं के भूसे में भी खली तथा थोड़ी सी खड़िया मिला देने से स्वाद व गुण दोनों बढ़ जाते हैं।

दाना-वर्ग के पशु आहार

दाने में पोषक तत्त्व अधिक होते हैं, इसलिए पशुओं को चारे के साथ थोड़ा-बहुत दाना अवश्य खिलाया जाना चाहिए। विशेषकर दूध देने वाले पशुओं तथा अधिक परिश्रम के काम करने वाले पशुओं के लिए तो यह नितान्त आवश्यक है। इस वर्ग के पशु आहार में अनाजों के दाने, तिलहन तथा उनकी खली आदि आते हैं।

अनाजों का दाना—अनाजों के दानों में स्टार्च, फास्फोरस और पोटाश की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है। साथ ही विटामिन बी और ई भी अनाजों में काफी होते हैं। मक्का के दानों में विटामिन ए अधिक होता है। इस प्रकार ये सब दाने पशुओं के शरीर की पोषक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए

जरूरी तथा उपयुक्त हैं। हा, इनमे प्रोटीन, एमिनो एसिड, कैल्शियम, सोडियम क्लोरीन आदि तत्वो की कमी रहती है। जौ तथा जई का दाना पशुओ के लिए सर्वोत्तम है। मक्का का दाना अन्य दानो के साथ ही मिलाकर देना चाहिए, क्योकि अकेला मक्का पशुओ को अफारा पैदा कर देता है। चने के दाने मे चूकि कैल्शियम और फास्फोरस अधिक पाया जाता है, इसलिए वह भी पशुओ के लिए बहुत अच्छा है और हमारे देश म अधिक पदा होने के कारण चना पशुओ को खिलाया भी जाता है। यदि चना प्राप्य न हो तो अरहर तथा ग्वार प्रयोग कर सकते हैं। गेहू की चोकर यानी दानो की भूसी पशुओ के लिए बहुत लाभदायक है। यद्यपि पशु इसे चाव से नही खाते, किन्तु उनका पेट साफ रखने के लिए यदा कदा अवश्य खिलानी चाहिए। इसमे फास्फोरस सबसे अधिक पाया जाता है इसलिए दुधारू पशुओ के लिए भी विशेष लाभ प्रद है।

तिलहन तथा उनकी खली — तिलहन यथा राई, बिनौले, अलसी मूगफली, सोयाबीन, सरसो, तिल, नारियल आदि तैलीय अश वाली फसलें तथा उन्हें पेरकर तेल निकालने के बाद बची हुई खली पशुओ के लिए बहुत ही पौष्टिक तथा उपयोगी मानी जाती है। हमारे देश मे सरसो, राई, अलसी, मूगफली आदि की खली का ही विशेष प्रयोग होता है। दुधारू पशुओ को बिनौले खिलाए जाते हैं क्योंकि उनसे दूध मे चिकनाई की मात्रा बढ जाती है। अलसी आमतौर पर फार्मों के पशुओ अथवा घोडो को राधकर खिलाई जाती है। दुधारू पशुओ के लिए कोल्हू की पिरी खली ही विशेषरूप से उपयोगी होती है, क्योंकि इसमे १२ से २० प्रतिशत तक तैलीय अश रह जाता है, जो दूध की चिकनाई बढाता है। मूगफली की खली म लगभग ५० प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है और इतना ही सोयाबीन की फली मे। किन्तु हमारे देश मे ये खलिया बहुत कम मिलती हैं। नारियल और खजूर की गुठली की खली भी उत्तम श्रेणी मे आती हैं और तिलों की खली तो सब खलियो मे श्रेष्ठतम पाई गई है क्योकि इसमे प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस आदि तत्त्व प्रचुर मात्रा म होते हैं। सरसो की खली, जो भारत मे सबसे ज्यादा प्रयोग की जाती है गुणदायक

ता है, किन्तु शुरू शुरू में पशु इसे पसन्द नहीं करते। बाद में आदत पड़ जाने पर पशु इसे चाव से खाने लगते हैं।

पशु आहार सम्बन्धी नवीनतम खोज—उपरोक्त पशु-आहारों के अलावा चारे दाने की कमी को पूरा करने के लिए वैज्ञानिकों ने भारतीय अनुसन्धान शाखाओं में प्रयोग तथा परीक्षण करके कुछ उपयोगी अनुसन्धान किए हैं। इन परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि देश में अनेक व्यर्थ समझी जाने वाली तथा सरलतापूर्वक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध वस्तुएं पशुओं के लिए उत्तम आहार सिद्ध हो सकती हैं क्योंकि उनमें शरीर के लिए पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में पाए गए हैं। नई खोज पर आधारित ये वस्तुएं निम्नांकित हैं—

आमों की गुठलियां, जामुन की गुठलियां, इमली के बीज, पनेवर के बीज, बबूल की फलियां, मोटी घासें तथा कांस, मूंज आदि, कटियारा जैसे पौधे, गन्ने का छीलन तथा पनेवर की फलियां आदि विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त मूंगफली के छिलके, महुआ की खली, महुआ के फूल, सनबीजा व सायन की फलियां, बाजरा तथा पतझड़ में पेड़ों से झड़ी पत्तियां आदि भी चारे के अकाल के दिनों में पशुओं को खिलाई जा सकती हैं, क्योंकि इनमें भी पोषक तत्व पाए गए हैं। अभी तक ये सब वस्तुएं बेकार समझ कर कूड़े में फेंक दी जाती थीं और पशुओं को नहीं खिलाई जाती थीं, किन्तु वैज्ञानिक परीक्षणों ने इनकी उपयोगिता प्रमाणित कर दी है और हर भाई बिना किसी प्रकार की हानि की चिन्ता किए इन चीजों को पशुओं को खिला सकता है। साथ ही यह भी ज्ञात हुआ है कि पशुओं के रातब में अनाजों के छिलके की जगह गन्ने का शीरा भी प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि वह भी इतना ही गुणकारी है।

विभिन्न पशुओं का आहार निश्चित करना—जैसा पहले भी बताया जा चुका है सब पशुओं को एक समान आहार (चारा दाना) नहीं खिलाया जा सकता। उनके शरीर का आकार, वजन, श्रम, उनकी शारीरिक स्थिति, स्थानीय जलवायु आदि अनेक बातों का ध्यान रखकर उनके लिए तदनुसार अलग-अलग खुराक निश्चित करनी पड़ती है। यथा—एक भेड़ अथवा बकरी

की तरह गाय, भैंस घोड़ा बैल, हाथी आदि की खुराक उनके शरीर के आकार व भार से अधिक होगी। इसी प्रकार घोड़े बैल आदि शारीरिक परिश्रम के काम करने वाले पशुओं की खुराक गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं से अथवा सांड, हाथी आदि बैठे रहने वाले पशुओं से सर्वथा भिन्न होगी। इसी प्रकार नवजात बछड़ों तथा गर्भिणी मादा पशु की खुराक भी उनकी आवश्यकतानुसार दूसरे नर पशुओं से भिन्न होगी। जिस प्रकार मनुष्य के लिए उपयुक्त पौष्टिक तथा आवश्यकतानुसार भोजन निर्धारित करने के लिए वैज्ञानिक अन्वेषण हुए हैं उसी प्रकार इस शताब्दी में पशुओं के आहार पर भी अनुसंधान होते रहे हैं और उन अनुसंधानों से जो निष्कर्ष निकले हैं, उन्हें आज के हर एक पशु-पालक को अवश्य जानना चाहिए। पशुओं के उचित आहार पर ही उनका स्वास्थ्य, उनकी उत्पादन क्षमता, उनकी कार्यक्षमता और उनकी भावी नस्ल निर्भर करती है।

पशुओं की खुराक को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—(1) निर्वाह खुराक जो सभी प्रकार के पशुओं को शरीर के पोषण तथा जीवित रहने व काम करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यक रूप में चाहिए और (2) संतुलित आहार, जो विभिन्न आकार, शारीरिक भार काम आदि के आधार पर वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान करके निर्धारित की गई है, ताकि पशुओं का स्वास्थ्य, उत्पादन-क्षमता, कार्यक्षमता आदि में यथोचित वृद्धि के लिए आवश्यक मात्रा में पोषक तत्त्व प्राप्त हो सकें।

सबसे पहले पशुओं को बाल्यकाल में यानी जब वे बच्चे ही होते हैं, हड्डियां मांस, रक्त आदि के निर्माण और शरीर के समुचित विकास के लिए उपयुक्त मात्रा में फास्फोरस कैल्शियम, प्रोटीन तथा विटामिन आदि की विशेष आवश्यकता होती है, अतः उन्हें अपनी मां पशु का दूध कम से कम 3-4 महीने पर्याप्त मात्रा में पीने देना चाहिए, क्योंकि दूध में वे सब आवश्यक तत्त्व पाए जाते हैं जो शरीर के विकास के लिए अनिवार्य हैं। दुर्भाग्यवश हमारे लोग गाय भैंसों के बछड़ों को दूध बहुत ही कम पीने देते हैं, ताकि स्वयं अधिक दूध प्राप्त कर सकें। किंतु यह दोहन गलत है। पशु के

यदि आप उसकी आवश्यकतानुसार दूध पीने देंगे तो दुधारू पशु की दूध उत्पादन क्षमता बढ़ती है और इसके विपरीत अधिक दूध स्वयं प्राप्त करने के लालच में यदि आप उनके बच्चे को दूध नही पीने देंगे, तो पशु के थनों मे कम दूध बनेगा अथवा पशु उतरने नही देगा। कभी-कभी तो पशु बिल्कुल दूध देना बन्द कर देता है।

जब बच्चा चारा, दाना आदि खाने लग जाए तो प्रारम्भ म उसे कोमल हरी घास अनाजो का रातब दाना आदि धीरे धीरे उसकी रुचि के अनुसार खिलाना चाहिए। साथ ही यदि वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित तथा पशु-विज्ञान विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित निम्न मिश्रण भी प्रतिदिन के हिसाब से उनके चारे में मिलाकर खिलाया जाये, तो बहुत ही अच्छा है। यह मिश्रण गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओ को 2 औंस प्रतिदिन और 5 सेर यानी 10 पौण्ड से अधिक दूध देने वाली गाय भैंसो को 3 औंस प्रतिदिन के हिसाब से दिया जाना चाहिए। इस मिश्रण द्वारा पशुओ के आहार के समस्त आवश्यक पोषक तत्व पूरे हो जाते हैं।

आमतौर पर पशु अपने शरीर के प्रति 100 पौण्ड भार के लिए रोजाना 2 पौण्ड से $2\frac{1}{2}$ पौण्ड तक सूखा चारा दाना खाता है। दुधारू पशुओ की खुराक का औसत इससे कुछ अधिक होता है। इनमे भी भैंस की खुराक गाय की अपेक्षा अधिक होती है। पशुओं के चारे में मोटे चारे की भी पर्याप्त मात्रा अवश्य होनी चाहिए। क्योकि यह दाना, खली आदि को पचाने मे सहायक होता है। परीक्षणो से पता चला है कि 100 पौण्ड वाले पशु के लिए कम से कम निर्वाह खुराक 0 6 पौण्ड पचनीय प्रोटीन 0 6 पौण्ड, माड (स्टार्च) 7 5 पौण्ड कुल पचनीय पोषक तत्त्वो से युक्त होनी चाहिए।

सूखे चारों म बरसीम का सूखा चारा सबसे अधिक पोषक तत्त्वो से युक्त पाया गया है, इसलिए यदि सम्भव हो और आसानी से प्राप्त हो सके, तो पशु को बरसीम का सूखा चारा पर्याप्त मात्रा मे खिलाना चाहिए। इससे पशु को दाना, खली आदि देने की विशेष आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि 10 पौण्ड सूखी बरसीम मे 0 9 पौण्ड पचने वाला कच्चा प्रोटीन (D C P) और

5 92 पौण्ड पचने वाले कुल पोषक तत्व (T D N) पाए जाते हैं, जो पशु की दैनिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए पर्याप्त होते हैं। इसमे प्रोटीन की मात्रा आवश्यकता से भी कुछ अधिक होती है, किन्तु अन्य पोषक तत्वो की मात्रा कुछ कम होती है जो एक पौण्ड गेहू का भूसा मिलाकर पूरी की जा सकती है। यदि सूखे चारे मे बरसीन की मात्रा पूरी देना सम्भव न हो तो मक्का, जई, गेहू का भूसा इन तीनो से ही उसकी कमी पूरी कर सकते हैं।

पशुओ के चारे दाने मे पचनीय कच्चे प्रोटीन तत्वो की मुख्य रूप से आवश्यकता होती है और उसे ध्यान म रखकर ही पशु के लिए चारा दाना निश्चित करना चाहिए। किन्तु हमारे दश के विभिन्न स्थानो की जलवायु भिन्न भिन्न होन के कारण तथा भूमि की उपजाऊ शक्ति के अन्तर के कारण कहीं कोई वस्तु सुलभ है, दूसरे स्थानो पर वही वस्तु दुलभ है और दूसरे स्थानो पर सुलभ वस्तु पूव स्थान पर दुलभ है। इसलिए सारे देश के हर स्थान के लिए एक जैसी खुराक निश्चित करना असम्भव है।

गर्भावस्था मे पशु का उचित आहार—गर्भावस्था मे गाय, भस आदि मादा पशुओ को कुछ विशेष मात्रा मे पोषक तत्वो की आवश्यकता होती है, क्योंकि उसके अपने शरीर की आवश्यकता के अलावा गमस्थ बछडे के शरीर के विकास के लिए अतिरिक्त पोषक तत्व चाहिए। वैज्ञानिको के मतानुसार गर्भावस्था के अन्तिम एक तिहाई काल मे गाय को अपने शरीर निर्वाह तथा गमस्थ शिशु के विकास के लिए प्रतिदिन लगभग 1 5 पौण्ड कुल पचनीय पोषक तत्व (T D N) की आवश्यकता होती है। प्रसवकाल से लगभग एक या दो सप्ताह पूव दाना तथा खली की मात्रा बढा देनी चाहिए तथा बढिया किस्म का चारा और रोचक वस्तुए, जिन्हें पशु बडी रुचि के साथ खा सके, खिलानी चाहिए, यथा गेहू की भूसी, अलसी की खली आदि। प्रसव के समय चारे व दाने की मात्रा घटाकर ब्याने के पश्चात् दाने की मात्रा धीरे धीरे इस प्रकार बढानी चाहिए कि एक या दो सप्ताह मे वह चारे दाने की पूरी-पूरी मात्रा खाने लगे। उसमे भी यह ध्यान रखें कि उसे अच्छी से अच्छी और पौष्टिक खुराक अधिक से अधिक प्राप्त हो सके। यानी उसकी खुराक गुण-

तदा मात्रा की दृष्टि से इतनी बढ़ा देनी चाहिए कि उसे मात्रा व अवस्था की अपेक्षा एक पौण्ड अतिरिक्त टी डी एन (कुल पचनीय पोषक तत्व) प्राप्त हो सकें। साथ ही गौर करें कि उस खुराक से पशु के दूध की मात्रा बढ़ती है या नहीं और जब तक दूध की मात्रा बढ़ती रहे तब तब उसके दूध की मात्रा भी बढ़ाते जाना चाहिए। इस प्रकार गाभिन पशु को सतुलित, पोषक और उचित आहार देकर आप उससे अधिकतम मात्रा म दूध प्राप्त कर सकेंगे।

गर्भकाल म पशु को प्रसव से ४ ५ दिन पूर्व स लेकर प्रसव के ३ ४ दिन बाद तक तीन छटांक या एक पाव सरसो का तेल पिलाना भी श्रेष्ठ है, क्योकि एक तो प्रसव के समय पशु को कष्ट कम होता है दूसरे दूषित रक्त निकल कर पेट साफ हो जाता है।

रोगी पशुओं के लिए उपयुक्त आहार—रोगी पशु चूकि दुबल हो जाता है, उसकी भूख तथा पाचन क्रिया भी शिथिल हो जाती है, इसलिए वह एक स्वस्थ पशु के लिए बताई गई खुराक नहीं पचा सकता। यदि रोगी पशु को बिना सोचे समझे दाना चारा खिलाया जाता रहे तो कुछ दिनों म वह पशु मर जायेगा। अत जिस प्रकार रोगी मनुष्य के लिए इलाज के साथ साथ पथ्यापथ्य का भी ध्यान रखना अनिवाय है, उसी प्रकार रोगी पशु के लिए भी हमे अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि पशु को अपथ्य भोजन न दिया जाये। उसकी शारीरिक अवस्था, पाचन क्रिया, गोबर आदि को देख विचार कर ही चारा-दाना दें। इस विषय मे निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना लाभदायक सिद्ध होगा—

(१) रोगी पशु को मुलायम, हरा और जल्दी पचने वाला चारा थोडा थोडा करके दिन मे कई बार मे देना चाहिए। एक बार मे ही भरपेट चारा खिलाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, क्योकि उसकी अशक्त इन्द्रियाँ उसे ठीक प्रकार से पचाने म मदद नही दे पाएगी और पशु का रोग व कष्ट दानो बढ जाएगा।

(२) रोगी पशुओ को अधिक गरम अथवा अधिक बादी व कोष्ठबद्धता उत्पन्न करने वाली वस्तुए कदापि नही देनी चाहिए जैसे मटर का दाना भारी

तथा बादी है। वह रोगी पशु के लिए उपयुक्त नहीं, जबकि स्वस्थ पशु के उपयोगी दाना है।

(३) यदि रोगी पशु को खूनी अथवा पतले दस्त आ रहे हों, तो उसे तरल पदार्थ अधिक नहीं खिलाने चाहिए। क्योंकि तरल पदार्थ बिना पचे ही मल के रास्ते निकल जायेंगे और जितने ही दस्त अधिक होंगे पशु की कमजोरी बढ़ती जायेगी।

(४) मुंह का पक जाना, गले की सूजन आदि मुख सम्बन्धी अनेक रोगों में पशु दाने चारे को भली प्रकार चबाकर जुगाली करके नहीं खा पाता, इसलिए उस दशा में उसे कठोर पदार्थ यथा चारा, घास दाना आदि न देकर मुलायम व तरल पदार्थ यथा रातब, महेरी मुलायम पत्तियां, फलियां, छाछ सत्तू या घोल, रोटी, चोकर, माड आदि खिलाना पिलाना चाहिए। फिर जब पशु थोड़ी थोड़ी जुगाली करने लग जाय, तो मुलायम हरियाली, जौ की कुट्टी, जई का भूसा, गेहूं का भूसा आदि पानी से तर करके खिलाए। अलसी की कांजी भी रोगी पशु के लिए लाभदायक पथ्य है। इसके बनाने की विधि यह है कि डेढ़ पाव अलसी ५ सेर पानी में पकाए और पकने पर उतार कर छान लें। फिर उसमें थोड़ा नमक अथवा गुड़ मिलाकर थोड़ा ठण्डा होने पर पशु को ढरके आदि से पिलाए। आवश्यकता पड़ने पर पशु को दूध, चाय आदि भी पिलानी चाहिए।

(५) जहां तक सम्भव हो रोगी पशु को अधिक कमजोरी की दशा में दाना, चारा आदि न खिलाना ही अच्छा है। कभी कभी मुलायम हरा चारा उसे दिखाए। अनिच्छा होने पर पशु स्वतः नहीं खाते।

(६) यद्यपि कुछ विशेष रोगों में पशुओं को जल पिलाना वर्जित होता है, उन्हें छोड़कर अन्य सब रोगों में पशु को कुंए का साफ पानी उबाल छानकर ठण्डा करके पिलाना चाहिए। ध्यान रहे कि रोगी पशु को जोहड़, तालाब आदि पर ले जाकर गन्दा पानी नहीं पिलाना चाहिए।

(७) रोगी पशु की तीमारदारी भी उसी प्रकार करनी चाहिए, जैसे अपने परिवार में किसी रोगी सदस्य की करते हैं। उसे हवा, पानी, धूप

तथा मात्रा की दृष्टि से इतनी बढा देनी चाहिए कि उसे सामा य अवस्था की अपेक्षा एक पौण्ड अतिरिक्त टी डी एन (कुल पचनीय पोषक तत्त्व) प्राप्त हो सकें। साथ ही गौर करें कि उस खुराक से पशु के दूध की मात्रा बढती है या नही और जब तक दूध की मात्रा बढती रहे धीरे धीरे उसके दूध की मात्रा भी बढाते जाना चाहिए। इस प्रकार गाभिन पशु को सतुलित, पोषक और उचित आहार देकर आप उससे अधिकतम मात्रा मे दूध प्राप्त कर सकेंगे।

गर्भकाल मे पशु को प्रसव से ४ ५ दिन पूर्व से लेकर प्रसव के ३ ४ दिन बाद तक तीन छटाक या एक पाव सरसों का तेल पिलाना भी श्रेष्ठ है, क्योकि एक तो प्रसव के समय पशु को कष्ट कम होता है, दूसरे दूषित रक्त निकल कर पेट साफ हो जाता है।

रोगी पशुओं के लिए उपयुक्त आहार—रोगी पशु चूंकि दुर्बल हो जाता है, उसकी भूख तथा पाचन क्रिया भी शिथिल हो जाती है, इसलिए वह एक स्वस्थ पशु के लिए बताई गई खुराक नही पचा सकता। यदि रोगी पशु को बिना सोचे समझे दाना चारा खिलाया जाता रहे तो कुछ दिनों म वह पशु मर जायेगा। अतः जिस प्रकार रोगी मनुष्य के लिए इलाज के साथ साथ पथ्या पथ्य का भी ध्यान रखना अनिवार्य है, उसी प्रकार रोगी पशु के लिए भी हमे अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि पशु को अपथ्य भोजन न दिया जाय। उसकी शारीरिक अवस्था, पाचन क्रिया, गोबर आदि को देख विचार कर ही चारा-दाना दें। इस विषय म निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना लाभदायक सिद्ध होगा—

(१) रोगी पशु को मुलायम, हरा और जल्दी पचने वाला चारा थोडा थोडा करके दिन मे कई बार मे देना चाहिए। एक बार मे ही भरपेट चारा खिलाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, क्योकि उसकी अशक्त इन्द्रियां उसे ठीक प्रकार से पचाने म मदद नही दे पाएगी और पशु का रोग व कष्ट दोनो बढ़ जाएगा।

(२) रोगी पशुओं को अधिक गरम अथवा अधिक बादी व कोष्ठबद्धता उत्पन्न करने वाली वस्तुएं कदापि नही देनी चाहिए जैसे मटर का दाना भारी

तथा बादी है। वह रोगी पशु के लिए उपयुक्त नहीं, जबकि स्वस्थ पशु के लिए उपयोगी दाना है।

(३) यदि रोगी पशु का खूनी अथवा पतले दस्त आ रहे हों तो उसे तरल पदार्थ अधिक नही खिलाने चाहिए। क्योंकि तरल पदार्थ बिना पचे ही मल के रास्ते निकल जायेंगे और जितने ही दस्त अधिक होंगे, पशु की कमजोरी बढती जायेगी।

(४) मुह या पक जाना, गले की सूजन आदि मुख सम्बन्धी अनेक रोगों मे पशु दाने चारे को भली प्रकार चबाकर जुगाली करके नही खा पाता, इस लिए उस दशा में उसे कठोर पदार्थ यथा चारा, घास दाना आदि न देकर मुलायम व तरल पदार्थ यथा रातब, महेरी, मुलायम पत्तियां, दलिया, छाछ सत्तू का घोल, रोटी, चोकर, माड आदि खिलाना पिलाना चाहिए। फिर जब पशु थोडी थोडी जुगाली करने लग जाये तो मुलायम हरियाली, जौ की घुट्टी, जई का भूसा, गेहू का भूसा आदि पानी से तर करके खिलाए। अलसी की कांजी भी रोगी पशु के लिए लाभदायक पथ्य है। इसके बनाने की विधि यह है कि डेढ पाव अलसी ५ सेर पानी मे पकाए और पकने पर उतार कर छान लें। फिर उसमे थोडा नमक अथवा गुड मिलाकर थोडा ठण्डा होने पर पशु को ढरके आदि से पिलाए। आवश्यकता पडने पर पशु को दूध चाय आदि भी पिलानी चाहिए।

(५) जहा तक सम्भव हो रोगी पशु को अधिक कमजोरी की दशा में दाना, चारा आदि न खिलाना ही अच्छा है। कभी कभी मुलायम हरा चारा उसे दिखाए। अनिच्छा होने पर पशु स्वत नही खाते।

(६) यद्यपि कुछ विशेष रोगो में पशुओ को जल पिलाना वर्जित होता है, उन्हें छोडकर अन्य सब रोगो मे पशु को कुंए का साफ पानी उबाल छानकर ठण्डा करके पिलाना चाहिए। ध्यान रहे कि रोगी पशु को जोहड, तालाब आदि पर ले जाकर गन्दा पानी नही पिलाना चाहिए।

(७) रोगी पशु की तीमारदारी भी उसी प्रकार करनी चाहिए जैसे अपने परिवार के किसी रोगी सदस्य की करते हैं। उसे हवा,

आदि से बचाना, उसके बांधने के स्थान की स्वच्छता, उसे समय पर खाना और पानी आदि देना, उसे समय पर दवा देना और आवश्यकता होने पर अस्पताल पहुंचाना आदि बातो का ध्यान रखना आपका नैतिक उत्तरदायित्व है। लापरवाही नही बरतनी चाहिए।

(८) रोग मुक्त होने पर भी पशु को एकदम भरपेट चारा दाना नही खिलाना चाहिए। उसकी खुराक धीरे धीरे इस प्रकार बढाते जायें कि वह हजम करता रहे। अन्यथा पुन बीमार पडने की आशंका रहेगी।

स्वच्छता—आहार के उपरान्त पशुओ को स्वस्थ रखने के लिए स्वच्छता भी एक महत्त्वपूर्ण आधार है। गन्दगी असख्य रोगो की जड है और यदि ठीक प्रकार से सफाई न रखी जाये, तो पशु अनेकानेक रोगो का शिकार हो जाता है। स्वच्छता मे केवल पशुओ के शरीर की ही स्वच्छता नही, वरन् उनके चारे दाने तथा पानी की स्वच्छता तथा उनके बाधने के स्थान के आस-पास की जगह की स्वच्छता ध्यान मे रखने की भी विशेष आवश्यकता है।

पशु के शरीर को स्वच्छ रखने के लिए उसे दूसरे-चौथे दिन नदी या स्वच्छ पानी के तालाब या कुए पर ले जाकर खूब मल मल कर नहलाना चाहिए, किन्तु किसी ऐसी वस्तु से शरीर को नही रगडना चाहिए जिससे उसकी खाल छिल जाये। मनुष्य की त्वचा की भांति ही पशु की चमडी मे भी छोटे छोटे छिद्र होते हैं। ये छिद्र जब मैल से बन्द हो जाते हैं तो पशु के शरीर से पसीने के रूप मे निकलने वाला मल बाहर नही निकल पाता और वह कुछ दिनो मे अनेक रोगो को जन्म देता है। पशु को नहलाते रहने से उसकी चमडी के छिद्र खुले रहते हैं और उनसे पसीने के द्वारा शरीर के अन्दर का मल तथा विष बाहर निकलता रहता है, जिससे पशु प्रसन्नचित्त, फुर्तीला और नीरोग रहता है और काम भी चुस्ती के साथ करता है।

इसके बाद पशु के बांधने के स्थान तथा आस-पास की सफाई का नम्बर आता है। चूकि पशु अपने बैठने के स्थान पर ही मल मूत्र त्याग करते रहते हैं, इसलिए उस स्थान की सुबह शाम नियमित रूप से अच्छी तरह सफाई करनी चाहिए। इस काम मे कभी आलस्य नही करना चाहिए। क्योंकि पशु

वे गोबर म बहुत जल्दी कीडे पड जाते हैं और वे कीडे ही अनेक रोगो की उत्पत्ति का कारण बनते हैं। इसलिए यदि सम्भव हो, तो मलमूत्र त्याग करते ही उस स्थान को तत्क्षण साफ कर देना चाहिए।

एक बात का और विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि पशु के बाधने का स्थान गडढेदार अथवा समतल नही रखना चाहिए। क्योकि ऐसे स्थान मे पशु का मलमूत्र थोडा बहुत भरा रह जाता है अथवा दलदल-सा हो जाता है और फिर पशु वहा बठता है, तो उसके शरीर मे लिपट जाता है। यदि पशु के बाधने का स्थान ऐसा बना लिया जाये कि वह पीछे की ओर कुछ ढलान-सा लिए हुए हो तो मूत्र तत्काल बह जाएगा और वहा दलदल नही होने पाएगा। साथ ही उस स्थान की भूमि यदि पक्की न हो, तो कठोर अवश्य ही होनी चाहिए। मुलायम मिट्टी की भूमि पशु के मूत्र का तत्काल सोखकर दलदल कर देती है। इसीलिए बडे बडे फार्मों तथा पशु पालन केन्द्रो मे तो पशुओ के बाधने का स्थान हमेशा पक्के फर्श का बनाया जाता है।

अन्त मे पशुओ की शारीरिक स्वच्छता के सम्बन्ध मे एक आवश्यक बात और भी ध्यान मे रखनी चाहिए कि पशुओ के शरीर म प्राय जुए अथवा कीडे पड जाते हैं, जो उनकी खाल से चिपटे रहकर उनका खून चूसते रहते हैं। इन कीडो को छुडाकर फेंकते रहना चाहिए। जुए तथा कीडे मारने के लिए पशु को कभी-कभी तम्बाकू के पानी से नहलाते रहना चाहिए। मिट्टी के तेल से भी जुएं आदि मर जाती हैं, किन्तु इसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। पशु के बाधने के स्थान की सफाई के लिए कभी कभी फिनायल आदि कीटाणु-नाशक दवाइयो के पानी से स्थान को धोते रहना चाहिए। ताकि वहां के कीडे मर जायें। तात्पर्य यह है कि स्वच्छता का पूरा पूरा ध्यान रखना आवश्यक है।

श्रम अर्थात् मेहनत—श्रम भी पशु के स्वास्थ्य का प्रमुख आधार है। क्योंकि बिना श्रम के न तो वे अपना आहार (चारा दाना) ही ठीक प्रकार से पचा पाते हैं और न ही उनके शरीर मे स्फूर्ति, शक्ति तथा बलिष्ठता का संचार ठीक से होता है। यदि पशु चौबीसो घन्टे एक ही स्थान पर बधा रहे,

तो वह निकम्मा, शिथिल, आलसी उदासीन और अस्वस्थ होकर अन्त में मर जाएगा। इसलिए पशुओं का श्रम करना भी अत्यन्त आवश्यक है। श्रम करने से उनका खाया पीया चारा दाना भली भांति पचकर उनके शरीर में लगेगा। साथ ही पसीने द्वारा शरीर के अनुपयोगी तत्व बाहर निकलेंगे, जिससे पशु नीरोग तथा फुर्तीला रहेगा।

सवारी तथा खेती-बाड़ी अथवा भारवाहन में काम आने वाले पशु तथा घोड़े, गधे, बैल भैंस आदि पशु तो श्रम करते ही हैं, क्योंकि उनका काम ही श्रमसाध्य है, किन्तु समस्या दूध देने वाले पशुओं की है। इन पशुओं को दिन में खूंटे से खोलकर कम से कम 5-6 घण्टे जंगल में स्वच्छतापूर्वक विचरण करने देना चाहिए। विशेषकर गाभिन पशु के लिए तो यह अनिवार्य है। जंगल में चरते समय पशु आवश्यकतानुसार स्वतः ही दौड़ भाग कर अथवा चलकर थोड़ा-बहुत श्रम कर लेता है, जिससे उसे आनन्द भी प्राप्त होता है।

विश्राम अर्थात आराम—मनुष्य हो अथवा पशु स्वस्थ रहने के लिए जितना श्रम करना आवश्यक है, उतना ही विश्राम करना भी अनिवार्य है। इसी लिए प्रकृति ने दिन और रात बनाए हैं, ताकि जीवमात्र दिन में श्रम करके रात्रि में स्वाभाविक रूप से आराम कर सकें।

कठिन परिश्रम करने वाले पशु बैलों, घोड़ों आदि के विश्राम का भी पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। अधिक परिश्रम के उपरान्त यदि पर्याप्त विश्राम न मिले और उनकी थकावट दूर न हो तो शरीर क्षीण होने लगता है और पशु निरन्तर दुर्बल होता चला जाता है। कठिन से कठिन काम लेने के पश्चात यदि उसे कुछ घण्टों के लिए पूरा विश्राम मिलता रहे, तो उसमें पुनः परिश्रम करने के लिए नई शक्ति व स्फूर्ति उत्पन्न हो जाती है और उसका स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। विश्राम के अलावा पशुओं की थकावट दूर करने के लिए उनकी जांघों को अच्छी तरह एक घण्टे तक मलना चाहिए और मालिश के बाद थोड़ी देर उन्हें धीरे धीरे टहलाना चाहिये। इस प्रकार उनकी थकावट जल्दी दूर हो जाती है। घोड़ों के लिए तो यह अनिवार्य सा है।

स्वच्छन्दता अर्थात विचरण—पालतू पशु भी एक स्थान पर बंधकर रहना

कभी पसन्द नही करते, उन्हें स्वच्छन्द होकर विचरण करने में आनन्द आता है, इसलिए थोडी-बहुत देर को पशु को आजाद छोडना भी बडा जरूरी माना गया है। ताकि वे इच्छानुसार भागदौड, लोट-पोट अथवा चहलकदमी कर सकें। इन कामों से उसका मन बडा प्रसन्न रहता है और स्वस्थ रहने के लिए मन का प्रसन्न रहना जरूरी है। यदि पशु काटने वाला, सींग मारने वाला या अन्य किसी प्रकार से दूसरो के लिये हानिकारक है, तो उसे आजाद न छोडकर स्वय उस पशु के मालिक को उसकी रस्सी पकडकर जगल मे घुमाने ले जाना चाहिए। उक्त सब बातें पशुओ को स्वस्थ व नीरोग रखने मे बहुत सहायक सिद्ध होती हैं।

पशु पालको के लिए आवश्यक हिदायतें

प्राय देखा गया है कि पशु हमारी गलतियो तथा असावधानियो के कारण ही बीमार पडते हैं, अन्यथा उनके शरीर मे रोगो की रोकथाम के लिए पर्याप्त प्राकृतिक क्षमता होती है और यदि हम से भूल न हो तो पशु बहुत ही कम बीमार पडें। इसलिए यहा हम अपने पशुपालक बन्धुओ के लिए कुछ आवश्यक बातें लिख रहे हैं, जिनका ध्यान रखने से उनके पशु बीमार भी कम पडेंगे और उनकी उत्पादकता भी बढेगी।

(१) सबसे प्रमुख बात सफाई की है। पीछे लिखे गए शारीरिक स्वच्छता आहार व जल की स्वच्छता तथा स्थान की स्वच्छता के नियमो का पूरी तरह पालन करें।

(२) किसी बीमार पशु को दूसरे स्वस्थ पशु के साथ कभी नहीं बाधना चाहिए और विशेषकर उस दशा मे जब पशु किसी छूत के रोग से पीडित हो। याद रखिए कि एक पशु की छूत की बीमारी के कीडे उडकर तमाम पशुओ को बीमार कर सकते हैं। इस लिए रोगी पशु को तुरन्त अलग स्थान पर अन्य पशुओ से काफी दूरी पर रखें।

(३) बहुत-से पशु पालक लोभ के कारण बीमार पशु की नाद मे बचा हुआ चारा-दाना स्वस्थ पशुओ को खिला देते हैं और इस प्रकार दूसरे पशु भी बीमार पड जाते हैं। इसलिए बीमार पशु का बचा चारा स्वस्थ पशु को कभी न डालें।

(४) पशुओ को सर्दी, गरमी, धूप वर्षा आदि से बचाने का समुचि प्रबन्ध होना चाहिए। उन्हें छप्पर अथवा छत के नीचे बांधना चाहिए।

(५) साथ ही ऐसा भी न हो कि स्वस्थ पशु को धूप तथा खुली ह बिलकुल न मिले। उन्हे ये चीजें उचित रूप मे अवश्य मिलनी चाहिए।

(६) पशुओ के बीमार पडने का एक मुख्य कारण उन्हें पर्याप्त मात्रा पोषक तत्वो से युक्त चारा-दाना न मिलना भी होता है। साथ ही पशु पा भी काफी मात्रा मे पीते हैं, इसलिए उन्हे आवश्यकतानुसार स्वच्छ पानी अवश्य पिलाते रहना चाहिए।

(७) पशुओ को आहार, उनके काम, परिश्रम, शरीर के आकार तथ भार के अनुसार उचित ढग से निर्धारित किया हुआ तथा उपयुक्त मात्रा में दिया जाना चाहिए। यह नही कि गाय, भैस, बकरी, घोडा ऊट सबक एक जैसा चारा-दाना बिना सोचे समझे खिलाते रहे, चाहे उनकी आवश्यकत की पूर्ति हो या न हो।

(८) यदि पशु को खाने के लिए तो अत्यधिक पौष्टिक और अच्छा चारा-दाना दिया जाये, और उससे काम कुछ भी न लिया जाये, बल्कि वह एक खूंटे से बधा रहे, तो भी वह असदिग्ध रूप से बीमार पड जाएगा। पौष्टिक आहार को हजम करने के लिए उससे पर्याप्त परिश्रम का काम अवश्य लिया जाना चाहिए।

(९) भारत मे अधिकतर पशु पोखरों का गन्दा पानी पिलाए जाने के कारण ही बीमार पडते हैं क्योकि गन्दे पानी के कीडे पेट म जाकर तरह-तरह के रोग उत्पन्न कर देते हैं। पशु को नदी या कुए का स्वच्छ जल पिलाना चाहिए।

(१०) इसी प्रकार चारा-दाना भी अगर साफ न किया जाये, तो उसमे लगी मिट्टी, कीडे आदि पशु के पेट मे जाकर रोग पैदा कर देते हैं। इसीलिए चारे तथा दाने आदि पशु को खिलाने से पूर्व झाडकर अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए।

(११) दुधारू पशुओ का दूध निकालते समय उनके सामने खली, गुड,

चोकर आदि कोई अच्छी रुचिकारक वस्तु रखनी चाहिए। इससे पशु चुपचाप खडा रहता है और दूध भी अधिक देता है।

(१२) चोकर खली आदि जो भी पौष्टिक पदार्थ उन्हें दूध बढाने के लिए दिया जाये वह कम से कम चार गुने पानी म मिलाकर देना चाहिए ताकि वे पशु को भली प्रकार पच जायें।

(१३) साथ ही इस बात का भी ध्यान रखें कि खली, चोकर, चून, दाना आदि पशु को खिलाने से कुछ घटे पूव ही पानी मे भिगो देना चाहिए। इससे पशु उसे रुचिपूवक खाएगा और वह चारे आदि म ठीक से मिल सकेगी। किन्तु अधिक समय तक पानी मे पडी पडी सडने भी नही देनी चाहिए।

(१४) पशुओं के सामने सेंधा नमक का एक बडा ढेला सदा रखा रहना चाहिए ताकि वे अपनी इच्छानुसार जब चाहें, उसे चाटते रहें। नमक पशु के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। यदि हर समय रखना सम्भव न हो, तो कभी कभी नमक अवश्य खिलाते रहना चाहिए।

(१५) बडे शहरो मे लालची पशु-पालक दुधारू पशुओ को कुछ ऐसी दवाओ का सेवन कराते हैं कि उनका दूध तत्काल बढ जाता है, किन्तु इस प्रकार अप्राकृतिक ढग से दूध बढाना आगे चलकर पशु को बिल्कुल बेकार कर देना है और फिर वे सामान्य मात्रा म भी दूध नही देते। इसलिए हमे लोभवश ऐसे तरीके नही अपनाने चाहिए।

(१६) कुछ लालची भाई पशु के बच्चो को बिल्कुल भी दूध नही पीने देते बल्कि बच्चे को पास म खडा करके ही दूध निकालना शुरू कर देते हैं। इससे बच्चे शीघ्र मर जाते हैं और उस पशु की प्रजनन शक्ति व दुग्ध उत्पादन क्षमता धीरे धीरे नष्टप्राय हो जाती है। बच्चे को बिल्कुल दूध न पिलाना भारी मूर्खता है।

स्वस्थ व रोगी पशुओं के लक्षण

पशु एक मूक प्राणी है। रोगग्रस्त होने की दशा मे भी वह अपना कष्ट मुह से नही बता सकता। किन्तु वर्षों के अध्ययन के आधार पर मनुष्य को आज इतना अनुभव प्राप्त हो चुका है कि उसके लक्षणा से ही पशु चिकित्सक

अथवा अनुभवी पशुपालक उसके रोग, कष्ट तथा दशा का तत्काल निदान कर लेते हैं।

स्वस्थ पशुओ के लक्षण

(१) स्वस्थ पशु चारे और दाने आदि को खूब रुचि के साथ खाता है और जब भी उसे खाने के लिए कोई नई वस्तु दी जाए, वह बड़े उत्साह से उसे खाने के लिए झपटता है।

(२) स्वस्थ पशु खाये गये चारे और दाने को भली प्रकार जुगाली कर के घंटो चबाता रहता है। ताकि वह अच्छी तरह पच जाये और उसके शरीर को आवश्यक शक्ति दे।

(३) स्वस्थ पशु दिन भर म कम से कम दो बार पेट भरकर पानी पीता है और यह पानी की मात्रा उसके शरीर के आकार के अनुसार पर्याप्त होती है। आपको ज्ञात होना चाहिए कि एक गाय या भैंस प्रतिदिन ६ गैलन से ८ गैलन तक पानी पीती है। घोड़ा बंधे रहने पर सामान्य मौसम मे ८ गैलन और गरमी के दिनों मे अधिक काम करने पर लगभग उससे दूना अर्थात् १५-१६ गैलन पानी पीता है। ऊंट को यदि रोज पानी पिलाया जाये तो ४ से ८ गैलन तक प्रतिदिन और कई दिनों बाद पिलाया जाये तो एक ही बार मे २० गैलन तक पानी पी जाता है। बकरी, भेड़, सूअर आदि छोटे पशुओ को प्रतिदिन लगभग ४ गैलन पानी की आवश्यकता होती है। हाथी प्रतिदिन २० से २५ गैलन तक पानी पी जाता है। तात्पर्य यह कि स्वस्थ पशु पानी खूब पीते हैं। (एक गैलन १० पौण्ड के बराबर होता है।)

(४) स्वस्थ पशु हमेशा अन्य पशुओं के साथ रहना पसन्द करता है और सामूहिक रूप से चरने, घूमने तथा आपस म लड़-लड़ कर खेलने मे विशेष आनन्द पाता है।

(५) स्वस्थ पशुओं की आंखो म हमेशा चमक और तेज पाया जाता है। उनके नथुने तथा मुंह की थूथरी सदा चमकीली सी दिखाई देती है।

(६) स्वस्थ पशु अपने कानों तथा पूंछ को हर समय स्वाभाविक रूप से हिलाया-डुलाया करता है और हर समय चौकन्ना तथा चुस्त दिखाई देगा।

उसके पास जैसे ही कोई जाएगा, वह सतर्क होकर उसे देखेगा।

(७) स्वस्थ पशु दिन भर में कम से कम ५ ६ बार गोबर तथा मूत्र का त्याग करता है।

(८) स्वस्थ पशु का गोबर, लीद आदि न अधिक गाढ़ा व कड़ा होता है और न अधिक पतला।

(९) स्वस्थ पशु के शरीर में किसी प्रकार की असह्य दुर्गन्ध नहीं होती—सामान्य दुर्गन्ध तो होती ही है।

(१०) स्वस्थ पशु की गुदा अर्थात मल त्याग का स्थान गोबर करने के पश्चात् भी बिल्कुल साफ रहता है। उसका गोबर गुदा में आस पास चिपटता नहीं।

(११) स्वस्थ पशु के बालों, रोम तथा त्वचा में हर समय चमक-सी रहती है और वह चेतन दिखाई देता है।

(१२) स्वस्थ पशु के शरीर के किसी भाग पर अंगुली रखते ही वह शरीर को सिकोड़ने या थरथराने लगता है। यही थरथराहट वह शरीर पर मक्खी या किसी पक्षी आदि के बैठ जाने पर करता है और यदि वह फिर भी नहीं उड़े तो पशु तुरन्त पूंछ द्वारा उड़ा देता है।

(१३) स्वस्थ पशु एक मिनट में १०-१२ बार श्वास लेता है।

(१४) स्वस्थ पशु की नाड़ी की गति ४०-५० के मध्य प्रति मिनट रहती है। पशु की नाड़ी हमेशा पूंछ के नीचे देखी जाती है।

(१५) गाय, भैंस आदि पशुओं का सामान्य तापमान १०१ व १०२ डिग्री फारनहीट के लगभग रहता है। विशेष अवस्था में थर्मामीटर द्वारा उसका तापमान लेकर भी जाना जा सकता है। जैसा पीछे लिखा जा चुका है, पशु का तापमान पूंछ के नीचे गुदा स्थान पर लिया जाता है।

रोगी पशु के सामान्य लक्षण

रोगी पशुओं में विशेष लक्षण तो उसके रोग की किस्म के अनुसार अलग प्रकट होते हैं, किन्तु साधारण रोगी की दशा में ये लक्षण पशुओं में दृष्टिगत होते हैं, जिन्हें देखकर सहज ही यह पता चल

पशु किस बीमारी से ग्रस्त हो गया है।

(१) सबसे पहला लक्षण यह प्रकट होता है कि रोगी पशु चारा दाना आदि खाना बन्द कर देता है और यदि खाता भी है तो बहुत थोडा और बेमन से।

(२) रोगी पशु जुगाली करना भी बन्द कर देता है और अगर थाडी बहुत करता भी है, तो इतने धीरे जैसे उसे जुगाली करने में भी बहुत कष्ट हो रहा हो। यह पशु के रोगी होने का प्रमुख लक्षण है।

(३) इसी प्रकार रोगी पशु या तो पानी पीना बिल्कुल छोड देता है या फिर कुछ विशेष रोगो मे इसकी प्यास उतनी बढ़ जाती है कि वह बार बार पानी पीना चाहता है। सामान्य रोगो मे वह २ ४ घूट पानी पीकर ही रह जाता है।

(४) रोगी पशु अन्य पशुओ का झुण्ड छोडकर अलग अलग चुपचाप जा खडा होता है और अन्य पशुओ से अलग ही रहना चाहता है। यह लक्षण देख कर तत्काल समझ लेना चाहिए कि पशु बीमार है।

(५) रोगी पशु की आखों की चमक क्षीण हो जाती है, नथुने तथा मुह की थूथरी भी सूखी-सूखी सी दिखाई देती है और उनम चमक अथवा तेज नहीं रहता है।

(६) रोगी पशु कान पूछ आदि स्वाभाविक रूप से हिलाना बन्द कर देता है। कभी कभार ही विवश होकर पूछ हिलाता है।

(७) रोगी पशु गोबर मूत्र भी स्वाभाविक ढग से नही करता। या तो बहुत कम करता है अथवा बहुत अधिक और बार-बार करता है।

(८) रोगी पशु का गोबर अधिक पतला अथवा कभी-कभी अधिक गाढ़ा व कडा भद्दे तथा मटमैले रग का, चमक-विहीन और तीव्र दुर्गन्ध वाला होता है, जिसमे सहज ही पता चल जाता है कि पशु बीमार है।

(९) रोगी पशु की गुदा का बाह्य भाग गोबर करते समय सन जाता है। यानी गोबर गुदा के आस-पास चिपट जाता है क्योंकि बीमार पशु का गोबर लसदार होता है।

(१०) रोगी पशु का शरीर दुबल, क्षीण, निस्तेज तथा सुस्त हो जाता है और उसकी स्फूर्ति और चेतना नष्ट हो जाती है। प्राय वह आखे बन्द किए शिथिल-सा पडा रहता है और उसके पास चाहे जो चला जाये, वह तनिक भी चेतन अथवा हिलता जुलता नही दिखाई देता।

(११) रोगी पशु के शरीर को छूने पर भी उसमे किसी प्रकार का स्फुरण अथवा थरथराहट पैदा नही होती। यहा तक कि कभी कभी तो कौओ, कबूतरो आदि पक्षियो द्वारा चोच मारते रहने पर भी वे चुपचाप पडा रहता है और उन्हें उडाने के लिए न तो उसमे पूछ उठाने की ही शक्ति होती है और न शरीर को हिलाने डुलाने की ही।

(१२) रोगी पशु की श्वास की गति भी या तो अधिक तेज हो जाती है अथवा बहुत कम हो जाती है।

(१३) इसी प्रकार रोगी पशु की नाडी की गति भी या तो सामान्य गति से तेज हो जाती है अथवा काफी कम हो जाती है। श्वास तथा नाडी की गति का इस प्रकार घटना या बढना रोग के अनुसार होता है।

(१४) ज्वर आदि रोगो मे पशु के शरीर का तापमान भी उसी प्रकार बढ जाता है, जसे मनुष्य का। अन्य अनेक रोगो मे तापमान सामान्य से गिर भी जाता है।

(१५) दुधारू पशु रोग की दशा मे दूध या तो बिल्कुल ही नही देते अथवा बहुत कम देते हैं। ध्यान रहे कि रोगी पशु का दूध निकालना भी नही चाहिए। उस दूध के सेवन करने से आपके परिवार के लोग भी भयकर रोगो से ग्रस्त हो सकते हैं।

(१६) रोगी पशुओ के कान प्राय नीचे को लटक जाते हैं और रोम तथा बाल खडे खडे-से दीखते हैं। उसके बालो तथा चमडी की चमक भी नष्ट हो जाती है।

(१७) कभी कभी पशु के कानो की जड के पास वाला भाग गरम और ऊपरी सिरा ठण्डा मालूम देता है। यह भी पशु के रोगी होने के लक्षण हैं।

(१८) रोगी पशु की आखो से कीचड बहुत निकलता है और प्राय

से पानी भी बहने लगता है तथा मुह स झाग और लार भी अधिक गिरने लग जाती है।

(१६) इन सामान्य लक्षणो के अतिरिक्त कभी-कभी कुछ विशेष रोगा की दशा म पशु बेचनी से बार-बार करवटें बदलता है, कभी जीभ को बार-बार बाहर निकालता है। ये लक्षण भी उसके रोग की तीव्रता को प्रकट करते हैं।

(२०) पशु का जोर जोर से हाफना, एक ही स्थान पर बेचनी से चक्कर काटना, घबराया हुआ-सा दिखाई देना, अपने मालिक को बेचैनी से दखना आदि लक्षण भी उसके रोग की दशा के परिचायक होते हैं।

उक्त लक्षणो को देखकर तत्काल समझ लें कि पशु बीमार हो गया है और उसे तत्काल अन्य पशुओ से अलग करके आगे बताए गए लक्षणो के आधार पर उसके राग का सही निदान करने की चेष्टा करें और तदनुकूल चिकित्सा करें अथवा किसी पशु चिकित्सालय मे ले जाकर दिखायें। रोगी पशु को शुश्रूषा तथा देखभाल पूरी सहानुभूति के साथ करनी चाहिए।

रोगी पशु की शुश्रूषा व देखभाल कैसे करें ?

रोगी पशु की तीमारदारी तथा देखभाल हमे बहुत सावधानी, प्रेम, दया और कत्तव्य की भावना से ठीक उसी प्रकार करनी चाहिए, जसे हम बीमारी की दशा मे अपने परिवार के किसी सदस्य की करते हैं। अपने परिवार का कोई रोगी सदस्य तो आवश्यकता पडने पर पानी, दूध दवा आदि वस्तुए मुह से माग भी सकता है अथवा अपना कष्ट, रोग आदि भी बता सकता है, किन्तु ये निरीह प्राणी, जो आपके परिवार को दूध, घी, मक्खन जसे अमृत तुल्य व पौष्टिक पदाथ प्रदान करके पालते हैं अथवा ऊन द्वारा आपकी आवश्यकतायें पूरी करने मे अपने जीवन तक का बलिदान दे देते हैं बीमार पड जाने पर न तो अपना कष्ट ही आपको बताने म समथ होते हैं और न स्वय उसके निवारणाथ कुछ उपक्रम कर सकते हैं। ये तो पूणतया आपकी सहृदयता और सहायता पर ही आश्रित रहते हैं। हमारा यह कत्तव्य तथा नैतिक उत्तरदायित्व है कि हम अपने आश्रित इन निरीह पशुओं की रोग की दशा में पूरे ध्यान से और सहानुभूतिपूवक शुश्रूषा तथा देखभाल करें। यदि उनकी ऐसी दयनीय

दशा मे भी कोई मनुष्य उनके साथ क्रूर व्यवहार करता है अथवा उनकी उपेक्षा करता है, तो वह मनुष्य नहीं ।

फिर हमारी भारतीय सस्कृति मे तो प्राणिमात्र के साथ दयाभाव रखना सर्वोपरि माना गया है । हमारे धर्म म पशु-पक्षी आदि जीवो तथा दीन-दुखियारे मनुष्यो के साथ दयापूर्ण व्यवहार करना सर्वोच्च कर्त्तव्य बताया गया है । यदि कोई पशुओ के साथ निर्दयतापूर्ण व्यवहार करता दिखाई दे तो हमे प्रेम से उसे समझा देना चाहिए, ताकि वह फिर वैसा न करे ।

रोगी पशु की तीमारदारी चिकित्सा और देखभाल मे हमे निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना चाहिए—

(१) रोगी पशु को तेज हवा के झोको से बचाना चाहिए । उन्हें खुले स्थान मे न बाधे रखकर छायादार स्थान मे बाधना चाहिए ।

(२) तेज सर्दी से बचाने के लिए हमे पशु के शरीर पर मोटे कपडे की झोल, कम्बल आदि डालकर उनका शरीर ढक देना चाहिए और यदि असाधारण सर्दी हो, तो उसके आस पास आग जला देनी चाहिए ताकि जिस स्थान मे पशु बधा है, वह स्थान गरम रहे। किन्तु एक बात याद रहे कि आग आदि जलाकर पशु का कमरा गरम रखते समय यह जरूरी है कि कमरे के रोशनदान खुले हो, ताकि साफ हवा आती रहे। यदि कमरा बिल्कुल बन्द हुआ और हवा न आ-जा सकी तो पशु दम घुटकर मर जायेगा । साथ ही यदि आपने एक ओर तो पशु के निकट आग जला दी, दूसरी ओर खिडकी और दरवाजा खुला रहने दिया, जिससे होकर ठडी हवा पशु के शरीर मे सीधी लगती रही, तो भी वह पशु के लिए हानिकारक सिद्ध होगी । प्रबन्ध ऐसा करें कि न तो पशु को सीधी हवा के झोंके ही लगें और न ही ऐसा हो कि कमरे मे बाहर की शुद्ध हवा आ ही न सके और न कमरे की दूषित वायु निकल सके । दोनो बातो का ध्यान रखकर समुचित प्रबन्ध करें ।

(३) रोगी पशु को मक्खी, मच्छर आदि से बचाने के लिए उसके बाधे जाने के स्थान पर प्रतिदिन सुबह शाम गूगल, राल और गधक अथवा किसी अन्य ऐसी ही चीज व कीटाणुनाशक दवा का धुआ करना चाहिए ।

तथा रोगाणुरोधक बनाने के लिए प्रयोग की जाती है । यह रोगाणुनाशक नहीं है ।

(च) पारे का क्लोराइड (Mercury ch
रीला पदाथ है इसलिए इसका प्रयोग बहुत सावधानी से करनी चाहिए । किंतु यह सम्भवत सब से तेज रोगाणुनाशक है । एक हजार भाग पानी में यह [illegible] पदाथ एक भाग मे डालना पर्याप्त होता है ।

(छ) फिनायल—यह भी एक विश्वस्त रोगाणुनाशक पदार्थ है । १०० भाग पानी मे ५ भाग फिनायल डालकर घोल तैयार किया जाता है । किन्तु इसकी दुर्गन्ध देर तक रहती है, इसलिए दुधारू पशुओ के बाडो आदि मे इसका प्रयोग नही करना चाहिए । हा, रोगी पशु के स्थान को शुद्ध करने के लिए अच्छा है ।

(ज) कोलतार—कोलतार भी एक कीटाणुनाशक पदाथ है । दीवार आदि के नीचे के भागो पर प्राय कोलतार का कोट किया जाता है । घरो म अब इसके प्रयोग का प्रचलन बहुत कम हो गया है क्योकि गर्मियो मे पिघलकर कपडे आदि खराब कर देता है ।

(झ) इनके अतिरिक्त—डिटोल, लिस्टराइन, लायसोल तथा फोरमेलडे हाइड आदि औषधियाँ भी रोगाणुनाशक (Antiseptic) होती हैं । किन्तु इन्हें पानी की काफी बडी मात्रा मे घोलकर फुहारे द्वारा इनका छिडकाव करना चाहिए, क्योंकि ये सभी दवाए तेज गध वाली हैं ।

(५) रोगी पशु को नाल, ढरका (बाँस की पोली नली) बोतल आदि से दवा पिलाते समय या पशु को लिटाकर दवा लगाते समय अथवा पशु का करवट बदलवाते समय या एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते समय उसके साथ जबदस्ती अथवा निदयता से काम नहीं लेना चाहिए, बल्कि प्यार से पुचकार कर उसके शरीर पर हाथ फेरते हुए इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए कि पशु को तनिक भी कष्ट न हो या कम से कम कष्ट हो । कुछ अज्ञानी जन पशु के अड जाने या प्रतिरोध करने पर आवेश मे आकर उसे बुरी तरह मारने लगते हैं । यह घोर नृशसता और दानवता है । रोगी पशु के साथ

हमेशा दयापूर्ण बर्ताव करना चाहिए ।

(६) यदि पशु एक दिन से अधिक समय एक ही करवट पड़ा रहे, तो उसकी दबे हुए भाग की खाल गलने लग जाती है । इस बात का ध्यान रखें कि पशु एक ही करवट न पड़ा रहे । उसे दिन मे एक दो बार करवट बदलवाते रहना चाहिए । यदि पशु अपने आप करवट न बदल सके, तो आप स्वय उसे करवट बदलवा दें ।

(७) यदि किसी घाव, फोड़े, फुंसी आदि पर कोई तेज जहरीली दवा लगानी हो, तो बहुत सावधानी से लगाए, ताकि वह शरीर के अन्य कोमल भागो यथा आख, नाक, मुह आदि पर न लगे ।

(८) यदि पशु मे किसी असाधारण रोग के लक्षण प्रकट हो और आप ऐसा महसूस करें कि अब उसकी चिकित्सा करना आपकी सामर्थ्य से परे है, तो तत्काल ही उसे किसी पशु चिकित्सालय मे ले जायें अथवा पशु डाक्टर को वही बुला कर उपचार कराए । इसमे उपेक्षा नही करनी चाहिए ।

(९) रोगी पशु को दवा भली भांति रोग का निदान करके तथा पूर्ण विचार विमर्श व दूसरो की सलाह लेकर ही देनी चाहिए । ऐसा न हो कि असावधानी या अज्ञानतावश आप कोई जहरीली दवा उसे अधिक मात्रा मे खिला दें, जिससे लाभ होने की बजाय उसके प्राणों पर ही आ बने ।

(१०) रोगी पशु की तीमारदारी का भार नौकरों या नासमझ बच्चों के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिए—जब तक नौकर पूरी तरह विश्वासपात्र और जिम्मेदार न हो ।

(११) बीमार पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से तुरन्त दूर कर देना चाहिए । छूत की बीमारी मे तो तीमारदारी करने वाले व्यक्ति को भी काफी बचाव व सफाई का ध्यान रखना चाहिए । अन्यथा छूत फैलने का डर रहता है ।

(१२) रोगी पशु को ठीक होने के उपरान्त भी तुरन्त अन्य पशुओं के साथ नही बांधने लगना चाहिए जब तक यह पूरी तरह निश्चय न हो जाये कि उसके शरीर के रोगाणु पूरी तरह नष्ट हो चुके हैं ।

(१३) रोगी पशु को ठीक होने के [illegible] पूरी खुराक या

भर चारा-दाना नही खिलाने लगना चाहिए, क्योंकि रोग की दशा मे उसकी पाचन शक्ति क्षीण हो जाती है और उसके समस्त अग कमजोर व शिथिल हो जाते हैं। इसलिए उसकी खुराक धीरे धीरे बढाते हुए कई रोज में पूरी खुराक तक पहुचना चाहिए अन्यथा पशु पुन बीमार पड जायेगा।

(१४) सूर्य की धूप और गरमी ये दोनो ही शक्तिशाली रोगाणुनाशक का काम करती है। इसलिए स्वस्थ अथवा रोगी दोनों ही प्रकार के पशुओ को थोडी-बहुत देर के लिए ऐसे स्थान पर अवश्य रखें, जहां सूर्य की किरणें सीधी उनके शरीर पर पडे। गरमी के दिनो मे अधिक देर तक दोपहर म धूप म न रखें। इसी प्रकार सर्दी के मौसम मे रोगी पशु के आस-पास आग जलाकर गरमी पहुचाना भी लाभदायक सिद्ध होता है, क्योकि गरमी भी स्वत रोगाणु-नाशक है।

(१५) रोगी पशु के लिए स्वच्छ और शुद्ध वायु मिलना अति आवश्यक है, क्योकि शुद्ध वायु भी रोगाणुनाशक है। शरीर के अन्दर के अनेक रोगाणु तो सांस द्वारा शुद्ध वायु पहुचने से ही नष्ट हो जाते हैं।

(१६) रोगी पशु की झूल या उसे ओढाए गए कपडे बाद मे खौलते हुए सोडे या साबुन के पानी मे अच्छी तरह उबालने चाहिए, साथ ही तीमारदारी करने वाले व्यक्ति को भी अपने कपडे रोज साबुन के घोल मे खौलाने चाहिए, ताकि कीटाणु मर जायें। पशु के मल मूत्र को भी कलई आदि डालकर कीटाणुओं से रहित कर देना चाहिए।

उपरोक्त नियमों का पालन करने से एक तो रोग आपके गाव म अथवा अन्य पशुओ मे नहीं फैलेगा दूसरे आपका रोगी पशु भी शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेगा।

गाभिन पशु को शुश्रूषा व देख-भाल कैसे करें ?

मादा पशु यथा गाय, भैंस, घोडी ऊँटनी, गधी, भेड, बकरी कुतिया तथा सूअरी आदि जब गाभिन होती है, यानी उनका गर्भकाल चल रहा होता है, तो उनकी देख भाल और सेवा शुश्रूषा बहुत ही सावधानी से करने की आवश्यकता है, जैसे एक बीमार पशु की। यदि उचित ढग से उनकी देख-भाल न

हमेशा दयापूर्ण वर्ताव करना चाहिए।

(६) यदि पशु एक दिन से अधिक समय एक ही करवट पड़ा रहे, तो उसकी दबे हुए भाग की खाल गलने लग जाती है। इस बात का ध्यान रखें कि पशु एक ही करवट न पड़ा रहे। उसे दिन में एक दो बार करवट बदलवाते रहना चाहिए। यदि पशु अपने आप करवट न बदल सके, तो आप स्वयं उसे करवट बदलवा दें।

(७) यदि किसी घाव, फोड़े, फुंसी आदि पर कोई तेज जहरीली दवा लगानी हो, तो बहुत सावधानी से लगाए, ताकि वह शरीर के अन्य कोमल भागों यथा आंख, नाक, मुंह आदि पर न लगे।

(८) यदि पशु में किसी असाधारण रोग के लक्षण प्रकट हों और आप ऐसा महसूस करें कि अब उसकी चिकित्सा करना आपकी सामर्थ्य से परे है, तो तत्काल ही उसे किसी पशु चिकित्सालय में ले जायें अथवा पशु-डाक्टर को वहीं बुला कर उपचार कराए। इसमें उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

(९) रोगी पशु को दवा भली भांति रोग का निदान करके तथा पूर्ण विचार विमर्श व दूसरों की सलाह लेकर ही देनी चाहिए। ऐसा न हो कि असावधानी या अज्ञानतावश आप कोई जहरीली दवा उसे अधिक मात्रा में खिला दें, जिससे लाभ होने की बजाय उसके प्राणों पर ही आ बने।

(१०) रोगी पशु की तीमारदारी का भार नौकरों या नासमझ बच्चों के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिए—जब तक नौकर पूरी तरह विश्वासपात्र और जिम्मेदार न हो।

(११) बीमार पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से तुरन्त दूर कर देना चाहिए। छूत की बीमारी में तो तीमारदारी करने वाले व्यक्ति को भी काफी बचाव व सफाई का ध्यान रखना चाहिए। अन्यथा छूत फैलने का डर रहता है।

(१२) रोगी पशु को ठीक होने के उपरान्त भी तुरन्त अन्य पशुओं के साथ नहीं बांधने लगना चाहिए जब तक यह पूरी तरह निश्चय न हो जाये कि उसके शरीर के रोगाणु पूरी तरह नष्ट हो चुके हैं।

(१३) रोगी पशु को ठीक होने के पश्चात् एकदम पूरी खुराक या पेट

कर घास-दाना नही खिलाने लगना चाहिए, क्योंकि रोग की दशा में उसकी पाचन शक्ति क्षीण हो जाती है और उसके समस्त अंग कमजोर व शिथिल हो जाते हैं। इसलिए उसकी खुराक धीरे-धीरे बढ़ाते हुए कई रोज में पूरी खुराक तक पहुंचना चाहिए, अन्यथा पशु पुनः बीमार पड जायेगा।

(१४) सूर्य की धूप और गरमी ये दोनों ही शक्तिशाली रोगाणुनाशक का काम करती हैं। इसलिए स्वस्थ अथवा रोगी दोनों ही प्रकार के पशुओं को थोड़ी बहुत देर के लिए ऐसे स्थान पर अवश्य रखें जहां सूर्य की किरणें सीधी उनके शरीर पर पड़ें। गरमी के दिनों में अधिक देर तक दोपहर में धूप में न रखें। इसी प्रकार सर्दी के मौसम में रोगी पशु के आस-पास आग जलाकर गरमी पहुंचाना भी लाभदायक सिद्ध होता है, क्योंकि गरमी भी स्वतः रोगाणुनाशक है।

(१५) रोगी पशु के लिए स्वच्छ और शुद्ध वायु मिलना अति आवश्यक है, क्योंकि शुद्ध वायु भी रोगाणुनाशक है। शरीर के अन्दर के अनेक रोगाणु तो सांस द्वारा शुद्ध वायु पहुंचने से ही नष्ट हो जाते हैं।

(१६) रोगी पशु की झूल या उसे ओढ़ाए गए कपड़े बाद में खौलते हुए सोडे या साबुन के पानी में अच्छी तरह उबालने चाहिए। साथ ही तीमारदारी करने वाले व्यक्ति को भी अपने कपड़े रोज साबुन के घोल में खौलाने चाहिए, ताकि कीटाणु मर जायें। पशु के मल मूत्र को भी कलई आदि डालकर कीटाणुओं से रहित कर देना चाहिए।

उपरोक्त नियमों का पालन करने से एक तो रोग आपके गांव में अथवा अन्य पशुओं में नहीं फैलेगा, दूसरे आपका रोगी पशु भी शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेगा।

गाभिन पशु की शुश्रूषा व देख-भाल कैसे करें?

मादा पशु यथा गाय, भैंस, घोड़ी, ऊँटनी, गधी, भेड़, बकरी, कुतिया तथा सूअरी आदि जब गाभिन होती है, यानी उनका गर्भकाल चल रहा होता है, तो उनकी देख भाल और सेवा शुश्रूषा बहुत ही सावधानी से करने की आवश्यकता है, जैसे एक बीमार पशु की। यदि उचित ढंग से उनकी देख-भाल न

भी जाये तो उनके पेट का बच्चा और स्वय मादा पशु के मर जाने का हर समय अन्देशा रहता है। इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि गर्भकाल मादा पशुओ के लिए भी गर्भिणी स्त्री क समान ही सकटकाल होता है जिसमे वह प्रतिक्षण जीवन और मृत्यु के झूले मे झूलती रहती है। इसलिए इस सम्बन्ध मे कुछ मुख्य मुख्य ज्ञातव्य बातें आपकी जानकारी के लिए हम यहा लिखना निता-त आवश्यक समझते हैं —

(१) मादा पशुओ को गाभिन कराने की तारीख तथा महीने आदि का रिकाड रखना चाहिए, ताकि आप सही तौर पर अन्दाजा लगा सकें कि अमुक पशु किस दिन और किस महीने मे प्रसव करेगा यानी बच्चे को जन्म देगा। इसके लिए विभिन्न पशुओ का गर्भकाल ज्ञात होना चाहिए, जो इस प्रकार होता है —

(१) गाय का गर्भकाल	—	औसतन २८५ दिन या ९ मास से कुछ दिन ऊपर होता है।
(२) भैंस का गर्भकाल	—	औसतन ३१० दिन होता है।
(३) घोडी का गर्भकाल	—	औसतन ३४० दिन होता है।
(४) ऊटनी का गर्भकाल	—	औसतन ५४ सप्ताह रहता है।
(५) गधी का गर्भकाल	—	११¾ से १२ महीने तक होता है।
(६) भेड का गर्भकाल	—	औसतन १५० दिन होता है।
(७) बकरी का गर्भकाल	—	औसतन १५४ दिन होता है।
(८) सुअरी का गर्भकाल	—	औसतन ११३ दिन होता है।
(९) कुतिया का गर्भकाल	—	औसतन ६२ दिन का होता है।

इस प्रकार यदि आपके पास पशु के गाभिन होने की तारीख लिखी हुई है तो आप ठीक ठीक जान सकते हैं कि आपका पशु कब बच्चा जनेगा और उसी प्रकार उसका प्रबन्ध कर सकेंगे।

(२) गाभिन पशु को अपने शरीर के पोषण के लिए तथा गर्भस्थ शिशु के पोषण व शरीर विकास के लिए दुहरी खुराक व पोषक तत्वो की आवश्यकता होती है इसलिए उन्हें रुचिकारक पोषक तत्वों से भरपूर अच्छी खुराक के

चारे मे पीछे विस्तार से लिखा जा चुका है। उसके अनुसार ही उसकी खुराक निर्धारित की जानी चाहिए।

(३) गाभिन पशु के साथ बहुत ही प्यार भरा, विनम्र और दयापूर्ण व्यवहार करना चाहिए, जैसा रोगी पशु के साथ। गाभिन पशु से भद्दे ढग से काम लेने ठोकर मारने या डण्डे आदि से मारने से उसका स्वभाव बिगड जाता है। यदि एक बार उनका स्वभाव बिगड गया, तो फिर उसे सुधारना बहुत कठिन हो जाता है।

(४) गाभिन पशु मे अधिक मेहनत वाले काम नही कराने चाहिए। उन्हें अधिक चलाने, तेज दौडाने, कुत्तों द्वारा पीछा कराना या डराना, दूसरे पशुओ के साथ लडने देना आदि बातें बहुत हानिकारक हैं। इसलिए इनसे गाभिन पशु को सदा बचाना चाहिए। ध्यान रहे कि जिस प्रकार एक गर्भवती स्त्री को ठोकर लग जाने, चोट लग जाने या अधिक भार उठाने से गर्भपात होने का डर रहता है, उसी प्रकार अधिक तेज दौडाने, लडाने या ठोकर खाकर पशु के गिर जाने से गाभिन पशु के भी गर्भपात होने की आशका होती है, अत सावधानी बरतनी चाहिए।

(५) साथ ही गाभिन पशु को एक स्थान पर बधा रखना या पडे रहने देना भी उचित नही है। उसे थोडी देर सुबह शाम धीरे धीरे घुमाना चाहिए अथवा मैदान मे चरने के लिए छोड देना चाहिए।

(६) गाभिन मादा पशु को ऐसे पशुओ के साथ कदापि नही बाधना चाहिए, जो लडाका, मारखोर या शरारती हो। उसे ऐसे पशुओ के साथ भी न बाधें, जिनका गर्भपात हो चुका हो। इस बात का विशेषरूप से ध्यान रखने की आवश्यकता है।

(७) प्रसव से कुछ दिन पहले मादा पशु का अयन बढ जाता है और उभर आता है, उसके थन भी फूल जाते हैं और प्राय उनमे दूध भी निकलने लगता है। ये सब लक्षण कोई असामान्य बातें नही, इसलिए इनकी चिन्ता न करें।

(८) प्रसवकाल निकट आने पर पशु की जननेन्द्रियाँ बडी, ढीली ढाली,

मुलायम तथा कुछ-कुछ फूली हुई-सी दिखाई देने लगती है। पूछ के दोनों ओर की मास पेशिया और जगह पोली होकर लटक आती हैं। ये भी प्रसवकाल के पूव लक्षण हैं।

(६) प्रसव के समय पशु को साफ सुथरी, एकान्त और आरामदेह जगह पर रखना चाहिए और उस स्थान पर काफी साफ-सुथरी बिछाई होनी चाहिए। प्रसव के समय पशु के साथ किसी प्रकार की छेड छाड नही करनी चाहिए और न ही बच्चो आदि का जमघट होने दे। सावधानी से एक दो अनुभवी व्यक्ति ही उसकी निगरानी करे। अनुभवहीन ग्वालो या गूजरो को उसके अग नही छूने देना चाहिए। इस प्रकार उसे शात स्थान मे प्रसव कराए।

(१०) ब्याने से कुछ दिन पूव से ही पशु को हल्का, सुपाच्य आहार देने लगना चाहिए जैसे हरियाली भूसी, दलिया तथा कोमल पत्तिया आदि। प्रसव के कुछ दिन बाद तक भी ऐसा ही आहार दिया जाना चाहिए। मोटा चारा दाना खिलाने से उनका पेट अधिक भर जाता है, आतें तन जाती हैं और उससे प्रसव में बाधा पड सकती है।

(११) अगर गाय, भस आदि गाभिन पशु को कब्ज रहता हो, चारा दाना ठीक से हजम न होता हो, जो उसके गोबर को देखने मे सहज ही जाना जा सकता है, तो उसे कभी कभी २० औंस अलसी का तेल पिला दें। किन्तु ध्यान रहे कि अधिक तेज दस्तावर चीज कभी नहीं देनी चाहिए।

(१२) जब पशु के ब्याने मे १ २ दिन की ही देरी हो तो उसे एक पौण्ड इप्सम साल्ट और एक चम्मच पिसी हुई सोठ तीन पिंट गुनगुने पानी मे मिलाकर पिला दें। यह खुराक पशु के ब्याने के बाद भी १ २ दिन दें। साथ ही ब्याने से एक सप्ताह पूव और ३ ४ दिन बाद तक पशु को पीने के लिए उबालकर ठण्डा किया हुआ गुनगुना पानी दें तो बहुत अच्छा है। मगर ठण्डी हवा और तेज धूप से बचाव करना आवश्यक है।

(१३) प्रसवकाल के निकट आने पर ओसरो का आकार बहुत बढ जाता है और प्राय फूलकर बहुत बडा हो जाता है। उसकी सूजन कभी कभी अयन के

सामने पेट के मध्य भाग तक बढ जाती है। जो कभी-कभी खतरे का लक्षण मानी जाती है, किन्तु यह सूजन प्रसव के पूर्व ही होती है, इसलिए डरने की कोई बात नही।

(१४) यदि ओसर प्रसव के समय अधिक चिडचिडी हो जाये, तो बिना किसी तरह की छेडछाड किए उसे एकान्त स्थान मे छोड देना चाहिए।

(१५) पशु के ब्याने चुकने के बाद हर बार दुहने से पहिले उसके अयन तथा थनों पर कपूर मिल तेल की हल्के-हल्के हाथ से मालिश करनी चाहिए, ताकि अयन का तनाव दूर हो जाये। कपूर की मालिश करने से अयन से दूध का सचार बढ़ जाता है।

(१६) ब्याने के समय गाय आदि पशुओ के शरीर पर बहुत जोर पडता है, इसलिए ब्याने के बाद उसे हल्की हल्की चीजें यथा गेहू या जौ का दलिया या बाजरे का दलिया थोडी-सी पिसी हुई देशी खाड, पिसी हुई सोंठ तथा थोडा सा पिसा हुआ नमक डालकर देना चाहिए। यह दलिया ब्याने के १२ घन्टे बाद दें। पीने के लिए गुनगुना पानी दें तथा बाद मे धोकर, भूसी या हरियाली व मुलायम पत्तिया आदि खिलाए। उस समय तिलहन, जई या बाजरा विशेष लाभप्रद है। क्योकि यह सुपाच्य तथा रोचक है। १० १२ दिन तक ऐसी खुराक देनी चाहिए।

(१७) लगभग १५ दिन बाद दाना तथा मोटा चारा थोडा-थोडा बढाते हुए लगभग एक महीने मे पशु को अपनी पूरी खुराक पर लाना चाहिए।

(१८) इस बीच गाय को पोषक तत्वों से युक्त पौष्टिक खुराक खिलाने, प्यार से थपथपाने, समय पर खाना, पानी आदि देने से पशु का दुग्ध उत्पादन बढता है।

(१९) पशु के ब्याने के तुरन्त बाद ही उसके बच्चे की ओर ध्यान देना चाहिए और गुनगुने पानी मे कपडा भिगोकर उसके आख, मुह, नाक आदि सारे अगों को पोछ देना चाहिए, ताकि वह ठीक से सास ले सके। आमतौर पर गाय भस आदि अपनी जीभ से ही बच्चे को चाटने लगती है और चाट-चाट कर साफ कर देती है, किन्तु यदि पशु बच्चे को न चाटे तो उसके ऊपर

थोडा-सा पिसा हुआ नमक छिड़क दें। इस प्रकार पशु उसे तुरन्त चाटने लग जायेगा।

(२०) बच्चे को साफ करने बाद साफ बिछाली बिछा कर बिठा देना चाहिए। अगर बछड़ा स्वय ही अपनी मां के अयन से लगकर दूध पीने लगे, तो फिर उसे और कुछ खिलाने-पिलाने की आवश्यकता नही। किन्तु यदि वह थन से दूध न पिए, तो पशु को बिना बच्चा लगाए ही दुहने की चेष्टा करें और पहली दोहन के इस दूध या खीस मे से थोडा सा बच्चे को अवश्य पिलाए। फिर धीरे धीरे उसे थन से लगाने की कोशिश करें।

(२१) जब पशु ब्याने के बाद बच्चे को चाटने लगे, तो उसकी जेर पर निगरानी रखने की जरूरत है। जेर आमतौर पर ४८ घटे मे बाहर आ जाती है किन्तु अगर जेर रुक जाये और उससे बदबूदार स्राव निकलता रहे, तो ऐसी हालत मे फौरन किसी योग्य पशु चिकित्सक या पुराने अनुभवी बुजुर्ग की सहायता लें। आमतौर पर गूजर, ग्वाले व पशु-पालक स्वय गाय की रुकी हुई जेर निकाल सकते हैं, किन्तु उनका ढग भद्दा गन्दा और दोषपूर्ण होता है। पशु चिकित्सक सफाई के साथ और सही ढग से जेर को निकाल देगा। यथा-सम्भव यह काम उसी से कराना चाहिए, जिसे पूरी पूरी जानकारी और अनुभव हो। अनाडी हाथो से जेर निकालना भारी खतरा उठाना है।

इस प्रकार मादा पशुओं के गर्भकाल और प्रसव के समय उनकी पूरी-पूरी शुश्रूषा और देखभाल करनी चाहिए।

पशु चिकित्सा सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान

पशुओं के विविध रोगो की चिकित्सा सही ढग से करने के लिए उनकी औषधियां, औषधि निर्माण प्रयोग विधि आदि के विषय म कुछ मूलभूत बातो का ज्ञान होना अति आवश्यक है। इन बातों का ज्ञान न होने पर कभी-कभी औषधियां लाभदायक सिद्ध होने की बजाय हानिकारक सिद्ध हो जाती हैं। हम आपकी जानकारी हेतु पशुओ की औषधियों के बारे म आवश्यक बातें संक्षेप मे लिख रहे हैं।

दवाइयों की किस्मे

मानव चिकित्सा विज्ञान की भांति ही आज के युग म पशु चिकित्सा विनान भी बहुत उनति कर चुका है। पशुओ के विभिन रोगो की रोकथाम व चिकित्सा के लिए भी हजारो औषधिया मिक्स्चर, तेल, पलस्तर, इजैक्शन आदि का आविष्कार तथा निर्माण हो चुका है। नीचे पशु चिकित्सा के लिए प्रयुक्त औषधियो की प्रमुख किस्मो तथा उनके प्रयोग करने की विधिया अकित की जा रही हैं।

औषधियों की सेवन विधियो को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें मुख्य रूप से ५ वर्गों मे विभक्त किया जा रहा है —

(१) खिलाई जाने वाली औषधिया—यथा चूण गोलिया रोटी अथवा गुड आदि मे मिलाकर पशुओ को खिलाई जाती हैं।

(२) पिलाई जाने वाली औषधिया—यथा काढे, तेल आदि जो ढरका, नली आदि द्वारा तरल औषधि के रूप मे पिलाई जाती है। दवाइयो के मिक्स्चर भी इसी म आते हैं।

(३) बाह्य प्रयोग की औषधिया—मलहम, पलस्तर, घावो आदि पर लगाई या चुपडे जाने वाले तेल, ऊपर से बुरके या छिडके जाने वाले औषधीय चूण, धूनी अथवा भाप द्वारा बाह्य उपचार के लिए प्रयुक्त औषधियां आदि इस वग मे आती हैं।

(४) डूश अथवा एनिमा द्वारा प्रयुक्त औषधिया—पशु के योनि माग से पिचकारी द्वारा अन्दर दवा पहुचाना डूश करना कहलाता है और गुदा माग से दवा पहुचाना एनिमा या हकना देना कहलाता है। इस प्रकार प्रयोग की जाने वाली औषधिया इस वग मे आती हैं।

(५) इजक्शन अर्थात सुई द्वारा प्रयोग की जाने वाली औषधिया—ये औषधिया अनेक उपयोगी औषधियों का सार खीचकर तैयार की जाती हैं और इजक्शन द्वारा शरीर की आंतरिक नसो या रक्त मे सीधी पहुचाई जाती हैं, ताकि वे शीघ्रातिशीघ्र अपना प्रभाव दिखा सकें। यही कारण है कि मानव रोगो मे तथा पशु रोगों में भी इजैक्शन-चिकित्सा प्रणाली अधिक प्रचलित हो

गई हैं, यद्यपि इस प्रणाली से एक रोग तो तत्काल दब जाता है किन्तु बाद म कभी कभी अ य विकार उत्पन्न हो जाते हैं। फिर भी रोग की तत्क्षण रोकथ और तात्कालिक प्रभावकारी होने के कारण अधिकतर लोग इसी को अच्छ समझते हैं।

१ खिलाई जाने वाली औषधिया

जैसा पहले बताया जा चुका है, औषधियो के चूण, गोलियां आदि इ वग मे आती हैं। इन दवाओ को खरल, ओखली अथवा सिलबट्टे पर कूट-पी कर वारीक चूर्ण बना लिया जाता है और फिर किसी झीने कपडे अथवा बारी छलनी से छानकर चूण तैयार कर लिया जाता है। किन्तु इस बात का विशे ध्यान रखें कि यदि उनमे कोई विषली दवा हो तो खरल, ओखली अथ सिलबट्टे, छलनी आदि को बाद मे अच्छी तरह साफ कर लें। ऐसा न हो f विषैली दवा का तनिक भी अश या प्रभाव उनमे रह जाए और बाद मे उन मे आप अपने घर की चीजें कूटें, पीसें तो वे विषाक्त हो जायें। साथ ही य भी जान लें कि ऐसी विषाक्त औषधिया मुह मे जीभ, तालु आदि में लग जा से मुह मे घाव उत्पन्न कर देती हैं। ऐसी तेज दवाए आटे मे दबाकर रोटं सेककर अथवा गुड के गोले के अन्दर लपेटकर पशुओ को खिलाई जाती हैं कई साधारण औषधियो के चूण यो ही हाथ से पशु चुकी जीभ पर रखकर चट दिए जाते हैं, बशर्ते कि उनका स्वाद कडवा न हो। कई दवाओं के चूण पशु व चारे दाने पर छिडक दिए जाते हैं। पशु चारे-दाने के साथ उन्हें खा जाता है इस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकार की खिलाई जाने वाली औषधियां भिन्न भिन्न ढगों से पशुओं को खिलाई जाती हैं जिनके बारे मे पहले औषधियो के साथ ही सेवन विधि भी अकित है।

२ पिलाई जाने वाली औषधिया

द्रव, घोल, मिक्स्चर क्पडा, तेल आदि के रूप म जो तरल औषधियां विविध रोगो म पशु को सेवन कराई जाती * इस वग मे त आती हैं। इन तरल औषधियो म तेल, शवत, f त होत हैं और उन्हें वैसी ही बांस की नली (ढं

है, किन्तु कुछ दवाइया पानी अथवा अन्य किसी द्रव पदार्थ मे घोलकर दी जाती हैं। कुछ औषधियां ऐसी भी होती हैं, जो आसानी से पानी मे नही घुलती। उन्हें गरम पानी मे घोलकर तैयार किया जाता है। जो गरम पानी मे भी नही घुलतीं, उन्हें पानी के साथ उबालकर और चौथाई पानी रह जाने पर छानकर काढे के रूप मे उनका प्रयोग किया जाता है। बहुत-सी दवाए एक निर्धारित समय तक पानी मे भिगोये रखकर अथवा सडाकर भी द्रव रूप मे तैयार की जाती हैं। ये दवाए, यदि पशु स्वत अपनी रुचि से पी ले तो पहले किसी चौडे मुह के बर्तन मे रखकर उसे अपनी इच्छा से ही पीने देना चाहिए। किन्तु जब पशु अपनी इच्छा से न पिए, तो ढरके द्वारा पिलाना चाहिए। टीन अथवा शीशे की मजबूत शीशी अथवा नली द्वारा भी पिलाई जा सकती है।

ढरके द्वारा पिलाने की सही विधि

ढरके अथवा बास की नली द्वारा पशु को दवा पिलाने का ठीक-ठीक तरीका यह है कि आप पशु के बाइ ओर खडे होकर बायें हाथ से उसका मुह पकडकर और खोलकर सावधानी से ढरका उसके मुह मे जबडो के बीच रख दें और ढरके मे भरी हुई दवा धीरे धीरे उडेलकर उसे पिलायें। दवा पिलाते समय सावधानी से काम लें, ताकि दवा नथुने मे न जाने पाये। यदि दवा पिलाते समय पशु को खांसी उठती प्रतीत हो, तो तत्काल उसका मुह छोड दें और ढरका बाहर निकाल लें। अन्यथा दवा के सास की नली में चले जाने की आशका है और उससे पशु का दम घुट सकता है। अगर पशु को खासी अथवा गरमी अधिक हो, तो उसे चटनी के रूप मे चटाई जाने वाली या खिलाई जाने वाली दवाए ही देना अच्छा है।

(क) घावो आदि पर बुरकी या छिडकी जाने वाली चूर्ण रूप औषधिया जो खिलाये जाने वाली चूर्ण औषधियो की भांति ही ओखली, खरल या सिल-बट्टे मे कूट-पीस व छानकर तैयार की जाती हैं, इन्ही मे प्राय विषैले पदार्थ होते हैं। इसलिए इन्हें तैयार करते समय विशेष सावधानी बरतें। इनके प्रयोग करने की विधि यह है कि जिस घाव पर दवा बुरकनी हो, उसे पहले रुई के फाहे से साफ करके हाथ की चुटकी अथवा रुई से उस पर दवा छिडक दें। यदि

तेल चुपड़ कर बुरकना बनाया गया हो, तो तेल भी चुपड़ दें। ऊपर से रुई रखकर पट्टी आदि बांध दें, ताकि घाव पर धूल, मिट्टी आदि न लगे।

(ख) द्रव अथवा तेल के रूप मे चुपड़ी जाने वाली बाह्य प्रयोग की औषधिया पानी अथवा तेल में घोलकर तैयार की जाती हैं और दवा के अपने गुणों के अनुसार भिन्न भिन्न तरीकों से प्रयोग की जाती हैं। क्योंकि उनमें बहुत सी दवाएं शीघ्र ही उड़ने वाली (Volatile) होती हैं, कुछ शीघ्र ही आग पकड़ने वाली (Inflammable) होती हैं। यदि ऐसी दवाओं को गरम करने की आवश्यकता हो, तो बहुत सतर्कतापूर्वक गरम करनी चाहिए। उन्हें आग से दूर रखें। बहुत हल्की आंच पर दूर रखते हुए गरम करें, ऐसी दवाइयां प्राय पतली लकड़ी की लम्बी तीली के एक सिरे पर रुई लपेट कर फुरेरी बना ली जाती है। उस फुरेरी द्वारा घाव आदि पर लगाई जाती हैं। यदि गुदा, योनि अथवा गले, नाक, कान आदि के भीतरी भाग मे दवा लगानी हो तो फुरेरी द्वारा अथवा स्प्रे (Spray) द्वारा लगाई जाती है। स्प्रे एक प्रकार का फुहारा होता है, जिससे दवा की बारीक फुहार-सी निकलती है। इस यन्त्र का प्रयोग आमतौर पर पशु चिकित्सालयों मे ही होता है।

(ग) बाह्य प्रयोग की बहुत सी दवायें मलहम के रूप मे तयार की जाती हैं, जो औषधियों के चूर्ण को चर्बी, तेल, मोम, वैसलीन, मक्खन आदि में फेंटकर तैयार की जाती हैं। ये पदार्थ मलहम का आधार (Base) कहलाते हैं। मलहम लगाने की विधि यह है कि जिस घाव आदि पर मलहम लगाना हो, उसे पहले रुई तथा कीटाणुनाशक औषधि (Antiseptic) से साफ कर लें। फिर एक साफ कपड़े का टुकड़ा काटकर उस पर उक्त मलहम का लेप करें और उसे पशु के घाव पर सावधानी से चिपका दें तथा ऊपर से रुई रखकर बांध दें। कुछ मलहम ऐसे भी होते हैं, जो लगाकर खूब मले जाते हैं, तब उनका प्रभाव अन्दर तक पहुंचता है। उनका प्रयोग करते समय यह ध्यान रखें कि बालों के रुख की ओर को मालिश करें। विपरीत दिशा मे मालिश करने से बालतोड़ होने की सम्भावना रहती है।

दवाइयां बनाने वाले कारखानों से आजकल विविध मलहम कपड़े की

पट्टियों पर चिपके पलस्तर के रूप मे आते हैं। उन्हें काटकर ज्यो का त्यों अथवा हल्की आच दिखाकर घाव पर चिपका दिया जाता है। इसके अतिरिक्त बाह्य उपचार के अन्तगत अनेक ऐसी औषधिया भी होती है, जो न तो लगाई जाती हैं और न छिडकी जाती हैं, बल्कि उनकी धूनी (धुआं) अथवा भाप दी जाती है, ताकि उनके सेंक द्वारा लाभ पहुचे अथवा उनका धुआ राग के कीटाणुओ को नष्ट कर दे। इसकी विधिया इस प्रकार हैं—

यदि धूनी देनी हो तो किसी मिट्टी की हाडी मे आग रखें और उसमे दवा डालकर हडिया का मुह किसी ऐसे ढक्कन से ढक दें, जिसमे एक छोटा-सा छेद हो। उस छेद मे से हाडी के अन्दर का धुआ निकले। अब सावधानी से उस छेद के मुह पर रबड अथवा हुक्के आदि की नली रखकर उस नली द्वारा धुआ सीधा पशु के उसी अग पर लगायें, जहा धुआ देना हो। शेष भाग का बचाव रखें। यदि भाप देनी हो, तो इस प्रकार हाडी मे पानी के साथ दवा उबालें और जब खोलने लगे, तो उसी प्रकार छेद पर नली लगाकर धुए की भाति ही भाप भी सीधी अभीष्ट अग पर लगाए। किन्तु ध्यान रहे भाप या धूनी बन्द स्थान पर देनी चाहिए, जहा हवा सीधी न आती हो। अगर भाप या धूनी सांस द्वारा आन्तरिक भाग म पहुचानी अभीष्ट हो, तो पशु की नाक धुए अथवा भाप के पास ले जाए, ताकि वह सास के साथ अन्दर जा सके। किन्तु उस दशा मे पशु की आखों पर कस कर पट्टी बांध दें क्योकि किसी किसी दवा का धुआं या भाप आंखों के लिए हानिकारक होता है। पशु की भाप अथवा धूनी द्वारा चिकित्सा करने वाले व्यक्ति को अपनी आख, नाक आदि का भी पूरा बचाव रखना चाहिए।

डूश अथवा एनिमा द्वारा प्रयुक्त दवाए

डूश अथवा एनिमा पेट के अन्दरूनी भाग, आतो आदि की सफाई के लिए दिया जाता है। जैसा पहले बताया जा चुका है, डूश क्रिया पशु की मूत्र-योनि में उसके अतिरिक्त भाग मूत्राशय, मूत्रनली आदि की सफाई के लिए की जाती है और एनिमा या हुक्ना गुदामाग द्वारा पेट, आंतो तथा मलाशय आदि की सफाई के लिए दिया जाता है। इन क्रियाओ के लिए पहले निम्नलिखित उपादान तैयार कर लें—

(१) लगभग ८ १० लिटर पानी म नीम की हरी ेपत्तें डालकर खूब उबल लें और फिर उस पानी का छानकर ठण्डा करके रख लें। अथवा सादा पानी उबाल कर ठंडा होने पर उसमे लाल दवा (Potassium Permangnate) डालकर अच्छी तरह घोनकर रख लें।

(२) रबड की नली लें। यदि रबड की नली न हो, तो पतले बास की नली दोनो सिरो पर चिकनी छीलकर नली तैयार कर लें अथवा पपीते की पोली टहनी या प्याज की नली भी काम म ली जा सकती है। यह नली लग भग आधा इच मोटी और २ ३ हाथ लम्बी हो।

(३) लालटेन मे तेल भरने वाली एक कुप्पी (टीप), जिसका ऊपर का मुह चोडा हाता है और नीचे पतली सी नली होती है, ले ले। अथवा एक चोडे मुह वाली चिलम अथवा मुसलमानी बदना भी प्रयोग किया जा सकता है। इसमे नीचे की ओर उक्त रबड की नली या बास, पपीता या प्याज की नली इस प्रकार लगा दें कि उसके आस पास खुला स्थान न रहे और नली उसमे से जल्दी निकल भी न सके।

(४) एक छोटी मशक या टोपीदार बाल्टी अथवा गगासागर लें, जो उस टीप मे धार बांधकर दवा मिला पानी डालने के काम आ सके।

उक्त सब वस्तुए तैयार करने के पश्चात पशु की पिछली दोनो टाँगें इस प्रकार बांध दें कि वह अधिक हिल-डुल न सके। फिर नली को नीम के तेल या कपूर मिले तिल के तैल से चुपडकर नीचे वाला सिरा पशु की गुदा अथवा योनि के अन्दर लगभग एक बालिश्त धीरे धीरे घुसेडें। नली का दूसरा सिरा टीप या चिलम के साथ जुडा है, उस टीप मे गगासागर या बाल्टी द्वारा धार बाधकर दवायुक्त पानी डालें। पानी डालने वाला बर्तन पशु से काफी ऊचा रखें, ताकि पानी आसानी से अन्दर जा सके। उस समय पशु का इधर उधर न हटने दें। जब इस प्रकार से काफी पानी अन्दर चला जायेगा, तो पशु उसे निकालने के लिए जोर लगायेगा, किन्तु उस समय कसकर दबायें रखें। एक-दो मिनट तक पानी को अन्दर रोके रहने के पश्चात् छोड दें और नली बाहर लें। पानी निकलना शुरू हो जायेगा और उसके साथ ही अन्दर का जमा

हुआ मल, कीडे आदि सब बाहर आ जायेंगे। इस क्रिया को २-३ दिन नित्य करने से शरीर के आतरिक अवयवो की पूरी तरह सफाई हो जाती है।

५ – इजेक्शन या टीके लगाना

जिस प्रकार चेचक, प्लेग, हैजा आदि छूत की महामारियों के लिए इजेक्शन आविष्कृत हो चुके हैं, वैसे ही आज के इस वैज्ञानिक युग मे पशुओ के भी विविध रोगो और विशेषकर छूत के रोगो के लिए एक से एक उत्तम इजक्शन तथा टीके तैयार हो चुके हैं। किन्तु इजेक्शन हर अनाडी व्यक्ति न तो ठीक से लगा ही सकता है और न ही उसे लगाने की चेष्टा करनी चाहिए। इजेक्शन हमेशा कुशल डाक्टर से ही लगवाने चाहिए। क्योंकि गलत ढग से या गलत स्थान पर इजेक्शन लगा देने से पशु की तत्काल मृत्यु हो सकती है। पशु-चिकित्सालय मे ले जाकर अथवा पशुओ के डाक्टर को घर पर बुलाकर ही इजक्शन लगवाना चाहिए। डाक्टर न हो, तो कम्पाउण्डर भी इजक्शन लगा सकता है। किन्तु स्वय अथवा किसी अनाडी व्यक्ति द्वारा इजेक्शन हरगिज नही लगवाना चाहिए।

भिन्न भिन्न प्रकार की औषधियो का यथावसर भिन्न ढगों से प्रयोग किया जाता है। इस बात का ज्ञान प्रत्येक पशु-पालक को होना चाहिए।

औषधियों की मात्रा या खुराक

विविध औषधियो की मात्रा के विषय मे कुछ मूलभूत बाता को समझ लेना नितात आवश्यक है। क्योकि एक दवा यदि उचित मात्रा से अधिक दे दी जाये, तो वह लाभदायक होने की अपेक्षा हानिकारक सिद्ध होगी और यदि उचित मात्रा से कम दी जायेगी, तो अपेक्षित समय मे पूरा पूरा लाभ प्रदान नही कर सकेगी। मनुष्य के लिए तो औषधियों की मात्रा प्राय आयु-भेद के आधार पर ही निर्धारित की जाती है। कुछ विशेष रोगो अथवा दशाओ म ही शरीर का बलाबल अथवा अन्य बातों का विचार किया जाता है। किन्तु पशुओं के लिए औषधि की मात्रा निश्चित करने मे आयु भेद के अतिरिक्त जाति-भेद, आकार, वजन-भेद आदि का भी ध्यान रखना पडता है, क्योंकि एक ही आयु के हाथी और बकरी के शरीर भार व आकार में बहुत अन्तर होता है। इसी

लिए दोनों के लिए समान औषधि मात्रा नही निश्चित की जा सकती। बकरी की अपेक्षा हाथी के लिए आठ गुनी मात्रा दरकार होगी। पहले प्रकरणो मे जहा पशुओ के विविध रागो की चिकित्सा वर्णित की गई है, वहा औषधियो की मात्रा भी दी गई है। किन्तु वह मात्रा पूरे कद के एक प्रौढ पशु के लिए समझनी चाहिए। कम आयु के पशुओ को उनकी आयु के अनुसार मात्रा कम कर देनी चाहिए। तदनुसार सांड अथवा हाथी जसे विशालकाय पशुओं के लिए जिनका शरीर भार व आकार सामान्य पशुओ से बढकर होता है, औषधि की मात्रा बढाकर देनी चाहिए।

विविध पशु रोग व उनकी चिकित्सा

मनुष्य जाति की भांति ही पशुओ म भी अगणित रोग पाये जाते हैं जिन मे से कुछ रोग सूक्ष्म कीटाणुओ द्वारा उत्पन्न होते हैं और सबसे अधिक भयकर होते हैं। दूसरे कुछ रोग जीवाणुओं द्वारा अथवा फफूद द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये रोग भी यद्यपि भयकर होते हैं, तथापि समुचित इलाज द्वारा शीघ्र ही नियन्त्रण मे आ जाते हैं, किन्तु यदि उपयुक्त समय पर समुचित चिकित्सा व्यवस्था न हो, तो ये भी पशु जीवन के लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं। अन्य रोगों मे कुछेक रोग शरीर मे किसी तत्त्व विशेष अथवा पोषक तत्त्वों के अभाव मे स्थानीय जलवायु के दूषण आदि से उत्पन्न हो जाते हैं, तो कुछ रोग परजीवी रोग होते हैं जो दूसरे कीडो, कृमियो या मच्छर मक्खियो द्वारा उत्पन्न कर दिए जाते हैं। इन सबके अधिक विस्तार मे न जाकर हम पशुओं के इन समस्त रोगों को मोटे तौर पर दो मुख्य श्रेणिया मे विभक्त कर सकते हैं —

(१) छूत के राग (Contagious or Infectious diseases),

(२) सामान्य रोग या बिना छूत के रोग (Non-contagious diseases)।

जो रोग किसी भी पशु के शरीर मे उत्पन्न होकर उसके सम्पर्क मे आने वाले दूसरे स्वस्थ पशु को भी लग जाते हैं, उन्हें छूत के रोग कहा जाता है। क्योंकि ये रोग सूक्ष्म कीटाणुओं अथवा रोग के कीटाणुओं से उत्पन्न होते हैं और ये सूक्ष्म कीटाणु रोगी पशु की टट्टी, पेशाब, थूक आदि द्वारा हवा मे फैलकर पशुओ के शरीर मे सांस द्वारा प्रविष्ट होकर उन्हें भी तत्काल उस रोग

का शिकार बना देते हैं। जिस प्रकार मनुष्यों के रोगों में हैजा, चेचक, प्ले आदि महामारियाँ छूत के भयंकर रोग माने जाते हैं और जब किसी शहर फैलते हैं तो हजारों की संख्या मे मनुष्य प्राणों से हाथ धो बैठते हैं, उसी प्रका पशुओं के ये छूत के रोग भी जब फैलते हैं और उनकी तुरन्त रोकथाम न जाये, तो कभी कभी सारे गाँव के पशुओं को समाप्त कर देते हैं। इन रोगों बीमार पशु की चिकित्सा के साथ साथ सबसे पहले उसके कीटाणुओं को फैलने देने तथा अन्य पशुओं को उसकी छूत लगने से बचाने का भरसक प्रया करना चाहिए। पशुओं के छूत रोगों को फैलने से रोकथाम करने के लिए आ कुछ विशेष नियम तथा हिदायतें लिखी गई हैं, जिनका पालन करने से आ अपने तथा गाँव के अन्य स्वस्थ पशुओं की रक्षा कर सकेंगे।

दूसरे वर्ग के सामान्य रोग, जो बिना छूत के रोग कहलाते हैं, इतने खत नाक नहीं होते। फिर भी एक बात का तो हमेशा ध्यान रखिए कि चाहे बीमार पशु को छूत का रोग हो, अथवा बिना छूत का, बीमार पशु का बचा हुआ चारा दाना अन्य स्वस्थ पशुओं को कभी नहीं खिलाना चाहिए। प्रथम तो बीमार पशु को चारा दाना दीजिए ही उतना कि बचे नहीं। यदि बच जाये, तो उसे फेंक या जला डालना चाहिए। इसी प्रकार बीमार पशु का जूठा पानी आदि भी अन्य पशुओं को नहीं पिलाना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार प्राय एक पशु के रोग के कीटाणु दूसरे पशु के पेट में चले जाते हैं।

छूत वाले रोग

यों तो विश्व मे असंख्य प्रकार के छूत रोग पशुओं में फैलते रहते हैं, जो प्रत्येक देश की जलवायु के अनुसार भिन्नता लिए हुए होते हैं, किन्तु उनमें से कुछ रोग ऐसे हैं, जो सब देशों के पशुओं में पाए जाते हैं। हमारे देश भारत के पशुओं में जो छूत रोग आमतौर पर फैलते हैं, उनका वर्णन यहाँ हम कर रहे हैं। इनमें प्रमुख रोग ये हैं—

(१) माता रोग—जिसे अंग्रेजी में रिंडरपेस्ट (Rinderpest) कहते हैं।

(२) विष ज्वर या जहरी बुखार—जिसे अंग्रेजी में एन्थरेक्स (Anthrax) कहते हैं।

(३) लगडा ज्वर—जिसे अग्रेजी मे ब्लैक क्वाटर (Black Quarter) कहते हैं।

(४) गलघोटू रोग—जिसे अग्रेजी मे हेमरजिक सेप्टीसिमिया (Haemrrhagic Septicimia or Malignant Soar throat) कहते हैं।

(५) पशुओ का क्षय रोग—(तपेदिक) जिसे अग्रेजी में टयूबरकुलोसिस (Tube culosis) कहते हैं।

(६) फेफड़े का ज्वर -(निमोनिया) जिसे अग्रेजी मे प्लूरोनिमोनिया (Contagious Pleuro pneumonia) कहते हैं।

(७) खुर-पका मुह पका रोग—(foot mouth disease)

(८) सूखा रोग—(John's disease)

छूत के उक्त आठ पशु रोग भयकर माने गए हैं, क्योंकि ये रोग इतनी तेजी से बढते हैं कि एक-दो दिन का चिकित्सा विलम्ब भी इनके जीवन के लिए घातक सिद्ध होता है। दूसरे ये अन्य पशुओ मे भी तेजी से फैलते हैं।

इनके अलावा छूत के कुछ अन्य रोग भी हैं, जो अपेक्षाकृत कम भयकर हैं और समुचित चिकित्सा से शीघ्र ही नियन्त्रण में आ जाते हैं। वे इस प्रकार हैं—

(९) छूत के कारण गर्भपात हो जाना—(Contagious Abortion)
(१०) छूत के कारण खूनी पेशाब आना—(Red Water)
(११) दूध का ज्वर—(Milk Fever)
(१२) चेचक—(Cow pox)
(१३) गज चर्म या मैंज—(Mange)
(१४) खुजली—(Khujli)
(१५) दाद या रिंगवम—(Ringworm)
(१६) कीड़ों-मकोड़ों के दुम्बल, मूजे या मनिया फूटना—(Warble flies)
(१७) जू पैदा हो जाना—(Lice)

छूत के इन रोगों मे प्रथम आठ भयकर रोगो को तो केवल ऐलापथिक द्वारा ही ठीक किया जा सकता है। यदि कभी आपके पशु को उनमें

से कोई रोग हो जाये, तो शीघ्र ही निकट के पशु चिकित्सालय मे ले जाकर दिखाना चाहिए। हा, प्रारम्भिक अवस्था मे ही यदि समुचित ढग से देशी इलाज भी किया जाये, तो पशु ठीक हो सकता है। किन्तु अधिक विश्वसनीय इलाज इजैक्शन ही हैं। शेष नौ प्रकार क अन्य छूत रोग इतने भयकर नही। हा, अन्य पशुओ का इनसे भी बचाव करना आवश्यक है। ये रोग देशी इलाज द्वारा भी ठीक हो जाते हैं और ऐलोपैथिक दवाइयो द्वारा भी। हर हालत मे आप पशु को निकट के पशु-चिकित्सालय मे ले जाए। वहां सरकारी डाक्टर तथा इजैक्शन तैयार रहते हैं। पशु को समय पर डाक्टरी सहायता मिलने से उसे बचाया जा सकता है।

अब जैसा हमने पहले लिखा है, छूत की बीमारियों से ग्रसित पशु की चिकित्सा पर जितना ध्यान दिया जाना चाहिए, उतना ही अन्य स्वस्थ पशुओ को छूत लगने से बचाने पर ध्यान देना आवश्यक है। सबसे पहले हम छूत की रोकथाम के लिए आवश्यक नियम तथा हिदायतें लिख रहे हैं, जिन पर आशा है, आप पूरा-पूरा ध्यान देंगे व यथासमय उनका पालन करेंगे।

छूत रोगो की रोकथाम के उपाय

छूत के रोग सूक्ष्म कीटाणुओ द्वारा फैलते हैं। ये कीटाणु इतने सूक्ष्म होते हैं कि एक सुई की नोक पर हजारो की सख्या मे बैठ सकते हैं। मनुष्य की आखें दूरबीन की सहायता के बिना इन्हे नही देख सकती। साथ ही इनकी एक विशेषता यह भी है कि इनकी सख्या बहुत तेजी से बढ़ती है। एक ही दिन मे १ से १००० अथवा इससे भी अधिक हो जाते हैं। अब आप स्वत समझ सकते हैं कि इतने सूक्ष्म कीटाणु तो वायु द्वारा ही कितनी तेजी से फैल सकते हैं। फिर स्पर्श, गोबर, मूत्र, जूठा चारा, जूठा पानी, थूक, लार तथा टहल करने वाले व्यक्ति के माध्यम से इन्हें अन्य पशुओ तक पहुचने में विशेष सहायता मिलती है। यही कारण है कि एक बार किसी पशु को छूत का कोई रोग हो भर जाये कि बिना विशेष स्तर पर कारवाई किए यह उस क्षेत्र में फैलता ही जाता है और हजारो की सख्या मे पशु उसके शिकार हो जाते हैं। अस्तु जैसे ही किसी पशु मे छूत का कोई भयकर रोग उत्पन्न हो, अपने गांव,

आस-पास के गावों तथा अपने क्षेत्र के पशु-चिकित्सालय के डाक्टर को तुरन्त इसकी सूचना दे देनी चाहिए। साथ ही उसकी रोकथाम के लिए सतकतापूवक चेष्टा करनी चाहिए।

ग्रामीण भाइयो के लिए एक हितकारी राय

गाव के लोगो का सबसे बहुमूल्य धन पशु धन ही है। क्योंकि पशुओ पर ही उनकी खेती बाडी निभर करती है और पशुओ से ही उन्हे दूध, दही, घी आदि पौष्टिक पदाथ प्राप्त होते हैं। साथ ही कृषि उत्पादन और दुग्ध उत्पादन की बिक्री से ही उनके परिवार की अन्य आवश्यकताए पूरी होती हैं। पशु धन की रक्षा, उसका विकास ग्रामीण जनता की समृद्धि का एक प्रमुख सोपान है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए हम अपने देश के ग्रामीण भाइयो को एक उत्तम सलाह देना चाहते हैं, जो उनके लिए परम हितकारी सिद्ध हो सकती है।

आज भारत स्वतन्त्र राष्ट्र है। देश के कोने-कोने मे आपका अपना ही राज्य है। प्रत्येक गाव मे ग्राम-पचायतें तथा ग्राम विकास खड बने हुए हैं, जिनके द्वारा आप लोग अपना, अपने गाव का और सारे राष्ट्र का नव निर्माण कर सकते हैं। आवश्यक्ता केवल इस बात की है कि प्रत्येक बात के लिए आप सरकार के मुखापेक्षी न रहें, वरन मिल जुल कर अपनी समस्याओ का समाधान करें, अपने विकास के लिए साधन जुटाएं और फिर सरकार से जा सहायता अपेक्षित हो, उसे प्राप्त करके उन कार्यों को पूरा करें। यहा हम पशु धन की रक्षा विषयक एक श्रेष्ठ तथा उपयोगी योजना आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि आप सब मिलकर उस पर विचार करेंगे।

योजना इस प्रकार है कि प्रत्येक गांव के निवासी मिल-जुल कर अपने-अपने गाव मे रोगी पशुओं की देख भाल, रख रखाव आदि के लिए गाव से बाहर एक ऐसी आदश व सामूहिक पशु शाला का निर्माण करें, जहां गाव भर के रोगी पशुओ को रोग प्रसार के दिनों मे रखा जा सके, ताकि अन्य स्वस्थ पशु उन रोगों की लपेट से बचे रहें और रोगी पशुओं की भी समुचित रूप से देख भाल, चिकित्सा आदि हो सके।

पशुओ की महासक्रामक महामारिया व इलाज

माता रोग

रोग के लक्षण तथा अवधि—किसी स्वस्थ पशु को इस रोग की छूत लगने के बाद उसमे छह दिन के भीतर रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। सबसे पहले पशु को तेज ज्वर चढता है, जिसमे १०४ डि फा से १०६ डि फा तक तापमान हो जाता है, जो ४८ घटे म अपनी चरम सीमा पर पहुच जाता है। उस समय पशु अत्यधिक सुस्त होकर थर थर कापता है, रोगटे खडे हो जाते हैं, आखो की पुतलिया सिकुड जाती हैं, आँखो मे पानी छलछलाया होता है, नाक के नथुनो पर खुश्की छा जाती है, पीठ अकड कर कमानी की भाति मुड जाती है, चारा दाना खाना तथा जुगाली करना बन्द कर देता है, पेट मे कब्ज हो जाती है। एक दो दिन के पश्चात पशु पतला गोबर फकने लगता है, फिर उसमे आव आने लगती है, कभी कभी खून के कतरे भी आते हैं। यह गोबर बहुत बदबूदार होता है। प्यास अधिक लगती है, पशु दात पीसता है, पटठे ऐंठने लगते हैं, कान तथा गदन लटक जाती है, नाडी की गति ७० से १०० प्रति मिनट तक होती है, आखो से पानी तथा कीचड बहने लगता है और पशु की दशा बडी शोचनीय हो जाती है।

देशी इलाज

(१) सुप्रसिद्ध पशु चिकित्सक डा० थैंकर साहब का यह कई बार का अनुभूत प्रयोग है। योग इस प्रकार है—

कपूर ६ माशा, धोरा ६ माशा, धतूरे के बीजो का बारीक चूण ३ माशा, चिरायता ३ माशा, देशी शराब १० तोला यानी आधा पाव। पहले कपूर को शराब मे घोल लें, फिर अन्य दवाओं को उसमे घोल लें और पशु को पिला दें। माता रोग के कीटाणुओ को नष्ट करने मे प्रभावकारी है।

(२) हिना की पत्ती २ तोला, नीम के फूल ३ तोला, चिरायता १ तोला—सबको पानी मे पकाकर छान लें और नमक मिलाकर पशु को पिलाए।

(३) धतूरे के बीज ३ माशा, दारू हल्दी १ तोला, चोब चीनी १ तोला, सोंठ ६ माशा, फेन चितहर २ माशा, उन्नाब २ तोला—सबको आधा

पानी मे पकाए। जब आधा रह जाये, तो ठण्डा करके उसमे २ तोला कलमी शोरा पीसकर मिला दें और पशु को पिलाए।

(४) बबूल की पत्ती ८ तोला, कत्था ३ तोला, चूना ६ माशा—सबको पीसकर १२ तोला देसी शराब और आधा सेर पानी मे मिलाकर पशु को पिलाए।

(५) चूने का पानी आधा सेर, अफीम ३ माशा, बबूल की गोद आधा पाव, चूने के पानी मे गोद और अफीम को अच्छी तरह घोल लें। जब दोनो पूरी तरह से घुल जाए तो उसकी बराबर-बराबर की तीन खुराकें बना लें और ४-४ घटे के अन्तर से पशु को तीनो खुराके एक ही दिन मे पिला दें।

(६) चूकि इस राग मे पशु के शरीर मे इस रोग का विष अथवा कीटाणु फैल जाते हैं, उसे निकालने के लिए पशु को जुलाब देकर २ ४ दस्त करा देना लाभदायक है, किन्तु यह इलाज रोग की प्रारम्भिक अवस्था मे ही प्रभावकारी सिद्ध हो सकता है।

रोग की रोकथाम के लिए उपाय

(१) छूत के रोगों की रोकथाम के लिए पूर्वोक्त सभी नियमों व हिदायतो का पूरी तरह पालन करें।

(२) माता निरोधक टीके लगवा दें। सर्वोत्तम है।

(३) अपने स्वस्थ पशुओ को बीमार पशु अथवा अन्य स्थानो के पशुओ से अलग रखें। जब आस पास कहीं भी किसी पशु को यह रोग हो गया हो, तो अपने पशुओं को प्रतिदिन महुए मे फूल खिलाए। महुए मे फूल पशु के शरीर मे मातारोग की निरोधक शक्ति उत्पन्न कर देते हैं और वे छूत से बचे रहते हैं।

(४) माता निकलने से पूव तीन दिन तक पशु को २० २५ समल के बीज प्रतिदिन चार घंटे के अन्तर से खिलायें।

(५) लाल दवा युक्त पानी पशु को पिलायें अथवा उबाल कर ठण्डा किया हुआ पानी पिलायें।

(६) रोगी पशु को तत्काल अन्य स्वस्थ पशुओं से पृथक् जगल मे ले जाकर

रखें अथवा गाव से बाहर किसी बाडे आदि मे रखें ।

(७) टहल करने वाले व्यक्ति को चाहिए कि बीमार पशु की टहल करने के बाद जब तक स्वय नीम के गरम पानी अथवा साबुन आदि से अच्छी तरह नहा न ले और अपने कपडो को भी खौलते पानी मे डालकर धो न ले, तब तक अन्य स्वस्थ पशुओ के पास न जाए ।

(८) यदि पशु मर जाए, तो उसे या तो जला दें अथवा भूमि मे गहरा गड्ढा खोदकर गाड दें । उसकी खाल न उतारने दें ।

विष ज्वर या बावला रोग

अन्य नाम—विष ज्वर भी पशुओ का एक भयकर सक्रामक रोग है जिसे हमारे देश के विभिन्न प्रातो मे ओबरो, खुदरुवा, गिल्टी, गोली, घुडका, चक्कर, भौरा, सेडा, बावूना, बाघा, पटा, वेबी तिल्लहा, बोगमा, बेसारी, बावला तथा जहरी बुखार आदि अनेक नामो से जाना जाता है । अग्रेजी मे इसे एन्थरक्स (Anthrax) कहते हैं ।

यह रोग भी ससार के प्राय सभी देशो के पशुओ म फैलता है । इस रोग के आक्रमण के पश्चात् पशु बहुत जल्दी मर जाते हैं और उन्हे बचाना मुश्किल हो जाता है । दूसरे छूत का रोग होने के कारण यह अन्य पशुओ मे भी तेजी से फैलता है । यह रोग गो पशुओं के अतिरिक्त अन्य पशुओ को भी होता है ।

रोगोत्पत्ति के कारण—यह रोग भी विशेष प्रकार के अति सूक्ष्म रोगाणुओ के रक्त म प्रवेश कर जाने से ही उत्पन्न होता है । इस रोग के कीटाणु भी शीघ्र ही लाखो की सख्या मे बढते हैं । १२ से ४८ घटो के भीतर ही रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं । छूत का रोग होने के कारण हवा, पानी, जूठे चारे-दाने, मल मूत्र तथा स्पश आदि द्वारा इसके कीटाणु अन्य स्वस्थ पशुओ म बहुत तेजी से फलकर हजारो पशुओ को इस रोग का शिकार बना देते हैं ।

रोग के लक्षण—यदि कोई पशु अचानक मर जाये और उसके मुह, नाक और टट्टी के रास्ते काला खून निकला दिखाई दे, तो फौरन समझ लेना चाहिए कि वह पशु जहरी बुखार या विष-ज्वर रोग से मरा है । उसके रक्त मे रोग का विष फैल जाने से उसका रग नीला तथा काला-सा पड जाता है । साथ ही

खाल का रग भी नीलापन लिये काला हो जाता है और पशु का मृत शरीर शीघ्र ही सडने लग जाता है। ऐसे पशु के शव तथा उसके मल, मूत्र थूक, लार, जूठा चारा आदि सबको या तो जला दें अथवा गहरा गडढा खोदकर गाड दें। उसके बधने के स्थान पर सूखी कलई (चूना) आदि छिडक दें ताकि रोग के कीटाणु फैलने न पायें।

जब किसी पशु पर इस रोग का आक्रमण होता है, तो प्रारम्भ मे उसे १०६ से १०७ डिग्री तक तेज बुखार चढता है, नाडी की गति मन्द पड जाती हैं, खाल की चमक जाती रहती है, चमडी का रग मटमैला तथा नीला-सा हो जाता है, पशु बडी बेचैनी के साथ चक्कर काटता है पीडा से चिल्लाता है, आखो का तेज व चमक जाती रहती है, नाक से खून मिला पानी व मवाद सा बहने लगता है और कभी कभी काले रग का खून भी निकलता है। साथ ही सिर, गर्दन, छाती पेट, पीछे के पैर आदि सूज जाते हैं और उनमे दुखन होती है। कुछ ही दिन मे पशु अत्यधिक दुबल व क्षीण होकर लडखडाने लगता है और इसी प्रकार छटपटाते हुए अन्त मे मर जाता है।

पथ्य – इस रोग मे पशु को पतला दलिया तथा दूध देना चाहिए। यदि पशु खा सके तो मुलायम हरी घास व पत्तिया भी दें।

देशी इलाज—(१) शरीर की सूजन को लोहे की गरम करके लाल की हुई सलाखो से दाग दना चाहिए। इससे भी लाभ होता है और कभी-कभी पशु बच जाता है।

(२) ढाई तोला तारपीन का तेल आधा सेर अलसी के तल मे मिलाकर रोगी पशु को पिलाए।

(३) दो तोला फिनायल और आधा सेर देसी घी दोनो को मिलाकर गुन गुना कर पशु को पिलाए। यह भी शरीर में फले रोग के कीटाणुओ का मार कर उसे रोगविरोधी शक्ति देता है।

घोडो का बोगमा रोग

घोडो अथवा हाथियों मे जब विष-ज्वर फलता है, तो उसे 'घोडो का बोगमा' नाम से जाना जाता है। इसमे घोडे अथवा हाथी को तेज बुखार के

साथ शरीर से पसीना बहुत आता है तथा पेट पर सूजन आ जाती है। इनमे बस यही लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा - (१) इनके लिए भी एन्टी ए थरक्स सीरम का टीका ही कारगर सिद्ध होता है। ऐलोपैथी मे इस रोग का अन्य कोई इलाज नही।

(२) चार माशा कार्बोलिक एसिड आधा सेर गुनगुने घी मे मिला कर पिलाना भी लाभदायक होता है।

(३) सूजन के स्थान पर लाल गरम लोहे की सलाखो से दगवा देना भी कभी-कभी अति लाभदायक सिद्ध हुआ है।

लगडा बुखार

अन्य नाम—अकडा रोग लगडी, चेवडा चिरचरा, गोली, फलसूजा आदि अन्य नामो से भी यह रोग देश के विभिन्न भागो मे जाना जाता है।

रोगोत्पत्ति के कारण—यह रोग एक विशेष प्रकार के कीटाणुओ के चारे-पानी अथवा घाव द्वारा शरीर म प्रवेश कर जाने से उत्पन्न होता है। प्राय यह रोग जलवायु परिवर्तन पर हो जाता है। यदि कोई तराई या पहाडी क्षेत्र का पशु मैदानी भाग के किसी स्थान पर लाया जाता है, तो वह अक्सर इस रोग का शिकार हो जाता है। साथ ही यह रोग बडी आयु के पशुओ की अपेक्षा कम उम्र के पशु को अधिक होता है।

रोग के लक्षण—यह भी पशुओ के भयकरतम रोगों में से एक है, क्योकि इस रोग का आक्रमण होने पर अच्छा भला पशु देखते-देखते अकडने लगता है और २४ घंटे के अन्दर मर जाता है। जैसे ही इस रोग के लक्षण प्रकट हो, फौरन पशु चिकित्सालय मे दिखाकर इलाज कराना चाहिए।

इस रोग की पहचान के लिए पशु मे निम्नलिखित लक्षण देखे जा सकते हैं—सबसे पहले पशु सुस्त पडता है, फिर उसके शरीर के भिन्न भिन्न अगो मे अकडन पैदा होने लगती है। धीरे-धीरे उसका शरीर इस तरह अकड जाता है कि वह चलने-फिरने म भी विवश हो जाता हैं। कुछ घंटे बाद पशु गिर पडता है, उसके सिर व कान लटक जाते हैं। कमर, जांघों, गले की लटकती खाल आदि पर सूजन आ जाती है। इस सूजन को दबाने पर कर-कर की आवाज

होनी है। फिर तेज बुखार चढ़ता है साँस फूलने लगती है। पशु दांत पीसता है, खाना पीना बन्द कर देता है और इसी दशा में पड़े-पड़े मर जाता है।

लंगड़ा बुखार की चिकित्सा

देशी इलाज—(१) यदि उपयुक्त समय पर वैक्सीन, पेनिसिलीन अथवा लंगड़ी रोधी सीरम के टीके व इंजक्शन आदि प्राप्य न हों, तो फौरन ही पशु के सूजन वाले भाग पर चीरा लगाकर उसमें नीम का तेल अथवा निम्नांकित क्पूरादि तैल भर दें। शरीर के जिस जिस भाग में रोगाणुओं का जोर होता है, उस उस स्थान पर सूजन आ जाती है। सूजन वाले स्थानों में उक्त कीटाणु नाशक औषधियां भर देने से पशु को रोग रोधी शक्ति प्राप्त होती है।

(२) सूजन वाले स्थानों को गरम लोहे की लाल सलाखों से दाग देने से भी कीटाणु मर जाते हैं और पशु के बचने की आशा हो सकती है।

(३) अनुभवी लोगों के कथनानुसार इस रोग में छेदन अर्थात छिदना कराना भी बड़ा प्रभावकारी सिद्ध होता है। छिदना कराने से पशु प्राय बच जाता है। कुछ लोगों का तो मत है कि छिदना से उत्तम इस रोग का अन्य कोई इलाज है ही नहीं।

(४) यदि पशु के शरीर में सूजन अधिक बढ़ जाये, फेफड़ा से खून-सा भरा मालूम दे तथा सांस लेने में पशु को कठिनाई प्रतीत होने लगे तो उसके बचने की बहुत कम आशा रह जाती है। क्योंकि उस अवस्था में पहुंचने पर कोई दवा प्रभावकारी सिद्ध नहीं होती। उस अवस्था से पूर्व ही यदि निम्नलिखित औषधि प्रयोग की जाये, तो अक्सर पशु बच जाते हैं। *औषधि का योग इस प्रकार है—*

अलसी का तेल एक पाव, पिसा हुआ गंधक आधा पाव, पिसी हुई सोंठ सवा तोला—इन सब द्रव्यों को आधा सेर पानी में मिलाकर पशु को पिलाए और जब तक पशु का पेट न चलने लगे अर्थात उसे पतले दस्त न होने लगें तब तक हर तीसरे घंटे के बाद यही दवा देते रहें। यह दवा एक प्रकार का जुलाब है, जो टट्टी द्वारा पशु के शरीर के अन्दर का सारा रोग विष बाहर निकाल देगा और इस प्रकार पशु बच जायेगा।

अब एक-दो देशी नुस्खे इस रोग की छूत अन्य स्वस्थ पशुओ मे न फैलने देने के लिए भी लिखे जा रहे हैं—

रोग फलने से रोकने वाली दवा—(१) नमक दस तोला, गधक साढे सात तोला, सोठ सवा तोला—तीनो को पीस कर साढे सात तोला राब मे मिला कर सब स्वस्थ पशुओ को चटा दें। इससे उन पशुओ का बचाव रहेगा और उन्हें इस रोग की छूत लगने का खतरा कम हो जायेगा।

दूसरा उपाय यह है कि पानी मे थोडा सा कलमी शोरा और थोडा-सा नमक घोल कर पशुओ को पिलाते रहें ताकि यदि कभी रोग के कीटाणु उनके अन्दर पहुच भी जाये, तो तत्काल नष्ट हो जायें।

इस प्रकार उक्त दोनो प्रयोग लगडा राधी सीरम उपलब्ध न होने की सूरत मे किसी अश तक आप पशु की रक्षा करेंगे।

छिदना करने की विधि

लगडा बुखार की देशी चिकित्सा के अन्तगत हमने छिन्ना करना विशेष लाभदायक बताया है। उसकी विधि यहा अकित की जा रही है—

पशु के गले मे लटकती हुई खाल, जिसे हेलुआ बोलते हैं, म तेज चाकू या छुरी से कोई एक अगुल की चौडाई का छेद खाल के आर-पार कर दें, किन्तु ध्यान रहे कि जिस चाकू या छुरी का प्रयोग करें, उसे पानी म खौलाकर पहले कीटाणु रहित कर लें। फिर ऐसा ही एक और छेद पहले छेद से ३-४ अगुल की दूरी पर करें। अब इन दोनो छेदो मे से होकर एक मोटा डोरा या घोडे की पूछ के बालो की साफ डोरी सुए द्वारा पिरोकर दोनो सिरो पर मजबूत गाठ लगा दें। किन्तु यह डोरी अथवा बालो की डोरी इतनी ढीली रहे कि उससे वहीं पर भी खाल न खिचे—न दबे। अब इन छेदो पर नीम का तेल, कपूरादि तल चुपड दें, ताकि मक्खिया न बैठें। यह कीटाणुनाशक तेल दिन मे कई बार चुपडते रहें। यदि घाव का अगूर ऊचा हो गया हो, तो उस पर पिसा हुआ नीलाथोथा बुरक दें।

कपूरादि तल बनाने की विधि

एक तोला कपूर, एक छटाक तारपीन का तेल, पाव भर सरसों का

—इन सबको मिलाकर कपूर को तेलो के मिश्रण में भली प्रकार घोल लें। यह तेल रोग के कीटाणुओं को भी नष्ट कर देता है और छिदना के घावो पर मक्खियाँ भी नहीं बैठने देता।

लगडा बुखार से मिलते-जुलते अन्य रोग

घातक सूजन—यह रोग भी ब्लैक क्वाटर रोग से मिलती जुलती किस्म का ही है जो गौ पशुओं तथा भेडो में बच्चा देने के बाद उत्पन्न हो जाता है। भेडो में यह रोग ऊन उतारने, दुम काटने या बधिया करने के बाद क्लोस्ट्रीडियम सैप्टीक्म नामक जीवाणुओं की छूत पेशियो की ऊतकों में लगने के कारण सूजन उत्पन्न हो जाने से होता है। इस रोग के लक्षण आदि लगडा बुखार से इतने मिलते जुलते हैं कि अनुसधानशाला मे जविकीय परख द्वारा ही इनका भेद ज्ञात हो सकता है।

चिकित्सा—यदि रोग बढ़ने से पूर्व ही क्लोस्ट्रीडियम सैप्टीक्म जीवाणुओं की फार्मलिनीकृत वैक्सीन या टीका लगवा दिया जाये, तो इससे पशुओं को काफी हद तक रोग से मुक्ति मिल जाती है।

ब्रैक्सी रोग (Braccy)—यह रोग भेडो आदि की घातक सूजन का ही एक भिन्न रूप है, जो क्लोस्ट्रीडियम सैप्टीकम जीवाणुओ के आक्रमण के कारण उत्पन्न होता है। ये जीवाणु जठराशय में बहुत तेजी के साथ बढ़ते हैं और एक अति घातक किस्म का विष उत्पन्न कर देते हैं।

लक्षण—यह रोग भी अति उग्र रूप से होता है। प्राय रोग के लक्षण स्पष्ट रूप से प्रकट होने से पूर्व ही रोगी पशु मर जाता है। भेडें तो प्राय मरी हुई अथवा बिल्कुल मरणासन्न अवस्था में ही पाई जाती हैं। किन्तु फिर भी यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये, तो इस रोग में भेड अथवा अन्य रोगी पशु के पेट में तेज दर्द होना, मुह से झाग गिरना, कभी कभी पेचिश होना, श्लैष्मिक झिल्लियों का पीला पड जाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। आमतौर पर ४ घटे के अन्दर-अन्दर ही इस रोग से ग्रसित पशु मर जाता है।

ब्रैक्सी रोग से मरे पशु की लाश बहुत जल्दी सड़ने लगती है। आमाशय दीवार पर विशेषकर रोमंथिका या प्रथम आमाशय की दीवार के साथ। क

भागो पर इस रोग की सूजन के कारण चकत्ते से पडे दिखाई देत हैं। ये चकत्ते ही इस रोग की पहचान के प्रमुख आधार हैं। साथ ही आमाशय तथा आंतो की दीवार और अन्य भीतरी अगो की झिल्ली मे खून जमा हो जाना भी इस रोग का विशेष लक्षण है।

चिकित्सा—क्लास्ट्रीडियम सैप्टीरम जीवाणुओं की फार्मलिनीकृत वैक्सीन का टीका ही इस रोग का अब तक ज्ञात प्रभावकारी उपाय है। वैस अब इस रोग पर अनुसधानशालाआ म और भी खाज तथा परीक्षण किए जा रहे हैं।

अवात सक्रमण रोग

भेडा मे अवात सक्रमण राग उत्पन्न करने वाले अवात जीवी जीवाणुओं में सम्भवत क्लास्ट्रीडियम वैल्शीआई किस्म के जीवाणु सबस अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इन जीवाणुओ की चार विभिन्न किस्मे पाई जाती हैं और वे चारो किस्मे अलग-अलग तरह का विष उत्पन्न करती हैं। क्लोस्ट्रीडियम वल्शीआई जीवाणुओ की शेष तीन किस्म अलग-अलग तरह के रोग पैदा करती हैं, जिनका सक्षिप्त वणन नीचे किया जा रहा है। यद्यपि अभी भारत म इन रोगो के मामले स्पष्ट रूप से सामने नही आए हैं, तथापि पशु चिकित्सको को ध्यानपूवक इनकी खाज करनी चाहिए, क्योकि अन्य देशो मे य रोग काफी पाए जाते हैं, विशेषकर भेडो मे।

मेमनों की पेचिश—यह रोग मेमनो को जन्म से दस दिन के भीतर होता है। यह क्लोस्ट्रीडियम वल्शीआई टाइप के जीवाणुओ द्वारा उत्पन्न होता है, जो सम्भवत दूषित दूध द्वारा मेमनो के शरीर मे पहुच जाते हैं और ज्यो-ज्यो ये जीवाणु एक पशु के शरीर स दूसरे पशु के शरीर मे पहुचते जाते हैं, अधिक प्रबल हाते जाते हैं।

लक्षण—छूत के इस रोग स प्रभावित मेमने अत्यधिक सुस्त हो जाते हैं और दूध पीना छोड देते है। उनके पेट की दीवार कडी हो जाती है और उस मे दद होता है। साथ ही उन्हें दस्त लग जाते हैं, जिनका रग शुरू में पीला होता है और बाद म चाकलेटी सा आने लगता है। अन्तिम दशा मे तो बिल्कुल खूनी दस्त आने लगते हैं और दो या तीन दिन म मेमना मर जाता है।

चिकित्सा—इस रोग मे क्लोस्ट्रीडियम वैल्शीआई टाइप बी एन्टी सीरा का इजक्शन लगाकर मेमनो मे कुछ समय के लिए रोगरोधक शक्ति उत्पन्न की जा सकती है। दूसरे यदि भेडो को गर्भावस्था मे ही फामलिनीकृत जीवाणुओ की सम्पूर्ण सवधन सामग्री का टीका लगवा दिया जाये, तो मेमने के शरीर मे जन्मोपरात स्वत रोगरोधक शक्ति पहुच जाती है और वे इस रोग के आक्रमण से बचे रहते हैं।

धनुर्वात या हस्तस्तम्भ रोग (Titanus or Lock Jaw)—यह रोग यो तो सभी पशुओ यहां तक कि मनुष्यों को भी होता है, किन्तु सबसे अधिक घोडो को होता है। इसलिए मूलत यह घोडो का रोग कहलाता है। धनुर्वात रोग (टिटॅनस) *क्लोस्ट्रीडियम टेलानी नामक जीवाणओ के विष का* स्नायु-प्रणाली पर कुप्रभाव पडने से होता है। ये जीवाणु मुख्यत चोट, घाव आदि द्वारा पशुओ तथा मनुष्यो के शरीर म प्रविष्ट हो जाते हैं और फूटे हुए गहर घावों मे बढ़ते तथा पनपते रहते हैं। आमतौर पर ये जीवाणु घोडो की आंत मे पाए जाते हैं और लीद के साथ बाहर निकलते रहते हैं। जब कोई पशु या मनुष्य जिसके शरीर मे चोट या घाव हो, इन जीवाणुओं से युक्त लीद के सम्पर्क म आ जाता है, तो फौरन ही ये जीवाणु उस चोट अथवा घाव के जरिये उसके रक्त मे प्रविष्ट हो जाते हैं। इसलिए जब सडक आदि पर गिरकर किसी व्यक्ति को चोट लग जाती है और खून आ जाता है अथवा किसी वाहन आदि की टक्कर मे दुर्घटना हो जाती है, तो डाक्टर लोग उस व्यक्ति को एहतियात के तौर पर टिटनस रोधक टीका लगा देते हैं, क्योंकि यह रोग इतना उग्र होता है कि यदि चोट आदि लगने पर इस रोग के जीवाणु रक्त में प्रवेश कर जाए और ४ घटे के भीतर ही उसे उक्त इजेक्शन न लगाया जाये, तो टिटनस रोग के रोगी को बचाना कठिन हो जाता है।

पशुओं में इस रोग के लक्षण कुछ दिनों से लेकर तीन सप्ताह तक में प्रकट होते हैं जो इस प्रकार होते हैं—

लक्षण—घोडों में इस रोग के प्रारम्भ में कान खडे हो जाना आंखों की पलकों की झिल्ली आंखें को ढक जाना तथा उनमें साधारण उत्तेजना पैदा

होना, चेहरे की पेशिया सिकुड जाना, फलस्वरूप घोडे को चारा चबाने तथा निगलने मे कठिनाई महसूस होना, फिर जबडे की पेशिया अकड जाने से मुह का न खुलना आदि लक्षण प्रकट होत हैं। इसीलिए इसे हनुस्तम्भ रोग यानी जबडा न खुलना राग भी कहते हैं। तदुपरान्त धीरे धीरे पशु का सारा शरीर ही अकड जाता है। पूछ उठी रहती है और देखने से यह काठ का घाडा सा मालूम होता है। मल मूत्र रुक जात हैं किन्तु पसीना खूब आता है। इस रोग मे पशु का तापमान नही बढना। श्वास नलियो की पेशियां लकवा मार जाती हैं और उसे श्वास लेने मे कठिनाई होती है। अन्त मे श्वास न ले पाने से ही उसकी मृत्यु हो जाती है। जुगाली करने वाले पशुओ मे इस रोग के लक्षण इतने उग्र नही होते। उनका जबडा अकड जाने से वे जुगाली नही कर पाते और पेट मे अफारा हो जाता है।

चिकित्सा तथा नियन्त्रण—इस रोग के प्रारम्भिक लक्षण प्रकट होते ही घोडे के घावो का सावधानी से इलाज करना चाहिए। घावो को दबा दबाकर तथा अन्दर तक खोलकर उनकी पस, छिछडे आदि साफ कर दें और ऊपर से टिंचर आयोडीन अथवा क्लोरीन आदि कीटाणुनाशक दवायें लगा दें। यदि उसके घाव अधिक गहरे फूटे तथा बुरी तरह क्षत-विक्षत हों, तो उसे टिटैनस एन्टी-टॉक्सीन की मात्रा, जो घोडो के लिए १,००० यूनिट की होगी, दे देनी चाहिए।

इसके अलावा अन्य घोडों तथा पशुओ को फिटकरी द्वारा अवक्षेपित टॉक्साइड का इजक्शन लगा देना चाहिए। जिन क्षेत्रो मे यह रोग पशुओ का होता रहता हो, वहा हरेक पशु को प्रतिवर्ष उक्त टीका लगा देना आवश्यक है।

अगर इस रोग की प्रारम्भिक दशा मे ही पशु को ऐसी दवायें दे दी जायें, जो पेशियो का सकुचन कम करने वाली हो, तो रोग पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। इस प्रकार के इलाज मे पशु की आंतरिक त्वचा मे मैग्नीशियम सल्फेट के घोल का इजैक्शन लगाना उपयोगी है। पहले १० दिन तक प्रतिदिन दो बार और फिर अगले दस दिन तक प्रतिदिन एक इजैक्शन लगायें। प्रत्येक बार

इजैक्शन के लिए १ ५ औंस दवा भरें । किन्तु मात्र इजैक्शन लगाना ही पर्याप्त नही । साथ मे विष के प्रभाव को दूर करने के लिए पशुओ को कोई विष-नाशक औषधि भी खिलानी चाहिए ।

मुह का लकवा रोग

यह रोग विशेष रूप से गौ पशुओ को होता है और जिन क्षेत्रो की मिट्टी में फास्फोरस की कमी पाई जाती है और उसकी पूर्ति के लिए पशु हड्डिया खाने लगते हैं, वहा यह रोग अधिक होता है । जिन हड्डियों मे क्लोस्ट्रीडियम बोटलीनम टाइप डी जीवाणु अथवा उनका विष उपस्थित रहता है, उन हड्डियो को जब पशु निगल जाता है, तो उस पर इस रोग का आक्रमण हो जाता है ।

लक्षण—इस रोग का प्रमुख लक्षण यह है कि पेशिया अत्यधिक कमजोर हो जाती हैं, हर समय उसके मुह से लार टपकती रहती है, जीभ, ग्रसनी तथा जबडे को लकवा मार जाता है, जिससे पशु चारा दाना खाने, जुगाली करने और निगलने मे असमर्थ हो जाता है । कुछ घण्टे पश्चात पशु बेहोश होकर गिर जाता है और उसी दशा में उसकी मृत्यु हो जाती है ।

चिकित्सा—इस रोग की कोई विश्वस्त चिकित्सा अभी तक नही खोजी जा सकी । अलबत्ता पशु को खुराक के साथ खनिज चूर्ण खिलाना एकदम बन्द कर देना चाहिए और इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि उसे हड्डियां खाने का अवसर न मिले ।

पशुओं का क्षय रोग अर्थात् तपेदिक

यह भी छूत का एक रोग है, जो टयूबरक्लि बैसीलस नामक जीवाणुओ द्वारा उत्पन्न होता है । ये जीवाणु शरीर के किसी भी भाग म आसानी से पहुच जाते हैं और वहां तेजी से अपनी सख्या बढ़ाने लगते हैं । जिस भाग में भी ये जीवाणु स्थायी रूप से बस जाते हैं, वहां गोल गाठें-सी बन जाती हैं । यह रोग दुधारू पशुओ, पक्षियों तथा रेंगने वाले जीवों को भी हो जाता है।
रोग के जीवाणु गरमी और प्रकाश (धूप) में बहुत जल्दी मर जाते हैं ।

रोगोत्पत्ति के कारण

इस रोग की उत्पत्ति का प्रमुख कारण पशु को उचित परिमाण मे पौष्टिक आहार न मिलना, धूप, हवा आदि से रहित गन्दे स्थानो मे रखा जाना और स्वच्छ जल पीने को न मिलना ही होते हैं और तब पूर्वोक्त क्षय रोग के कीटाणु पशु के शरीर मे प्रविष्ट होकर धीरे धीरे बढते रहते हैं और पशु इस रोग का पूरी तरह से शिकार हो जाता है। फिर उस पशु के गोबर, मूत्र, लार, झाग आदि द्वारा ये कीटाणु बाहर निकल कर अन्य पशुओं मे भी फैल जाते हैं। किन्तु यदि पशु को धूप-हवा वाले स्वच्छ स्थान मे रखा जाये, तो इस रोग की रोकथाम म सहायता मिलती है।

इस पुस्तक मे प्राय सभी पशु रोगो की चिकित्सा आदि लिख दी गई है। लेकिन विषम रोगो की चिकित्सा पशुओं के डाक्टर से अथवा पशुओ के अस्पताल मे करवाना अधिक और शीघ्र लाभकारी होगा।

● ●